तीक्ष्ण शक्ति साधना विशेषांक
मई-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 8
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
धूमावती साधना
शनि साधना
प्रसन्न लक्ष्मी साधना
नारायण कल्प साधना
वट सावित्री पर्व-
अखण्ड सौभाग्यवती साधना

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है। परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

दुर्गा यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

काली यंत्र + माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भ्रदाः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

स्वस्थ, सुन्दर एवं पति की दीर्घायु प्राप्ति हेतु : गौरी साधना

रोगमुक्ति एवं पूर्णतः कायाकल्प हेतु : नारायण कल्प

शनि की साढे शाती दूर कर आर्थिक, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु : शनि साधना

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग

यात्रा
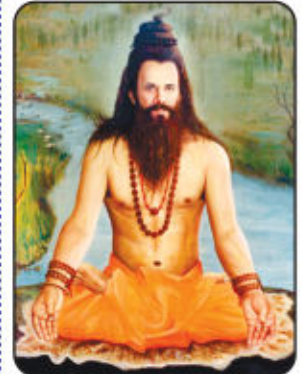
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक

श्री अरविन्द श्रीमाली

द्वारा

प्रगति प्रिंटर्स

A-15, नारायणा, फेज-1

नई दिल्ली:110028

से मुद्रित तथा

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

कार्यालय :

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली- 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

वन्दे नारायणं देवं सद्गुरुं निखिलेश्वरं
ज्ञानामृतरसेनैव पूतं येनाखिलं जगत
अज्ञानान्ध विधाताय शिष्यसंतोष हेतवे
साध्ये सिद्धिः सतामस्तु त्वत्प्रसादान्नरोत्तम।।

जिसने अपने ज्ञान रूपी अमृत से समस्त विश्व को पावन किया है, उन नारायण स्वरूप गुरुदेव निखिलेश्वर को मैं भावपूर्ण हृदय से नमन करता हूँ। संसार के अज्ञान रूपी अंधकार के नाश के लिए तथा शिष्यों के कल्याण हेतु हे नरोत्तम! आप की कृपा से साधकों को साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

सीख

दो मित्र रेगिस्तान में सफर कर रहे थे। सफर के किसी मुकाम पर उनका किसी बात पर वाद-विवाद हो गया। बात इतनी बढ़ गई कि एक मित्र ने दूसरे मित्र को थप्पड़ मार दिया। थप्पड़ खाने वाले मित्र को बहुत बुरा लगा लेकिन उसने बिना कुछ कहे रेत पर लिखा–आज मेरे सबसे अच्छे मित्र ने मुझे थप्पड़ मारा।

वे चलते रहे। वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ पानी के साथ ही साथ दलदल भी था। जहाँ उन्होंने नहाने का सोचा परन्तु गलती से ऐसा हुआ कि जिस व्यक्ति ने थप्पड़ खाया था। वह दलदल में फँस गया और उसमें समाने लगा लेकिन उसके मित्र ने उसे बचा लिया। जब वह दलदल से बाहर आया तब उसने एक पत्थर पर लिखा–आज मेरे सबसे अच्छे मित्र ने मेरी जान बचाई तब उसके मित्र ने पूछा–जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तब तुमने रेत पर लिखा और जब मैंने तुम्हें बचाया तब तुमने पत्थर पर लिखा, ऐसा क्यों?

उसके मित्र ने कहा–जब कोई दु:ख दे तब हमें रेत पर लिख देना चाहिए ताकि क्षमाभावना की हवाएँ आकर उसे मिटा दे। लेकिन जब कोई हमारा भला करे तब हमें पत्थर पर लिख देना चाहिए ताकि वह हमेशा के लिए लिखा जाए और हमें याद रहे, हम कृतज्ञ रहें।

सद्गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में बार-बार शिष्यों को यह एहसास दिलाया है कि तुम एक जीवन्त व्यक्तित्व हो और अपने छोटे से जीवन में भी वह सब कुछ कर सकते हो जो अब तक नहीं कर पाए अथवा आपके पूर्वज नहीं कर पाए। जीवन अमूल्य है और जीवन का प्रत्येक क्षण सार्थकता से मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने की क्रिया में जीना है। दिल्ली में राज्याभिषेक दीक्षा के समय दिया गया उनका यह विशेष प्रवचन शिष्यों के लिए एक उद्घोष है—

पूर्णेन्दु सहश भवतां सदैव ब्रह्म स्वरूपाय विराट रूपं
चैतन्य देव भवतां भव पूर्ण चिन्त्यं सिद्धाश्रमाय परितां भवदेव नित्यं।।

जीवन का यथार्थ

एक उच्च कोटि के उपनिषद श्वेताश्वेतोपनिषद् में से यह श्लोक लिया गया है और इसी श्लोक को, इसी भाव को शंकराचार्य ने भी अपने शंकर भाष्य में उद्धृत किया है। शंकराचार्य, एक बहुत बड़ी बात कह रहे हैं और आज भी आप जो बैठे हैं यहाँ पर यह अपने आप में एक सामान्य बात नहीं है। इसलिए नहीं कि मुझे आपकी प्रशंसा करनी है, इसलिए भी नहीं कि आपकी स्तुति या झूठी शान दिखाना है। आप शिष्य हैं और जिन्दगी में एक अच्छे शिष्य बन जाएं यह भी बहुत बड़ी बात है, मैं तो चाहता हूँ जीवन में आप गुरु बनें, ज्ञान का प्रकाश फैलाएं।

मगर ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में सार्थक हो, ऐसे गुरु बनें सूर्य के समान देदीप्यमान हों, ऐसे गुरु बनें जो चैतन्य हों, ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में पूर्ण सिद्धिप्रद हों, ऐसे व्यक्तित्व बनें जो अपने आप में सिद्धि पुरुष हों और उस श्वेताश्वेतोपनिषद में कहा गया है कि मनुष्य या तो देह धारण करता है या अवतार लेता है, मगर देह धारण करने के बाद भी वह अवतारी पुरुष बन सकता है। अवतारी और देह धारण में अन्तर यह है कि गर्भ धारण करने के बाद जब हम उत्पन्न होते हैं और गर्भ धारण के समय जब तीन महीने सत्ताइस दिन का गर्भ हो जाता है, तब उसमें जीव संस्कार होता है और उस समय से लगाकर के 9 महीने और 2 दिन या 5 दिन या 10 दिन तक बालक अपने आप में पूर्ण ब्रह्म स्वरूप बनता है, ब्रह्म स्वरूप ही होता है। उसके बाद ज्यों ही वह जन्म लेता है। त्यों ही उसकी एक जाति बन जाती है, तू हिन्दू है, तू मुसलमान है, मुसलमान के घर जन्म ले लिया तो मुसलमान बन गया ऑटोमेटिक। उसकी इच्छा थी कि नहीं थी, मगर जबरदस्ती उसके ऊपर थोप दिया या कि तू मुसलमान है, जबरदस्ती थोप दिया कि तू हिन्दू है, जबरदस्ती थोप दिया कि तू ईसाई है क्योंकि ऐसी जगह जन्म लेने की वजह से उस पर यह थोप दिया गया।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि यह थोपने की क्रिया तो मेरे मां-बाप ने भी इसलिए की कि वे उस सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे और यदि केरल का रहने वाला, दक्षिण का रहने वाला एक ब्राह्मण शंकर जो भिक्षुक था, जो अन्न-अन्न के लिए मोहताज रहने वाला था वह अवतारी पुरुष बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। जब उसने कहा कि मां मैं संन्यास लूंगा तो मां ने कहा–बेटा! तू एक ही बेटा है और संन्यास लेगा तो मैं किसके भरोसे जीवित रहूंगी?

शंकराचार्य ने कहा कोई किसी के भरोसे जीवित नहीं रहता। व्यक्ति अपने खुद के भरोसे ही जीवित रहता है। आत्मा के भरोसे ही जिन्दा रहता है। जीवित रहने का मतलब है सांस लेना। आप उसको जीवन कहते हैं, आप उसको जिन्दा कहते हैं, जिन्दा है क्योंकि यह सांस ले रहा है। ये जीवन नहीं है।

सांस लेने को जीवित पुरुष नहीं कहते हैं, सांस लेने को तो नर कहते हैं और नर उसको कहते हैं जो अपने समान एक और पैदा कर दे,
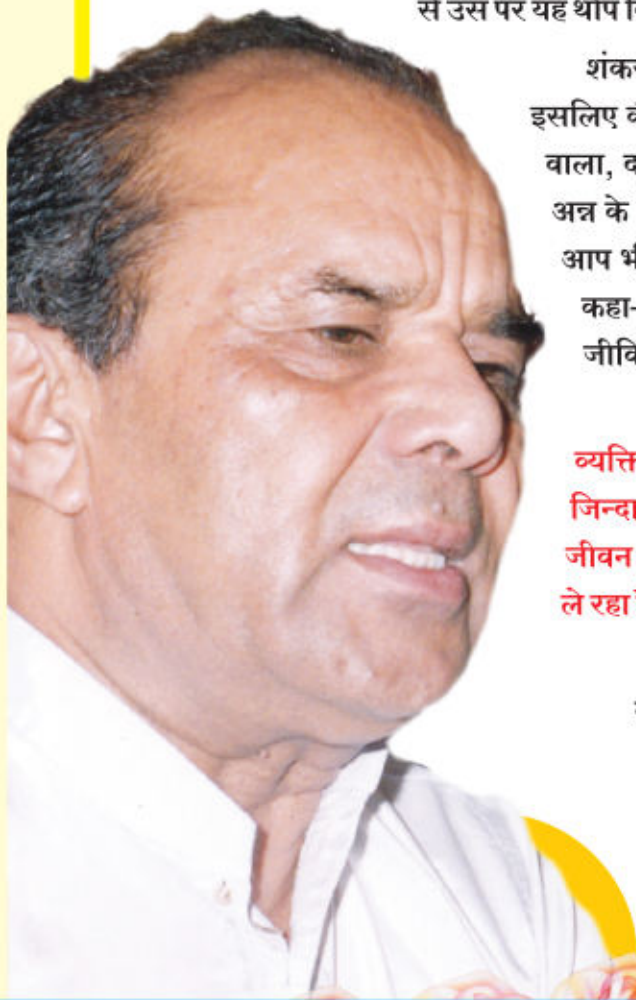
उसको नर कहते हैं। मैं अपने समान एक और लड़के को पैदा कर दूं तो मैं नर हूँ। इसलिए दो शब्द बने नर और नारायण। और आप भी नर हैं।

तो शंकराचार्य कह रहे हैं कि कोई व्यक्ति किसी के भरोसे नहीं है, यह हमारा भ्रम है कि मेरा पिता मेरा पालन-पोषण कर रहा है, कि मेरी पत्नी मेरा पालन-पोषण कर रही है, कि मेरा पति मेरा पालन-पोषण कर रहा है कि एक्स.वाई.जेड. मेरा पालन-पोषण कर रहा है, ये तो हमारा भ्रम है। मैं अपने आप में सेल्फ हूँ, अपने आपमें पूर्ण हूँ। न उसमें कोई खण्डन है, न उसमें कोई एड किया जा सकता है।

मगर एक गर्भ में पैदा होने वाला बालक अवतारी पुरुष बन सकता है, बनता है, क्योंकि जिस प्रकार से आप पैदा हुए थे। उसी प्रकार से राम भी पैदा हुए थे, उसी प्रकार से कृष्ण भी पैदा हुए थे। उसी प्रकार से बुद्ध भी पैदा हुए थे। वही क्रिया थी और उस समय का वातावरण कोई बहुत ज्यादा उत्तम कोटि का हो, ऐसा भी नहीं था। जिसको हम राम-राज्य कहते हैं उस समय भी लड़ाइयां, झगड़े होते थे, दशरथ के तीन रानियाँ थीं, आपस में लड़ती थीं—कैकेयी, कौशल्या और सुमित्रा।

उस समय भी छल-कपट था, केकैयी ने अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाने के लिए छल किया। इतना छल किया कि ये राम कहीं गद्दी पर न बैठ जाए, तो अपने पति को मोहित करके उसको (राम को) चौदह साल के लिए वन में भेज दिया तो ये छल, ये झूठ, ये कपट, ये व्यभिचार, ये असत्य त्रेतायुग में भी थे, द्वापर युग में भी थे और इतना था, कि भरी सभा में भीष्म जैसा व्यक्तित्व बैठा है, द्रोणाचार्य जैसा बैठा है और द्रोपदी का वस्त्र हरण किया जा रहा है अपने ससुर के सामने, और किसी के मुंह से बोल नहीं निकल रहा है और कृष्ण जब उसका चीर बढ़ाते हैं तो भीष्म को फटकारते हुए कहते हैं कि मुझे दु:ख है कि एक ससुर के सामने एक बहू का वस्त्र हरण किया जा रहा है, तुम बोल नहीं पा रहे हो, तुम कैसे कायर पुरुष हो, कैसे कायर हो, कैसे अपने आपमें शक्तिहीन हो।

उस समय रामराज्य में कोई बहुत उच्चकोटि का वातावरण नहीं था, आज फिर भी लॉ ऑर्डर है, आप किसी स्त्री, लड़की को छेड़ेंगे तो जरूर पुलिस जेल करेगी ही करेगी। उस समय तो यह भी नहीं था। इसलिए कोई युग नहीं बदलता है, युग तो त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग एक जैसे ही थे मगर आप ये सोचते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। हम कलियुग में पैदा हुए हैं। उस समय में भी ऐसे दुर्योधन पैदा होते

ही थे, दु:शासन पैदा होते ही थे। कृष्ण जैसे भी पैदा होते थे, द्रोणाचार्य जैसे गुरु भी पैदा होते थे। वशिष्ठ जैसे और विश्वामित्र जैसे गुरु भी पैदा होते थे। सांदीपन जैसे गुरु भी पैदा हुए। मगर शंकराचार्य जिस पंक्ति को बोले वह अपने आपमें महत्वपूर्ण पंक्ति है, क्योंकि उसने इस पंक्ति को श्वेताश्वेतोपनिषद से उठाया। आपको ध्यान है कि चार वेद हैं। श्वेताश्वेतोपनिषद् में भी इसको यजुर्वेद के मंत्र से उठाया, इस श्लोक को।

मैं आपको बता रहा हूँ कि मूल ऋषि ने जो कहा, जो वाणी उच्चरित की, उसको सरल करने के लिए श्वेताश्वेतोपनिषद बनाया। ये 108 उपनिषद बने, उन वेदों को सरल भाषा में लिखने के लिए, सही ढंग से समझाने के लिए। और वहां से शंकराचार्य ने लिखा इसका मतलब इस श्लोक में जरूर कोई विशेषता है। शंकराचार्य जैसे विद्वान को उस श्लोक को उठाने की क्या जरूरत थी। और शंकराचार्य आज से 25 सौ वर्षों पहले पैदा हुए, कोई बहुत बड़ी घटना, कोई दस हजार वर्ष पहले की घटना थी नहीं। चाहे कल की बीती हुई घटना हो या 5 हजार साल पहले की घटना हो। प्रश्न है कि जीवन क्या है? मैं आपको उस उपदेश में भी नहीं जाने देना चाहता कि यह शास्त्र का विषय है या विद्वानों का विषय है कि जीवन का मर्म क्या है और द्वैत क्या है? अद्वैत क्या है? क्या माया और ब्रह्म अलग-अलग हैं, माया क्या चीज है? ब्रह्म क्या चीज है? अद्वैत सिद्धान्त क्या है? द्वैत सिद्धान्त क्या है? मैं आपको उसमें उलझाना नहीं चाहता क्योंकि वह उच्चकोटि के ज्ञान की चिन्तन की बात है।

मगर शंकराचार्य कह रहे हैं कि उच्च कोटि के गुरु के पास में वही शिष्य इकट्ठे होते हैं, एकत्र होते हैं जो किसी समय देवता रहे हुए होते हैं या जिनमें देवता का अंश होता है वही जन्म लेकर उनके पास होते हैं। तो शंकराचार्य जैसा व्यक्तित्व गलत नहीं हो सकता। इसलिए गलत नहीं हो सकता कि जब मां ने कहा कि बेटा मैं किसके भरोसे जीवित रहूँ। उसने कहा—मां अपने आपके भरोसे जीवित रहो। मैं भी अपने भरोसे जीवित रहूँगा। हर आदमी अपने भरोसे जीवित है। कोई किसी का है नहीं। हम केवल एक नर हैं, क्योंकि जो पिता ने किया वही हमने आगे कर लिया और पिता अब कह रहे हैं बेटा मैं मर जाऊंगा एक पोता गोद में खिला दो। तो बस मेरी तृप्ति हो जाएगी और आप कोशिश करते हैं कि पोता जल्दी हो ही जाए और प्रदान कर देते हैं क्योंकि समाज का एक ढांचा हो गया।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति गुरु के साथ रहे और उससे उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करे। कृष्ण सांदीपन के आश्रम में क्यों गये, मथुरा में गुरु थे नहीं क्या? वृन्दावन में गुरु नहीं थे? वृन्दावन में हरिनाथ गुरु थे उस समय। वह अपने आप में अद्वितीय थे। विट्ठल सम्प्रदाय चल रहा था, जो उत्तम कोटि के गुरु थे, रामानन्द सम्प्रदाय चल रहा था। कोई गुरु की कमी नहीं थी, उत्तम कोटि के गुरु थे। फिर सांदीपन के आश्रम में क्यों गये? उज्जैन क्यों गये कृष्ण? क्यों लकड़ियां ढ़ोई, क्यों जंगल में से लकड़ियां काट कर लाये? एक राजा का बेटा
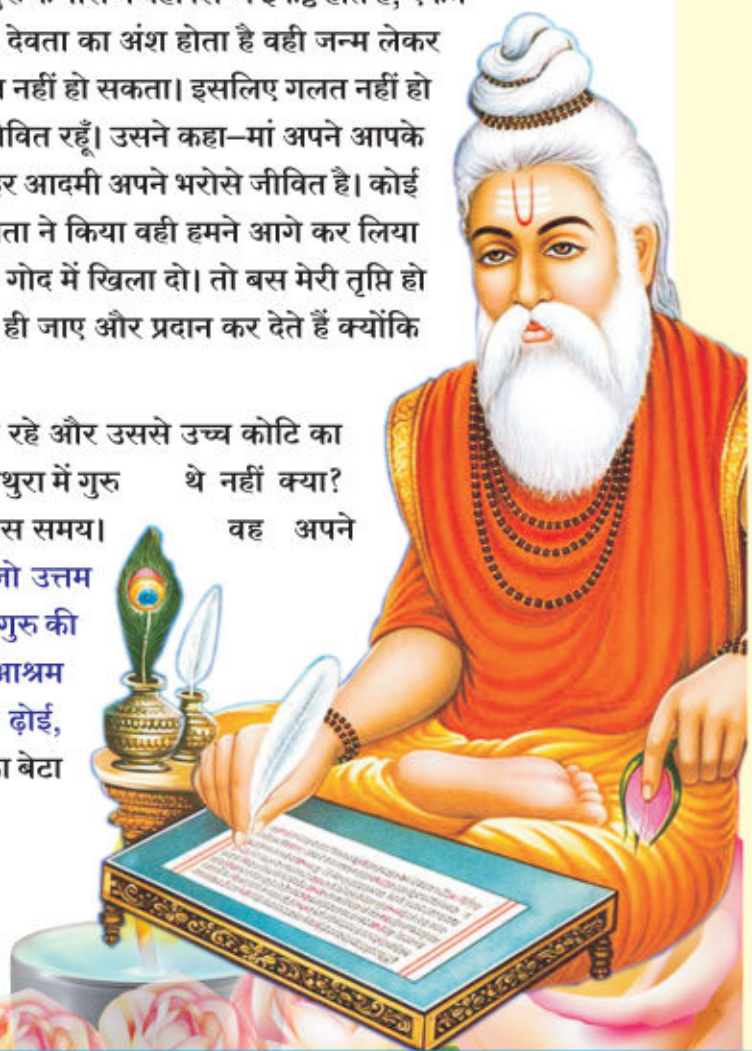
जंगल में जाकर लकड़ियां काट कर लाता है, गुरु यह देखना चाहता है कि यह शिष्य है या फालोवर है, या केवल भीड़ में चलने वाला व्यक्तित्व है।

शेर भीड़ में नहीं चल सकता, शेर तो जंगल में अकेला होता है, अकेला ही चलता है। बस भेड़ों की भीड़ हो सकती है, बगुलों की भीड़ हो सकती है, गीदड़ों और सियारों की भीड़ हो सकती है, सियार जाएंगे तो बीस झुंड में जाएंगे। शेर बीस के झुंड में नहीं होते बीस शेर एक साथ नहीं मिल पाएंगे। हंस बीस एक साथ नहीं मिल पाएंगे।

शंकराचार्य ने कहा कि व्यक्ति को जीवन जैसा भी प्राप्त हो गया, जन्म हो गया, अब उसको तुम बदल नहीं सकते, अब या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, या फिर इस जीवन में कुछ ऐसा हो जाएगा कि तुम अवतारी व्यक्तित्व बन जाओगे। वह अवतारी व्यक्तित्व बनना ही जीवन की सार्थकता है। और फिर प्रश्न उसी श्लोक में करते हैं उसी पंक्ति में कहते हैं कि एक नर जो मलमूत्र भरी देह से पैदा हुआ। क्या वह उच्चता को प्राप्त कर सकता है? अभी 5 मिनट पहले समझाया कि इस शरीर में मल, मूत्र, थूक, लार, विष्ठा के सिवाय छठी कोई चीज है नहीं। बहुत अच्छी प्रेमिका कहती है कि तुम्हारे बिना जिन्दा रह ही नहीं सकती। और ज्योंहि उसका एक्सीडेन्ट होता है, उसकी चीरफाड़ होती है तो कोई उसे देखना भी पसन्द नहीं करता और एकदम से सोचता है कि जला दो। अब तुम कह रहे थे कि तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता मर जाऊंगा, तुम्हें पांच मिनट नहीं देखता हूँ तो मैं ऐसा हो जाता हूँ। फिर क्या हो गया उस शरीर में से निकला क्या, मल निकला, मूत्र निकला, विष्ठा निकली, तो हमारे शरीर में यही सब कुछ है।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि जो जन्म हो गया हो गया। हमारे अंदर देवतत्व है मगर वह जागृत नहीं है, नरत्व जागृत है। दोनों चीज अलग हैं। एक आपके शरीर में देवत्व है, एक आपके शरीर में नरत्व है, नरत्व का तुम उपयोग कर रहे हो, उसके लिए यूनीवर्सिटी में कोई एज्युकेशन लेने की जरूरत नहीं है, उसके लिए कोई कोर्स है नहीं, उसके लिए कोई पढ़ाई है नहीं, उसके लिए कोई टाइम भी नहीं है, प्रत्येक जानवर के लिए एक फिक्स टाइम है, जितनी चिड़ियां हैं वह सब कार्तिक महिने में ही गर्भ धारण करती हैं मतलब सन्तान उत्पन्न करती हैं। गायें हैं सभी कार्तिक महिने में अपने बछड़े को जन्म देती हैं। एक उनका टाइम फिक्स है।

आदमी के लिए कोई टाइम फिक्स है नहीं। कभी भी बच्चा पैदा कर ही लेते हैं, हो जाते हैं। कोई उनका ऋतु का और जीवन का सम्बन्ध नहीं है। गाय का बछड़ा पैदा होता है और पैदा होने के तीन घंटे के बाद पैरों पर खड़ा हो जाता है, दौड़ने लग जाता है केवल तीन घण्टों बाद और एक नर का बालक पैदा होता है नौ महिने तक तो खड़ा होना बहुत दूर घिसट करके भी नहीं चल पाता। हम कितने कमजोर हैं, और उसमें देवत्व कहाँ रह गया। हम पशुओं से भी कमजोर,
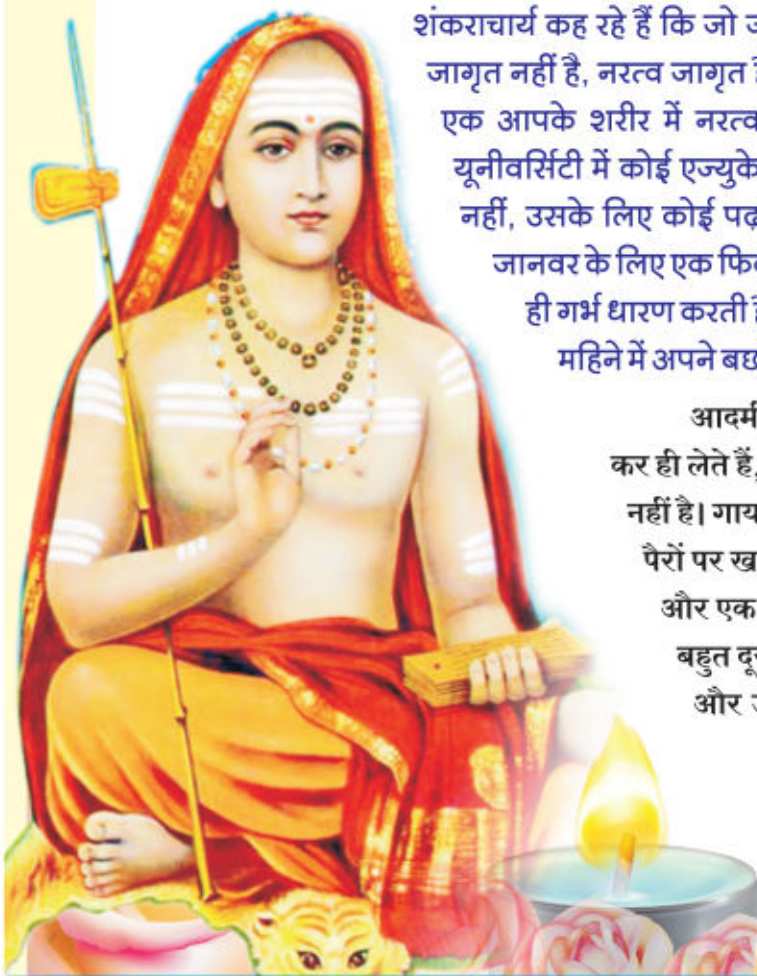
गये-बीते व्यक्तित्व बन गये, क्योंकि तीन घण्टे बाद खड़े हो जाने की क्षमता गाय में है, जो भैंस के बच्चे में है, हममें नहीं है, कभी हमने सोचा भी नहीं।

ऐसा क्यों है? शंकराचार्य उस पंक्ति में कह रहे हैं कि जो जन्म ले लिया हमने, वह ले लिया, जो मां-बाप ने जन्म दे दिया, दे दिया उनका ऋण हम मानें, न मानें। मानते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें जन्म दिया। प्लान से दिया, या बगैर प्लान से दिया। यहाँ जन्म नहीं लेते तो कहीं और जन्म लेते, जहाँ आत्मा भटक रही होती वहाँ जन्म लेते। मगर आपके उस जन्म को देवत्व में कैसे परिवर्तित किया जाए? जब तक देवत्व में परिवर्तित नहीं हो जाएगा तब तक जीवन नहीं कहलाएगा फिर नरत्व ही कहलाएगा। एक नर है, एक सामान्य मनुष्य है, एक व्यापारी हैं, एक बिजनेसमेन हैं, एक जज हैं, एक वकील हैं, एक नौकरी पेशा आदमी हैं, आप कुछ हैं मगर आप सही अर्थों में देवतत्व नहीं है, देवत्व नहीं हैं, आप ढोंग कर सकते हैं माला फेरने का। आप एक ढोंग कर सकते हैं शिवजी की पूजा करने का, आप ढोंग कर सकते हैं ईसामसीह का क्रॉस पहनने का, आप ढोंग कर सकते हैं कुरान से अल्लाहो अकबर करने का, ये सब ढोंग हैं। ढोंग इसलिए है कि इतना करने के बाद भी शिव के दर्शन नहीं कर पाये, आप इतना करने के बाद भी अल्लाह के दर्शन नहीं कर पाये, इतना करने के बाद भी ईसा मसीह आपके सामने प्रगट नहीं हो पाए। कहाँ कमी थी, क्या गलती थी? तुममें क्या कमी है? तुम केवल एक नर हो, तुम अवतारी पुरुष बन नहीं पाए। ये तुममें कमी हुई। ऐसा कैसे हो सकता है? तुम मंत्र पढ़ो और देवता सामने उपस्थित न हों। ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि तुम उसे हृदय से पुकारो और वह तुम्हारी पुकार न सुने। ऐसा संभव ही नहीं है।

सी.के. चतुर्वेदी इधर आना। बस एक सेकण्ड। अब देखिये मैंने मंत्र पढ़ा सी.के. चतुर्वेदी इधर आओ। देखिए तुम्हारे बीच में से आया कि नहीं आया। मंत्र में ताकत है कि नहीं है आपके सामने उदाहरण है।

तुम कह रहे हो शब्दों में ताकत होती ही नहीं। मैं कह रहा हूं कि केवल वही मंत्र पढा और वही व्यक्ति उठा, दूसरे उठे नहीं। इतने लोग बैठे थे। केवल वही व्यक्ति उठा और मेरे मंत्रों में बिलकुल क्षमता थी, मेरे शब्दों में क्षमता थी और शब्द को ही मंत्र कहते हैं। और मैंने मंत्र उच्चारण किया। चाहे ह्रीं बोला, चाहे क्लीं बोला, चाहे श्रीं बोला, और चाहे सी.के. चतुर्वेदी एक शब्द बोला, बोला और वह व्यक्ति उठ कर मेरे पास आया। फिर मैं शिव की आराधना करता हूँ, शिव मंत्र करता हूँ, शिव को बुलाता हूँ, शिव क्यों नहीं आते? जब सी.के. चतुर्वेदी आ सकता है तो फिर शिव को आना ही चाहिए, या फिर हममें कोई कमी है।

मैं तो आपके सामने प्रत्यक्ष उदाहरण देकर समझा रहा हूँ। न आप उठ कर आए, न वे

उठकर आए। केवल जिसको मैंने याद किया, जिसको बुलाया वही व्यक्ति आया। इसलिए आप नर हैं शंकराचार्य कह रहे हैं कि यह जीवन व्यर्थ हो जाएगा आपका, एक ढोंग हो जाएगा, एक पाखण्ड हो जायेगा, आप मात्र सांस लेने की क्रिया कर देंगे और सांस भी आपको लेनी आती नहीं। आप एक छोटे से बालक को देखें, छह महिने के बालक को–आपके घर में बालक हो आप देखिए वह सो रहा है और सांस ले रहा है तो उसकी नाभि बिल्कुल फड़फड़ा रही है ज्यों ही सांस ली नाभी स्पन्दन करती है। आप जब सांस लेते हैं तो नाभी तो बहुत दूर पेट इतना बढ़ा हुआ है कि नाभी वहीं के वहीं पड़ी है। हिल नहीं सकती क्योंकि पेट को इतना भर दिया आपने कि सांस यहाँ तक आया और फिर वापिस बाहर आ गया।

अब प्राणायाम होगा कहाँ से, कहाँ से जीवित रहोगे, कहाँ से तुम योगी बन सकोगे, कहाँ से मूलाधार जाग्रत होगा, कहाँ से कुण्डलिनी जाग्रत होगी, सांस लेने की क्रिया ही तुम्हें ज्ञात नहीं है। जब सांस नाभी से टकरायेगी अन्दर का कचरा निकलेगा, तब मंत्र आपकी नाभि से टकरा कर उच्चरित होगा तो वह ब्रह्माण्ड में गूंजेगा और पूर्ण रूप से फलप्रद होगा।

बालक को ज्ञात है क्योंकि ब्रह्म से निकला हुआ वह आया है और उसने ज्यों ही सांस ली सीधे नाभी में स्पंदन हुआ और आप देखेंगे कि उसकी नाभी बिल्कुल धड़कती हुई होती है। नाभी अपने आप में धड़कती रहती है। मगर जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है नाभी धड़कना बन्द हो जाती है, आपकी नाभी धड़क नहीं सकती क्योंकि नाभी के ऊपर आपने इतना हलवा लगा दिया है, पुड़ियां लगा दी हैं कि पेट हिले पॉसिबल ही नहीं है। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आपको सांस लेने की क्रिया का भी ज्ञान नहीं है। शंकराचार्य कह रहे हैं कि गुरु का कर्तव्य, धर्म यह है कि वह व्यक्ति को यह एहसास करा दें कि तुम नर हो और तुम्हें अवतार प्राप्त करना है, अवतारी पुरुष बनना है, देवत्व बनना है और जब देवत्व बनेंगे तो देवत्व की मृत्यु नहीं हो सकती, देवता मर नहीं सकता यह सम्भव नहीं है। नर मर सकता है इसलिए मर सकता है क्योंकि उसने उस जीवन का अर्थ समझा नहीं, कि कैसे जिन्दा रहा जा सकता है यह ज्ञात नहीं है। अगर मुझे यह ज्ञात नहीं है कि यहाँ से कनाट प्लेस कैसे जाया जा सकता है, तो मैं नहीं जा सकता।

इसलिए इस श्लोक में बताया गया है कि बहुत छोटा-सा जीवन मिलता है। पच्चीस साल तो आपने बीता दिए पढाई करने में, फिर पच्चीस साल के बाद हो गई शादी, फिर चालीस साल तक आपने किसी और काम में लगा दिए। फिर आगे के समय में आपने व्यापार सेटिंग कर लिया। फिर पैंसठ साल में आप मर गये। और यदि सत्तर साल के हो गये तो लोग आश्चर्य करते हैं कि यह जिन्दा है। अभी

तक जिन्दा हैं अच्छा चलो, राम जी की मर्जी।

पिचहत्तर साल के हो गये तो लोग घूर-घूर के देखते हैं पिचहत्तर के हो गये क्या और अस्सी साल के हुए तो आपको चिड़िया घर में खड़े कर देते हैं। यह साहब अस्सी साल के व्यक्ति हैं जो अभी तक जिंदा है। कितना छोटा-सा हमारा जीवन है, जीवन जिसे हम कहते हैं कुछ साल है और शंकराचार्य कहते हैं क्या इस जीवन को हम अमर नहीं बना सकते। बना सकते हैं, उस नर से, देवत्व की ओर जा सकते हैं। आपके पिता नर थे आपकी माँ नर थी नारी थी। आपके दादा ऐसे ही थे, आपके परदादा भी ऐसे ही थे। उनके पास भी कोई प्लान नहीं था। आपके पास भी आज तक कोई प्लान नहीं हुआ। मगर वे हमारे कोई काम के हैं नहीं क्योंकि... ''अप्पो दीपो भव'' मैं हूँ तो सब हैं, अगर आप नहीं रहेंगे तो क्या होगा, पत्नी चार छह महिने रोयेगी, साल भर रोयेगी। बाद में फिर हलवा-पूड़ी खा लेगी, किसी शादी में जायेगी तो खा लेगी। फिर बेटे अपने काम में लग जाएंगे। फिर घर में शादियाँ हो जाएंगी। फिर श्राद्ध आ जाएगा तो आपको याद करेंगे कि मेरे पिता जी बहुत अच्छे थे आज उनकी मृत्यु हो गई थी बस बात खत्म, स्वर्गवासी हो गये थे। आपने किया क्या जिन्दगी में?

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है देवत्व की ओर अग्रसर होना और अगर समझदार व्यक्ति है... समझदार व्यक्ति वह जो विवेक से काम लेता है। मूर्खव्यक्ति विवेक से काम ले ही नहीं सकते। पहले शिष्य गुरु के चरणों में पहुँचता था, मीलों की पैदल यात्रा करके। उस समय गाड़ी या ट्राम, टैक्सियाँ, कारें, बसें थीं नहीं। उस वासुदेव के बेटे के पास भी नहीं थी जो राजा का बेटा था। उसको पैदल जाना पड़ा। सांदीपन आश्रम में जा करके उसने किस प्रकार से एक नर से देवत्व बना जाए ये क्रिया सीखी और उस समय त्रेता युग में केवल दो व्यक्तियों को ज्ञान था, अत्रि को और विश्वामित्र को। द्वापर युग में केवल एक व्यक्ति को ज्ञान था जिसको सांदीपन कहते हैं और आज भी वहाँ सांदीपन आश्रम है उज्जैन के पास नदी क्षिप्रा के उस पार।

यह एक छोटी सी क्रिया नहीं है। एक पूरे शरीर को परिवर्तित करने की क्रिया है। इतना परिवर्तित करने की क्रिया कि एक सामान्य मलमूत्र से भरी हुई देह को अपने आप में अमृतमय बना देने की क्रिया है, आपको तुच्छ व्यक्ति से देवत्न बना देने की क्रिया है, अपने आप को एक घटिया व्यक्ति से ऊँची छलांग लगाने की क्रिया है, ऐसी क्रिया कि बूंद समुंद्र बन जाए, एक ऐसी क्रिया कि जहां अपने आप में सम्पूर्णता प्राप्त हो जाती है, 'पूर्ण मद: पूर्ण मिदं' कहा जाये वह बन जाने की क्रिया। अगर ऐसी क्रिया तुम्हारे पास नहीं है नहीं आ पाई, नहीं बन पाये तो यह जीवन व्यर्थ है, क्षण भंगुर है, समाप्त है और उस जीवन का कोई अर्थ, कोई मकसद है ही नहीं। मगर यह
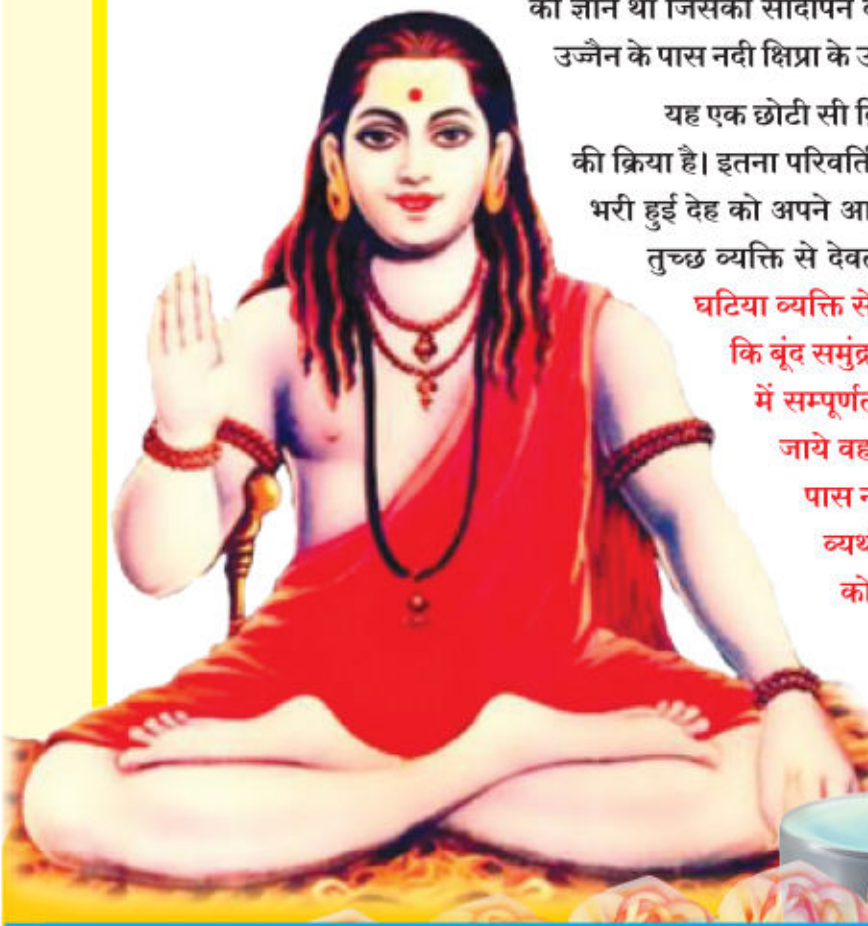
आपका सौभाग्य है कि, नदी तो समुद्र के पास जाती है, हजारों मील दूर दौड़ती हुई, गंगोत्री के पास हिमालय से होती हुई, लहराती हुई, छलांग लगाती हुई, दौड़ती हुई, पेड़ों को तोड़ती हुई, चट्टानों को तोड़ती हुई और यहाँ तो समुद्र खुद तुम्हारे पास आ करके बैठा हुआ है, तुम्हें पूर्णता देने के लिए।

आप पूछेंगे, कि क्या ऐसा हो सकता है? मैं पूछूंगा कि आपके प्रश्न अगणित हैं, करोड़ों हैं। क्या सांस लेने से कुछ होता है, क्या सांस नहीं लेने से कुछ होता है, क्या आपके पास बैठने से कुछ होगा, क्या खाना खाने से कुछ होगा, या नहीं खाने से कुछ होगा, अब आपके पास तो हरि अनंत 'हरि कथा अनन्ता' आपके प्रश्न तो अगणित है ही। मगर इस जीवन में जो जीवन आपको मिला है वह मैंने कहा कि नाशवान है, आप खुद भी समझते हैं कि नाशवान है शरीर समाप्त हो जाएगा। ये आपको मालूम है और मैं आज वह क्रिया समझाना चाहता हूँ कि इस नाशवान शरीर को अपने आप में अमर अद्वितीय बना सकते हो, गारंटी के साथ बना सकते हो, ईश्वर के साक्षी के रूप में बना सकते हो और नहीं बनाया तो धिक्कार है। आपको भी और मुझको भी। मैं अपने आप को धिक्कार देता हूँ, इसलिए कि मैं आप में वह प्रेरणा पैदा नहीं कर पाया। आप इस चीज को समझ नहीं पाये।

कृष्ण ने भी गीता में शंकराचार्य के इसी श्लोक को लिया। मैंने कहा कि इस गीता से अष्टावक्र गीता बहुत महत्त्वपूर्ण है, कभी आप उसको पढ़ें और इस गीता के इस तथ्य पर जो मैंने बताया पूरा एक अध्याय लिखा है अष्टावक्र ने। गीता में तो केवल एक श्लोक लिखा है।

नैन छिन्दति शस्त्राणि, नौनंदहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापे न शोषय ति मारुतः।।
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय-नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानिदेही।।

कपड़ा फट जाता है तो दूसरा कपड़ा पहन लेते हैं, वैसे ही शरीर नाशवान हो जाएगा तो हम दूसरा चोला धारण कर लेंगे। गीता में कृष्ण ने इतना ही कहा। पर अष्टावक्र ने इस बात को पूरा समझाया, इतनी सी चीज समझ में नहीं आएगी। क्यों समझ नहीं आयेगी क्योंकि कृष्ण को समझा ही नहीं गया और हमारे यहाँ पर भारतवर्ष में सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि जिन्दा गुरु को समझा ही नहीं जा सकता, कोई नहीं समझता। उसे गालियाँ दी जा सकती हैं, उसको फटकारा जा सकता है।

कृष्ण को गालियाँ दीं, फटकारा, इतना उसको प्रताड़ित किया गया कि वहाँ से, मथुरा से भागकर द्वारिका में जाना पड़ा और रणछोड़ जैसा कलंक लगाना पड़ा। युद्ध से भागने वाला।

राम को इतना प्रताड़ित किया गया कि चौदह साल तक पत्नी के वियोग में जंगल में दर-दर भटकना पड़ा।

बुद्ध को इतना प्रताड़ित किया गया कि उनके कानों में कीलें ठोक दी गईं।

ईसा मसीह को इतना प्रताड़ित किया गया कि सूली पर टांग दिया गया।

सुकरात को इतना प्रताड़ित किया गया कि उनको जबरदस्ती जहर पिला दिया गया।

शंकराचार्य को इतना प्रताड़ित किया गया कि उनको कांच घोट कर पिला दिया गया।

हम जीवित गुरु को पहचान ही नहीं पाये और मरने के बाद उसकी पूजा करते रहते हैं। चित्र लगाते हैं, अगरबत्ती लगाते हैं, धूप लगाते हैं। कृष्ण जिन्दा होते और धूप, अगरबत्ती लगाते तो ये क्षण आते नहीं। हम मुर्दों की पूजा करने वाले हैं, जीवित व्यक्तियों की पूजा करने वाले नहीं हैं। हम बूढ़े बाप को शुद्ध घी खिलाने की चिन्ता नहीं करते। मरने के बाद चिता में पूरा पीपा उड़ेलते हैं, कि लोग देखें कि कितना सपूत बेटा है, पूरे असली घी के पीपे डालो तो वो बेटा बहुत सपूत है। अरे पहले असली घी खिलाते तो इतनी शीघ्र मरता ही क्यों ये। और पहले खिलाते नहीं, हम मुर्दा पूजक हैं, जिन्दा पूजक हैं नहीं, क्योंकि जिन्दा गुरु के पास रहना उतना ही कठिन है जितना तलवार के ऊपर चलना। ये आसान काम नहीं है, क्योंकि वे हर समय आपको टोकते रहेंगे, तुम ऐसा मत बनो, जो कुछ हो इससे अपने आप में उच्चकोटि के बनो, अद्वितीय बनो और यहाँ तुम गलती कर रहे हो। वह बार-बार आपको टोकेगा, रोकेगा और आपको बराबर चोट पहुँचेगी कि ऐसा गुरु क्या काम का, कोई प्रशंसा नहीं करता, मैंने सौ रुपये का नोट चढ़ाया, छोड़ो इसको। ये मोटा-ताजा गुरु बहुत अच्छा है लाल, सुर्ख बस ये अच्छा है। बस उसकी शरण में चले जाओ। क्योंकि बहुत मीठी-मीठी प्रशंसात्मक बातें करता है जिससे हमारे अहम् को सन्तुष्टि मिलती है।

हमारे यहाँ तो जिन्दा व्यक्तियों की पूजा नहीं होती, उनको गालियाँ दी जाती हैं, तड़पाया जाता है, परेशान किया जाता है, मारा जाता है और उसको मरने के लिए बाध्य कर दिया जाता है या तो वह छोड़ करके जंगल में चला जाता है या संन्यासी बन जाता है या अगर उच्चकोटि का व्यक्तित्व है तो किसी और लोक में चला जाता है या सिद्धाश्रम में चला जाता है। मगर मैं ऐसा नहीं करूँगा... आपके बीच में ही रहूँगा गारंटी है... आप दीजिए गालियाँ, कितनी देंगे, कितना प्रताड़ित करेंगे, कितनी आलोचना करेंगे। मैं झेल लूंगा।

लीक-लीक सबहूं चले... सभी लीक पे चलते हैं। बिना लीक तीनों चले, शायर, सिंह,

फकीर।। शेर कोई पगडण्डी पर चलता ही नहीं, जंगल में, पहाड़ में कोई रास्ते पर नहीं चलता और जो सही अर्थों में योगी हैं वह किसी के रास्ते पर नहीं चलता, बिल्कुल नए रास्ता खोजता है, नये रास्ते पर चलता है। मैं उस रास्ते पर चलूँगा जिस रास्ते पर आज तक योगी, यति, संन्यासी नहीं चले, उस रास्ते पर चलूँगा और सांदीपन का युग और विश्वामित्र का युग लाकर खड़ा करूँगा तुम्हारे सामने...।

कृष्ण अर्जुन को यही समझा रहे हैं कि अर्जुन तू मुझे पहिचान ही नहीं पा रहा है, मैं एक धोती, पीताम्बर पहना हुआ साधारण व्यक्ति नहीं हूँ, तुम मुझे सामान्य सारथी समझ रहे हो, मैं तुम्हारा ड्राइवर नहीं हूँ इस रथ को चलाने वाला। मैं सामान्य आदमी नहीं हँ, तुम मुझे पहचानो कि मुझमें ईश्वरत्व है, मैं अवतारी हूँ, क्योंकि मैंने सांदीपन से वह ज्ञान प्राप्त किया है। उनसे वह दीक्षा, वह ज्ञान, वह चेतना वह प्रयोग मैंने लिया है। अर्जुन फिर भी गाण्डीव नीचे रखा हुआ बैठा है।

कृष्ण कह रहा है—मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूँ। तुम मुझे पहले पहचानो कि मैं अपने आप में ईश्वरत्व हूँ। और दशम अध्याय तक कृष्ण उसको बार-बार यह समझा रहे हैं कि तुम मुझे पहचान लो। परन्तु जब अर्जुन फिर भी नहीं समझता तो दसवें अध्याय में समझाते हैं कि यूं समझ ले कि मैं पहाड़ों में हिमालय हूँ। यूँ समझ ले मैं नदियों में गंगा नदी हूँ। तू यूं समझ ले कि पशुओं में गाय हूँ। यूं समझ ले कि अपने आप में मैं सिंह हूँ। यह समझ ले पेड़ों में पीपल का पेड़ हूँ। यह कहने के पीछे उसका कोई अहंकार नहीं था। वह समझा रहा था कि तुम मुझे पहचान लो और आदमी पहचानता नहीं है, जीवित व्यक्ति को पहचानता ही नहीं है क्योंकि हम मुर्दे हैं, तो मूर्दे की ही पूजा करेंगे। जीवित गुरु की पूजा नहीं कर पाते हम। ये हमारी कमी है।

कब ऐसा एक क्षण आयेगा, क्या एक बार फिर उस ईसा मसीह को सूली पर टांग लिया जायेगा, फिर एक बार सुकरात को जहर दे दिया जायेगा। फिर राम को सरयू में डूबने के लिए मजबूर कर दिया जायेगा कि डूब के मर जाए, फिर कृष्ण को तीर मार करके समाप्त कर दिया जायेगा, फिर बुद्ध कानों में कील ठोक दी जायेगी, फिर वह वापिस युग आ जायेगा। ऐसा कब तक हम करेंगे, कब तक महापुरुषों को, उन विद्वानों को कब तक प्रताड़ित करते रहेंगे। एक आक्रोश है, आक्रोश इसलिए है कि आपमें नरत्व है, मगर देवत्व नहीं है।

और जब नहीं समझा अर्जुन तो कृष्ण ने एकदम से अपना विराट रूप दिखाया अब पहचान ले, अब देख ले, अब देख लें कि मेरा विराट रूप है, ये पूरा ब्रह्माण्ड मुझमें समाया हुआ है। ये देख ले कि ये सामने महाभारत युद्ध हो रहा है,
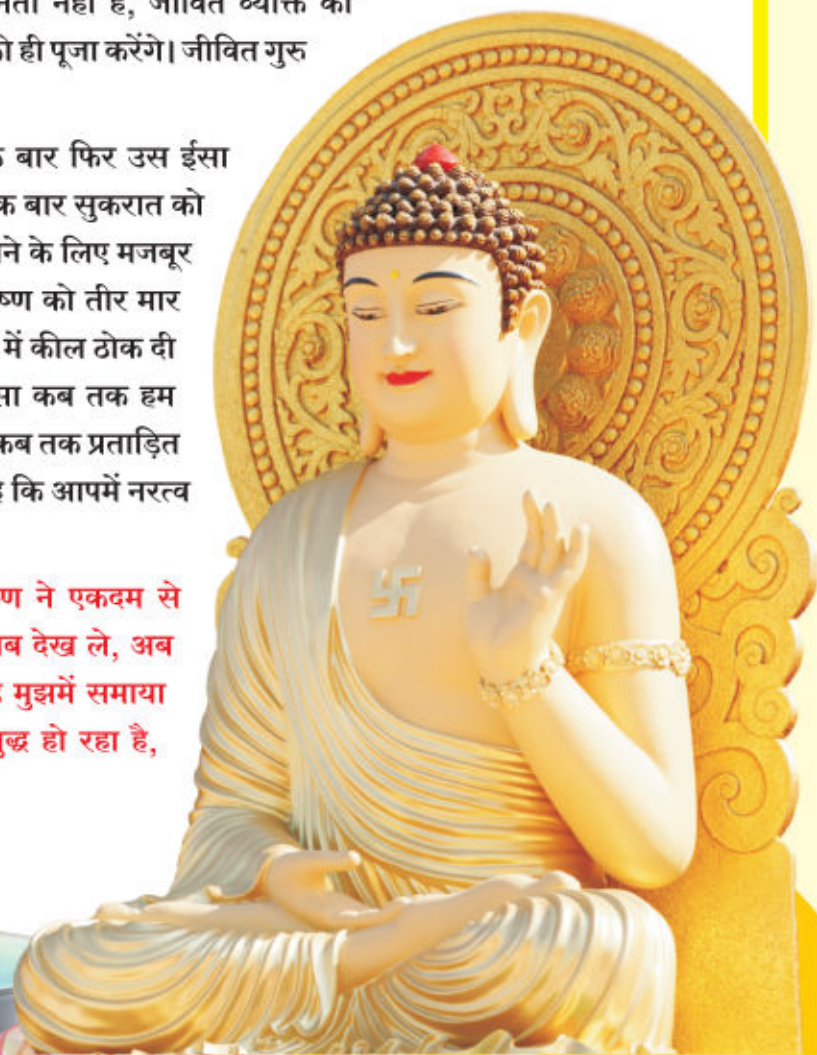
सामने सारा ब्रह्माण्ड दिखा दिया और अर्जुन ने देखा कि उसमें भीष्म है, कृपाचार्य है, द्रोणाचार्य है, अश्वत्थामा है, उसमें दुर्योधन भी है, दु:शासन भी है। अर्जुन भी बैठा है रथ पर और सारा दृश्य चल रहा है बिल्कुल... उसने कहा कि ये सब ब्रह्माण्ड ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड में कहाँ क्या घटनाएं घट रही हैं तू यहाँ देख ले क्योंकि अब तुझे मालूम पड़ना चाहिए कि मैं तुम्हारा सारथी, तुम्हारा मित्र नहीं हूं। मैं अपने आप में एक अवतार हूँ, मैं अपने आप में पूर्ण पुरुष हूँ। मैं अपने आप में पूरा ब्रह्माण्ड अन्दर समेटे हुए हूँ और इसलिए तू मुझे पहचान। उसी क्षण अर्जुन का मोह समाप्त हुआ और वह उस जगह पहुँचा, जहाँ अपने आप में एक पूर्णता की प्राप्ति होने की दशा होती है, क्योंकि कृष्ण ने उस सांदीपन से अन्दर के पूरे ब्रह्माण्ड को जाग्रत करने की क्रिया सीख ली थी। इसलिए राम बने कि उन्होंने अपने आपको पूर्ण विश्वामित्र से जोड़ लिया था। वशिष्ठ नहीं, वशिष्ठ को ज्ञान था ही नहीं जिससे उसको ज्ञात हो सके, वह विराट पुरुष बन सके।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में देवत्व है। मगर गुरु वह है जो उसमें विराटता को जागृत कर दे। पूरा ब्रह्माण्ड भर दे और जब पूरा ब्रह्माण्ड भर दिया जायेगा तो संसार की कोई भी घटना आपसे छिपी नहीं रह सकती। संसार में कहाँ क्या घटना हो रही है अपने आप ज्ञात हो जायेगी। अपने अन्दर पूरा विराट दृश्य होगा। फिर अपने आप में विराट पुरुष बनेंगे, आप अवतारी पुरुष बन जाएंगे, नर नहीं रहेंगे। तब आपके शरीर में एक सुगन्ध प्रवाहित होगी।

कहते हैं कृष्ण के शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित होती थी, तो आपके शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित हो सकती है, अवतार बनने के लिए जरूरी है कि आपको वह क्रिया, वह चिन्तन, वह विचारधारा और वह प्रयोग समझाया जाए। कोई सांदीपन बने, कोई विश्वामित्र बने। वह समझा सकता है। अगर वह नहीं समझा सकता तो आप एक नर हैं, नर से थोड़ा श्रेष्ठ बन जायेंगे मगर अवतार नहीं बन सकते। अवतार नहीं बने तो जीवन का अर्थ ही क्या? फिर यहाँ मेरे पास बैठने से फायदा भी क्या हुआ। मैं आपके सामने बैठा उसका मतलब ही क्या हुआ। मैं भी आपकी प्रशंसा करके चला जाऊंगा होगा क्या उससे, फिर मेरे जीवन का अर्थ मेरा अर्थ, मेरा कर्तव्य क्या होगा अगर मैं आपको नहीं समझा सकूँगा। मेरा जीवन का धर्म, कर्तव्य यह है कि मैं समझाऊं वास्तविकता क्या है और वास्तविकता यह है कि आप निश्चित रूप से सामान्य मनुष्य नहीं हैं यह उतना ही सत्य है जितना गंगा नदी सत्य है, हिमालय सत्य है। आपमें देवत्व है इसीलिए ज्यों ही कृष्ण पैदा हुए तो जितने देवी-देवता थे सब गोप ग्वाला बन गये और उनके चारों तरफ पैदा हुए। कोई सुदामा बना, कोई बलराम, कोई राधा बनी और देवता बाल रूप से जन्म लेकर उनके चारों तरफ घूमते रहे, क्योंकि कृष्ण को वे देवता छोड़ नहीं सकते थे। उन्होंने गोप के रूप में जन्म लिया, गोपिकाओं के रूप में जन्म लिया। आपने भी जन्म लिया एक शिष्य के रूप में चाहे

व्यापारी बने, चाहे नौकरीपेशा बने और मेरे चारों तरफ पैदा हुए। घूमे मेरे चारों तरफ और इसमें मैं अपना कोई अहंकार, अपना कोई बड़प्पन नहीं दिखा रहा हूँ।

कृष्ण भी अगर कह रहे हैं तू मुझे पहचान तो कृष्ण कोई अहंकार नहीं बता रहे थे। यदि मैं भी कह रहा हूँ कि हम क्या हैं तो कोई अपना बड़प्पन नहीं दिखा रहा हूँ। आपसे भी ज्यादा नम्र हूँ। आपसे ज्यादा सामान्य हूँ मगर इस बात को मैं जानता हूँ कि नर को मैं पूर्ण अवतार कैसे बना सकता हूँ, यह मैं जानता हूँ। मैं यह जान सकता हूँ कि आप में विराटता कैसे प्रदर्शित कर दूँ कि आप सीना खोल के दिखा सकें, ये पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अन्दर समाहित है, ये क्रिया मैं आपको समझा सकता हूँ। गारंटी के साथ समझा सकता हूँ, ये छोटी बात नहीं है, यह सामान्य बात नहीं है कि जैसे एक गिलास पानी पी लिया। यह एक अपने आप में एक अद्वितीय घटना है, ऐसी घटना है जो आपके पिछली पचास पीढ़ियों में नहीं हो पाई, ऐसी घटना है अगली पचास पीढ़ियाँ संवर जाएंगी क्योंकि आपके अन्दर वह पूर्ण रूप से देवतत्व जागृत हो जायेगा। होगा ही, कृष्ण के भी आपकी और मेरी तरह दो हाथ, दो पैर ही थे। दो आँखें थीं, एक नाक थी, दो कान थे। वह अपने आप में पचास हाथ वाले नहीं थे।

हम श्रीकृष्ण को कहते हैं, विष्णु को कहते हैं चार हाथ थे, चार हाथ का मतलब दो हाथ तो थे, दो और समर्पित सलाहकार थे। इसलिए चार हाथ! मेरे पास भी दो हैंडस और होने चाहिए थे बहुत अच्छे जिससे कि मैं और ज्यादा काम कर सकूँ। लोगों ने उनके चार हाथ बना दिये। हनुमानजी की एक जाति थी, उसकी एक पूंछ बना दी बस यह हनुमान जी बन गया। अरे, ऐसा कैसे हो गया, ऐसा तो कहीं वाल्मीकि रामायण में लिखा नहीं है। वानर एक जाति थी। हमने समझा हनुमान जी बन्दर होते थे, उनको बन्दर बना दिया।

खैर वह एक घटना है, मगर मैं उस प्रसंग पर आ रहा था कि शंकराचार्य श्लोक में कह रहा था कि गुरु का धर्म कर्तव्य है जीवन में एक बार उस शिष्य को एहसास करवा देना चाहिए कि तुम गीदड़ नहीं हो, सही अर्थों में शेर हो, सिंह हो, यह तुम्हें बता देना चाहता हूँ और तुम अपने आपको गीदड़ समझ रहे हो, डर रहे हो, हुंआं हुंआं कर रहे हो, और सब कहते हैं और तुम चुप हो जाते हो, तुम सही अर्थों में ऐसे पिंजरे के तोते हो, जो अन्दर बैठे हो। और कोई कहे, 'बोल मिट्ठू राम-राम' और तुम 'राम-राम' बोलते हो, इसलिए कि तुम्हें हरी मिर्च खाने को मिल जाती है, अनार के दाने खाने को मिल जाते हैं।

आपने हवा में उड़ना सीखा नहीं। उस आकाश में कैसे उड़ते हैं वैसा तोता आप नहीं बन पाये। उड़ते हुए मानसरोवर तक कैसे पहुँचते हैं वह आप नहीं देख पाये। मानसरोवर का जल पीने लायक कैसा है वह आप नहीं देख पाए, क्योंकि आपके पंखों में वह ताकत थी नहीं पिजरे में बन्द रहने की वजह से। पंख मर गये और यदि

पिंजरे में कोई तोता हो और पांच साल बाद उसे पिंजरे से बाहर निकालिए तो आप देखेंगे कि एकदम डर करके फिर पिंजरे में घुस जाएगा। एक सेकण्ड के बाद। वह डरता है फिर उसको पकड़ के बाहर निकालते हैं, फिर एक सेकण्ड के बाद अन्दर घुस जायेगा। क्योंकि उसमें इतना डर समा गया कि कोई बिल्ली मुझे खा जायेगी और आप भी डर गये हैं कि मैं मर जाऊंगा तो घर में घुस कर बैठ गये क्योंकि घर में अनार का दाना मिल जाता है, हरी मिर्च मिल जाती है, एक पत्नी मिल जाती है, दो-तीन बेटे मिल जाते हैं और सब चाहते हैं, ये पिंजरे के अंदर रहे तो अच्छा, नहीं तो उड़ जायेगा, बहुत मुश्किल कर देगा। पिंजरे में ही ठीक है, मैं बोलूंगा-'बोल मिट्ठू राम-राम' तो 'राम-राम' बोलता रहेगा।

उन्होंने भी आपको कैद कर दिया है और आप भी कैद में बहुत खुश हैं जैसे तोता उस पिंजरे में वापिस जल्दी घुस जाता है, वैसे ही ज्योंहि मैं यहाँ से आपको छोड़ूंगा। वापिस पिंजरे में घुस जाएंगे। शंकराचार्य कह रहे हैं ऐसा जीवन कब तक चलता रहेगा तुम्हारा, क्यों चलता रहेगा? अगर ऐसा कोई गुरु तुम्हारे पास नहीं हो या सांदीपन नहीं हो, विश्वामित्र नहीं हो तो वह ज्ञान आपको नहीं दे पायेगा। क्योंकि जब उसको खुद यह ज्ञान नहीं है तो वह दूसरों को कहाँ से देगा? मगर जीवन का आनन्द वहाँ है कि आपके शरीर से सुगन्ध प्रवाहित हो, पास में से निकलें तो एहसास करें कि इसमें यह सुगन्ध क्या है, ये हिना, ये गुलाब, ये केवड़ा, ये सबका मिला हुआ अष्टगन्ध सा है, पास में निकलो तो एक अजीब सी सुगन्ध महसूस होती है। आपके चेहरे से अपूर्व आभा निकलती है, आपके नेत्रों में ज्वाला सी बनती है। आप क्रोधित हो तो सामने वाला भस्म हो जाता है। आप आँखों से गौर से देखते हों तो पागल की तरह खिंचा हुआ चला आता है, एक सम्मोहन सा बन जाता है, आँखों में ऐसा आकर्षण हो जाता है कि वह आपके पास लिपट जाता है, ये क्या चीज है, उस अन्दर के ब्रह्माण्ड के रूप का एक बिन्दु है। कृष्ण चौबीस घण्टे ब्रह्माण्ड रूप लेकर नहीं घूमते रहे। वह तो अर्जुन नहीं माना तो उसे दिखाया। क्योंकि वह योग्य था साधना के उस धरातल पर खड़ा था। बस कुछ क्षणों के लिए मोहग्रस्त हो गया था। ये नहीं कि वे हर बार ऐसा करके दिखाते रहे कि ये रहा ब्रह्माण्ड रूप, देख ले ब्रह्माण्ड रूप। कोई करोड़पति होता है तो करोड़ रुपये लेकर नहीं घूमता है।

उस श्लोक में शंकराचार्य कहते हैं कि जीवित गुरु के पास में रहना बहुत कठिन है, नहीं रह पाता आदमी और रहे वह अपने आप में सौभाग्यशाली होता है क्योंकि गुरु बराबर शिष्य को टोकता रहता है क्योंकि उसको उस जगह पहुँचाना है यह गुरु का कर्त्तव्य धर्म हैं जब उस जगह पहुँचेगा तो विराट अपने आप में जागृत हो जायेगा। आपके अन्दर विराटता जागृत हो जायेगी, होगी मंत्रों के माध्यम से। मैंने मत्रों की अभी परिभाषा दी।

साधना या मंत्र का अर्थ है कि हम किसी देवता को आँखों से देख सकेंगे, बात कर सकेंगे। देवता जीवित जागृत हैं, हम भी उन देवताओं में से एक देवता बनें और पूर्ण ब्रह्म बनें और पूर्णता प्राप्त करें और जो श्लोक यजुर्वेद के अंत में कहा है कि 'पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णात् पूर्ण मदुच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा शिष्यते।।' वह पूर्णता प्राप्त करें और पूर्ण अवतारी बनें। नर पैदा होकर भी आप पूर्णता प्राप्त करते हुए अमर बनें। अमृतमय बनें, हमारे अन्दर अमृत कलश स्थापित हो, और हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड स्थापित हो जाए जिससे कि हम बिना हिचकिचाहट के, बिना किसी की सहायता के सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सकें और बीच में कोई रोक-टोक हो ही नहीं। उसके लिए आपको अपने को तैयार करना पड़ेगा तब आप नर नहीं होंगे उस समय, आप उस समय देवत्व होंगे, देवता होंगे, उस समय आपके अन्दर एक ब्रह्माण्ड जागृत होगा और होगा मंत्रों के माध्यम से।

आप में वह ज्ञान, वह चेतना आये कि आप एक जीवित जागृत व्यक्तित्व को पहचान सको, उसे अपने अन्दर समाहित कर सको, उस व्यक्तित्व के साथ पूर्ण आकाश मण्डल में एक विराटता जागृत हो, आप में एक सुगन्ध प्रवाहित हो, आगे आने वाली पीढ़ी को नया रास्ता दिखा सको, ऐसा ही मेरा आप सभी के लिए हृदय से आशीर्वाद है।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहचान करा ही देती है.... इत्र के लिए कहने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो अपनी उपस्थिति मात्र से, अपनी सुगन्ध से ही आसपास के लोगों को एहसास करा देता है, अपने होने का.....

उत्तम कोटि के मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दिव्य मंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना विधान की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रश्मियों के भण्डारण होते हैं, जिनसे रश्मियां स्वत: ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु तंत्र क्षेत्र में जो उपलब्धियां तिब्बत के बौद्ध लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्चर्यचकित कर देने और दांतों तले उंगलियां दबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुदूर बौद्ध लामा मठ से प्राप्त गोपनीय पद्धतियों एवं मंत्रों से निर्मित व अनुप्राणित यह यंत्र साधक के आर्थिक जीवन का कायाकल्प करने के लिए पर्याप्त है।

इस यंत्र के स्थापन से तिब्बती लामाओं की धन देवी का वरद साधक के घर को धन-धान्य, समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है, फिर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, ऋण का बोझ उसके सर से हट जाता है और उसे किसी क आगे हाथ नहीं पसारने पड़ते।

तिब्बती धनप्रदाता
लामा यंत्र

विधान

किसी रविवार की रात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े में लपेट कर 'ॐ मणिपद्मे धनदायै हुं ॐ फट्' मंत्र का 11 बार उच्चारण कर मौलि से बांद दें। फिर इसे अपने घर की तिजोरी में रख दें। इससे निरन्तर अर्थ वृद्धि होती होगी।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

प्रसन्न लक्ष्मी साधना

यश, धन, स्वर्ण प्राप्ति की साधना

देवी के महालक्ष्मी स्वरूप में प्रसन्न लक्ष्मी का स्थान सर्वोपरि है,

धन की इच्छा रखने वाले साधक को नित्य प्रति प्रसन्न लक्ष्मी की वन्दना अवश्य करनी चाहिए,

यह देवी स्वरूप विष्णु की शक्ति है,
और शीघ्र प्रसन्न होकर साधक को अतुल धन प्रदान करने वाली है।

वरिवश्या रहस्य ग्रंथ जो कि भाष्कर राय द्वारा रचित है तथा शक्ति सिद्धांत मंजरी ग्रंथ में लिखा है, कि रंक से राजा केवल प्रसन्न लक्ष्मी साधना से ही तथा प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से ही संभव है।

यह साधना केवल शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से पूर्णिमा तक सम्पन्न की जानी चाहिए तथा देवी के स्वरूप में लिखा है कि प्रसन्न लक्ष्मी परमकल्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण की आभा वाली, तेज स्वरूपा सुनहरे वस्त्र धारण करने वाली, आभूषणों से सुशोभित, अपने हाथों में स्वर्ण घट, स्वर्ण कमल, वर मुद्रा धारण किये हुए विष्णु की शक्ति है और जो साधक यह साधना सम्पन्न करता है, उसके जीवन में प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से धन की वर्षा सी होने लगती है।

इस साधना में 4 वस्तुएं प्रधान हैं - 1. स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र, 2. प्रसन्न लक्ष्मी महायंत्र, 3. रत्नकल्प मुद्रिका, 4. लक्ष्मी माला।

इन तीनों पदार्थों का अलग-अलग उपयोग है, जहाँ यंत्र साधना का प्रधान तत्व है, वहाँ स्वर्णाकर्षण चक्र कार्य सिद्धि का शक्ति तत्व है और रत्नकल्प मुद्रिका आकस्मिक धन प्राप्ति की शक्ति तत्त्व प्रसन्न लक्ष्मी फल है।

इस साधना में चतुर्थी के दिन अपने पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर यह सामग्री स्थापित करें, साधक स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें तथा स्वर्ण आभूषण धारण कर पूजा सम्पन्न करें, स्त्री साधिका सुन्दर सुनहरी साड़ी तथा अपने सभी आभूषण धारण कर प्रसन्न लक्ष्मी साधना करें।

प्रसन्न लक्ष्मी साधना में देवी का पूजन केवल केसर, इत्र तथा सुगंधित पुष्पों से करें, साधक पूर्व की ओर मुँह कर अपने सामने सामग्री की स्थापना कर तीन घी के दीपक अवश्य लगाएं।

इस साधना में चतुर्थी से पूर्णिमा पर्यन्त 12 दिन नित्य 3 माला मंत्र जप लक्ष्मी माला से करनी आवश्यक है।

मंत्र : **।। ॐ ग्लौं श्रीं धन्नं मह्य धन्नं मे देह्यन्नाधिपतते ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।।**

प्रसन्न लक्ष्मी महायंत्र को मध्य में स्थापित कर बाईं ओर स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र तथा दायीं ओर रत्नकल्प मुद्रिका स्थापित करनी है, प्रत्येक के आगे एक-एक घी का दीपक जलाएं। मंत्र जपते समय दीपक बुझने नहीं चाहिए, प्रतिदिन नये पुष्प लाएं तथा 12 दिन का अनुष्ठान पूर्ण होने पर लक्ष्मी चक्र को पीले कपड़े में सिलाई कर गले अथवा बाँह पर बाँध दें तथा रत्नकल्प मुद्रिका धारण कर लें। प्रसन्न लक्ष्मी कर्मयोगी साधक पर उसकी भक्ति से, उसकी साधना से शीघ्र प्रसन्न होकर वर सहित इच्छित फल प्रदान करती है। प्रसन्न लक्ष्मी साधना की पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए 12 दिन में सवा लाख मंत्र का विधान आवश्यक है।

साधना सामग्री : 660/-

जो शत्रु बाधा एवं तंत्र बाधा में पूर्ण सहायक है

छिन्नमस्ता खड्ग यंत्र

एक दुर्लभ प्रयोग

तंत्र शास्त्र में प्रत्येक यंत्र का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान है, उनकी पद्धति, विधि और प्रयोग के आधार अपने आप में सार्थक और गरिमापूर्ण हैं, किन्तु महाविद्याओं की अलग ही प्रभावपूर्ण स्थिति है। उन्हीं में छिन्नमस्ता खड्ग यंत्र भी है, जो कितना भी प्रबलतम शत्रुपक्ष हो उसे तहस-नहस करने में तथा आमूल रूप से समाप्त करने के लिए अचूक प्रभाव पूर्ण है, जिसके प्रयोग मात्र से ही शत्रुपक्ष विरल एवं हताश होकर अपना समर्पण स्वत: कर देता है।

छिन्नमस्ता खड्ग यंत्र अन्य महाविद्याओं की अपेक्षा अत्यधिक तीक्ष्ण एवं दिव्यतम है, इसे प्रयोग करने से पूर्व यह निर्णय कर लेना चाहिए कि शत्रु को इस प्रयोग के द्वारा किस स्थिति में लाना है।

जब कोई भी उपाय कारगर सिद्ध नहीं हो रहा हो तब यह प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि इस प्रयोग का प्रभाव अचूक होता है, अत: सामान्यत: गुरु अपने शिष्यों को यह प्रयोग विधान नहीं बताते हैं, किन्तु वर्तमान युग प्रत्येक दृष्टिकोण से इतना अधिक दुर्धर्षता युक्त हो गया है, कि पग-पग पर शत्रुओं का सामना हो ही जाता है, आपके जाने-अनजाने भी। ऐसी स्थिति में व्यक्ति तुरन्त निर्णय नहीं ले पाता कि वह क्या करे?

– और तब यदि आपने पहले से ही यह प्रयोग कर लिया हो, तो आपको सुरक्षा तो मिलेगी ही साथ ही जब शत्रु आपके सम्मुख आयेगा तो वह निस्तेज हो जायेगा और फिर विजयश्री आपको मिलेगी ही।

साधना विधान

- यह प्रयोग 26.05.21 को किया जा सकता है या किसी भी मास में अमावस्या की रात्रि में 10 बजे के बाद स्नानादि से निवृत्त हो कर नीले रंग का वस्त्र धारण कर पूजा स्थान में दखिणाभिमुख बैठें।
- अपने सामने नीले अथवा काले रंग से रंगे चावलों से शत्रु का नाम लिखें। इसके ऊपर छिन्नमस्ता खड्ग यंत्र स्थापित करें।
- तेल का दीपक लगायें।
- यंत्र पर दही में काले तिल तथा काली सरसों मिलाकर शत्रु का नाम लेकर सात बार चढ़ायें तथा संकल्प उच्चारण करें।
- पहले 4 माला गुरु मंत्र अवश्य करें।
- निम्न मंत्र का यन्त्र को अपलक दृष्टि से देखते हुए तीस मिनट तक जप करें–

मंत्र

।। ॐ क्रां क्रीं खड्गायै छिन्नमस्तायै फट्।।

- मंत्र जप समाप्त होते ही चावलों सहित यंत्र को किसी काले कपड़े में बांध लें।
- यदि सम्भव हो तो उसी रात्रि को अथवा अगले दिन किसी निर्जन स्थान पर गड्ढा खोदकर गाड़ दें।

साधना सामग्री-300/-

सम्मोहन का आधार है

स्वचेतना साधना

कभी यह कथा मैंने स्वयं पूज्यपाद गुरुदेव के श्रीमुख से ही सुनी थी, कि किसी अवसर पर भगवान ब्रह्मा ने अपने सभी पुत्रों के समक्ष ज्ञान का चिंतन रखा, जिस पर अन्य किसी पुत्र ने तो कोई टिप्पणी नहीं की, किन्तु उनके पुत्रों में से सर्वाधिक तेजस्वी- प्रातःस्मरणीय महर्षि विश्वामित्र ने उठकर कहा, कि वे (ब्रह्मा) इस बात को सिद्ध करें अन्यथा इसका विरोध करने वाले वे (महर्षि विश्वामित्र) ही पहले व्यक्ति होंगे। आगे गुरुदेव ने कहा था, इसी कारणवश ब्रह्मा के सभी पुत्रों में से (जो भगवान ब्रह्मा के शिष्य भी थे) महर्षि विश्वामित्र ही सबसे तेजस्वी बन सके।

यह घटना हमें प्रकारांतर से बहुत कुछ बता जाती है। बता जाती है कि ज्ञान के किसी बिंदु के लिए किस प्रकार से मन में आग्रह होना चाहिए, सत्य के प्रति किस सीमा तक जाकर जूझने का हौसला होना चाहिए और प्राणों में होना चाहिए एक सम्पूर्ण साधकत्व - जो साधना में समझौता करना तो जानता ही न हो। जहां तक गुरु के पक्ष की बात है, वे अपने शिष्य को इसी हेतु तैयार करते हैं। विश्वामित्र को तेजस्वी ही कहा गया, अभद्र या गुरुद्रोही नहीं कहा गया क्योंकि वे माटी का अंग होते हुए भी उससे ऊपर उठने की क्रिया में, जो आ गए थे। लघु से महान बनने की, अंकुर से दृढ वृक्ष बनने और जीव से साक्षात ब्रह्म बनने की ही क्रिया, तो गुरुदेव अपने शिष्यों को सम्पन्न करवाते हैं।

माटी जानती है, कि उसका भाग्य केवल इतना ही है, कि उसे प्रत्येक के पैरों की ठोकर ही खानी पड़ती है। अधिक से अधिक वह किसी कुम्हार के हाथों में पड़कर घड़ा बन सकती है या मूर्ति भी बन सकती है, जिस पर पुष्प चढ़ाए जाएं, किन्तु माटी को केवल संतोष इतने से ही नहीं होता और वह अपने सृजनकर्ता से भी यह कहने का साहस रखती है, कि तू (सृजनकर्ता) मुझे विनष्ट कर क्या कर लेगा। यह तो मेरा साहस है, कि मैं तुझे एक दिन अपने में मिला लूंगी...

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रूंधे मोय,
एक दिन ऐसा आएगा मैं रूंधूंगी तोय।

यह साहस दो बातों से आ सकता है या तो प्रेम की वह पराकाष्ठा हो, कि हम अपने प्रिय को अपने में मिला लेंगे या साधना की वह श्रेष्ठता हो, कि हम अपने प्रिय में जा मिलेंगे।

गुरुदेव ने वर्षों पूर्व एक प्रवचन में इसी तथ्य को सूत्र रूप में इस प्रकार कह कर छोड़ दिया था, कि ब्रह्म में जाकर लीन हो जाना, तो योग की एक मामूली सी बात है। असंभव तो वह क्रिया है, जहां साधक स्वयं में ब्रह्म को आत्मसात करने की प्रक्रिया में आगे बढ़ जाता है, जो

ऐसा करने में समर्थ होता है, वही यथार्थ में गुरुत्व को आत्मसात कर पाता है, अन्यथा तो सब जय-जयकार करने वाले शिष्य या पूज्यपाद गुरुदेव के शब्दों में फोलोवर (अनुकरण करने वाले) होकर ही रह जाते हैं।

सद्‌गुरु का प्रयास केवल भक्त तैयार करने का नहीं होता। भक्ति तो आने वाला समाज स्वतः कर ही लेगा, जब उसके समक्ष कोई प्राणश्चेतना देहरूप में साकार नहीं होगी, किन्तु वर्तमान युग की महत्ता एवं आवश्यकता क्या है? आवश्यकता है तो एकाएक इतने अधिक साधकों के उठ खड़े होने की, जो साधकत्व के गुणों से युक्त तो हों ही, साथ ही जिनमें अपने 'स्व' को पूर्ण विकसित करने की चेतना हो, न कि अपने 'स्व' को विसर्जित कर देने

की। यह गुरुदेव का ही वचन है, कि जिस व्यक्ति में से उसका 'स्व' ही निकल गया, उसमें फिर शेष क्या रह गया? फिर भी यह एक अत्यन्त जटिल धारणा है, क्योंकि जब गुरुदेव का आदेश होगा, कि साधक अपना 'स्व' विकसित करें और तथाकथित साधक अपना अहं विकसित करने लग जायेंगे।

गुरुदेव की भांति वस्त्र धारण करने से या उन्हीं की भांति प्रवचन देने से 'स्व' नहीं विकसित होगा, अपितु अपनी मूल चेतना को पहचान कर उसको विकसित करने से ही 'स्व' विकसित होगा और जब 'स्व' के विकास का क्रम पूर्ण हो जाएगा, तो वह स्वतः 'गुरु' का ही स्वरूप होगा। मैं जानता हूँ कि इस प्रकार की बातों से कपटाचार ही फैलने की सम्भावना अधिक है, किन्तु केवल इसी कारणवश तो ज्ञान के किसी पक्ष को गोपनीय नहीं किया जा सकता। इतना खतरा तो उठाना ही पड़ेगा, जिससे जो गहनता से समझ सकते हैं, वे वंचित न रह जाएं।

हमारे प्रत्येक शास्त्र, प्रत्येक महापुरुष ने यही कहा है, कि आत्मा में एकत्व है अर्थात् आत्मा के स्तर पर जीव में कोई भेद नहीं है, किन्तु यही बात 'स्व' के विषय में नहीं कही जा सकती और सत्य तो यह है, कि इसी 'स्व' की भिन्नता के कारण ही इस प्रकृति में सौंदर्य है। यदि सभी एक ही प्रकृति के हों, तो सौन्दर्य सृजित नहीं होगा। होना तो यह चाहिए, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने 'स्व' को विकसित करे और दूसरे के 'स्व' से जोड़कर उसी प्रकार पूर्णता दे जिस प्रकार काव्य की पूर्णता संगीत से और इनके सम्मिलिन की पूर्णता नृत्य से तथा इन सभी के सम्वेत् प्रभाव की पूर्णता आनंद में होती है।

'स्व' का विकास मूलतः तो एक आध्यात्मिक क्रिया ही है, किन्तु इसके जो व्यावहारिक पक्ष हैं, उनको भी न्यून नहीं कहा जा सकता और जो साधक यह प्रश्न पूछते हैं, कि हमारे साधना करने से समाज का क्या हित होगा, उन्हें तो स्व-विकास की साधना करनी ही चाहिए, फिर तो उत्तर स्वतः उनके मन-मस्तिष्क में स्पष्ट हो ही जाएगा।

कुछ दिन पूर्व मुझे गुजरात यात्रा में सहसा पूज्यपाद गुरुदेव के एक पूर्ण संन्यस्त वयोवृद्ध शिष्य से वार्तालाप करने का सौभाग्य मिला

और प्रसंगवश चर्चा कुण्डलिनी जागरण से आत्मकुण्डलिनी पर होती हुई स्व-विकास तक पहुंच गई। यह उनकी ही उदारता है, जो मुझे साधना का एक नवीन पक्ष मिल सका और जो आत्मकुण्डलिनी जागरण का ही एक चरण या अंग कहा जा सकता है। पाठकों एवं साधकों के लिए मैं इसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर रहा हूँ।

कुण्डलिनी जागरण का विषय हो या आत्मकुण्डलिनी जागरण का, मुख्य साधना तो गुरु साधना ही होती है, शेष उसकी अनुषांगिक साधनाएं ही होती हैं। प्रस्तुत साधना में मूल साधना गुरु साधना ही है, किन्तु उसके लिए कोई निश्चित व दृढ विधान नहीं है अर्थात् यह बाध्यकारी नहीं है, कि साधक सवा लाख या पांच लाख गुरु मंत्र जप करके ही इस साधना में प्रवृत्त हो अपितु महत्व इस बात का है, कि साधक किस साधना से गुरु साधना में संलग्न होता है और इसके पश्चात् ही इस साधना का दूसरा चरण आता है।

द्वितीय चरण के लिए आवश्यक है, कि साधक के पास ताम्रपत्र पर अंकित 'ऊर्ध्व चेतना यंत्र' व 'शुद्ध चैतन्यात्म माला' हो।

यह साधना 23.05.21 को प्रारम्भ करें या फिर ज्येष्ठ माह के पुष्य नक्षत्र को छोड़, किसी भी माह के पुष्य नक्षत्र में प्रारम्भ की जा

गुरुदेव का ही वचन है, कि जिस व्यक्ति में से उसका 'स्व' ही निकल गया, उसमें फिर शेष क्या रह गया? फिर भी यह एक अत्यन्त जटिल धारणा है, क्योंकि जब गुरुदेव का आदेश होगा, कि साधक अपना 'स्व' विकसित करें और तथाकथित साधक अपना अहं विकसित करने लग जायेंगे।

सकती है। रात्रिकालीन इस साधना में साधक को श्वेत वस्त्र, श्वेत आसन ग्रहण करना चाहिए तथा साधना काल में घी का दीपक लगा लेना चाहिए। इस साधना को दो प्रकार से किया जा सकता है। प्रथम तो यह कि साधक प्रतिदिन दो घंटे तक निम्न मंत्र का जप 'चैतन्यात्म माला' से ग्यारह दिनों तक करें, इस प्रकार करने में मंत्र जप की संख्या निश्चित नहीं है। दूसरा प्रकार यह है कि प्रतिदिन इक्यावन मालाएं मंत्र जप पांच दिन तक करें। दोनों ही स्वरूप प्रामाणिक हैं और साधक को इस बात से मन में कोई भ्रम नहीं लाना चाहिए, कि वह किस विधि से साधना करे, जो उसके दैनिक जीवन के अनुरूप हो, वही उसके लिए सर्वोत्तम है। महत्वपूर्ण यह है कि साधक यथासंभव साधना जिस स्थान पर करे, वहां सम्पूर्ण साधना काल में (पांच दिनों तक अथवा ग्यारह दिनों तक) किसी अन्य को न आने दें तथा प्रतिदिन साधना को एक ही निश्चित समय पर प्रारम्भ करें-

मंत्र

।। ॐ श्रीं औं ऊर्ध्व चैतन्यं शक्तिः स्वाहा।।

OM SHREEM OUM URDHAV CHEITANYAM SHAKTIH SWAHA

साधना के पश्चात् साधक अपने अनुभवों को पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष पत्रों द्वारा अवश्य प्रकट करें। प्रस्तुत साधना का एक अन्य विशेष पक्ष यह भी है, कि यह एक उच्च कोटि की स्व-सम्मोहन की साधना भी है, जिसके विषय में पत्रिका के आगामी किसी अंक में विस्तार से प्रकाशित किया जाएगा।

साधना सामग्री- 450/-

वज्रासन

योग शास्त्र में आसनों को सबसे अधिक महत्व दिया गया है, क्योंकि एक ओर जहां ये आसन आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी-जागरण और ध्यान-प्रक्रिया की पूर्णता में सहायक है, वहीं दूसरी ओर पूरे संसार के लोगों ने यह स्वीकार किया है कि स्वास्थ्य को संतुलित बनाये रखने के लिए आसनों की उपयोगिता निर्विवाद रूप से स्वीकार की जा सकती है।

इसी क्रम में इस बार वज्रासन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी दी जा रही है जो साधकों के लिए प्रस्तुत है—

भारतीय योगशास्त्रियों ने यह स्वीकार किया है, कि जिस प्रकार से जीवन को संतुलित करने के लिए पद्मासन की उपयोगिता है, उसी प्रकार शरीर को सुदृढ़ करने और ध्यान एकाग्र करने में वज्रासन सबसे अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी है, इसीलिए इसे 'देवताओं का आसन' कहा गया है।

आसनों के बारे में यह भ्रम है कि आसन केवल पुरुषों के लिए ही उपयोगी है, यह गलत है। पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध, आसन तो सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है, और प्रत्येक व्यक्ति इन आसनों का उपयोग करके अपने शरीर को सन्तुलित एवं स्वस्थ बनाये रख सकता है।

जो मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हैं, जिनके जीवन में परेशानियाँ ज्यादा हों, उनके लिए तो यह आसन विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि कुछ समय तक इस प्रकार के आसन में बैठने पर मानसिक वृत्तियाँ एकाग्र हो जाती हैं, और उसे आनन्द की अनुभूति होने लगती है, धीरे-धीरे उसके मानस में आने वाले व्यर्थ के विचार समाप्त हो जाते हैं, सारा ध्यान एक ही बिन्दु पर एकाग्र हो जाता है।

वस्तुतः इस आसन में दोनों जांघों के आंतरिक भाग को दोनों पिण्डलियों से मिलाकर मुड़े हुए घुटनों को आगे और पैरों के तलवों को पीछे रखकर बैठने से वज्रासन बनता है, इस बात का ध्यान रहे कि ये एड़ियाँ नितम्बों से कुछ आगे निकली हुई हों, और दोनों एड़ियों को मिलाकर नितम्बों को इन पर टिकाकर बैठने से ही सही वज्रासन बनता है।

इस प्रकार बैठकर अपने दाहिने हाथ को दाहिने घुटने पर तथा बायां हाथ बायें घुटने पर रखकर दृष्टि को स्थिर रखते हुए बैठना चाहिए।

वस्तुतः यह आसन अत्यन्त सरल है, और इसमें कुछ भी कठिनाई प्रतीत नहीं होती, परन्तु इस बात का ध्यान रहना चाहिए, कि यह आसन कम से कम एक घण्टे तक का अभ्यासयुक्त बनना चाहिए, अर्थात् वज्रासन में जो साधक एक घण्टे तक बैठा रहता है, वही सफल कहलाता है।

लाभ

1. इसका सबसे बड़ा लाभ भस्त्रिका, कुम्भक, रेचक, सूर्य भेदन आदि प्राणायाम करने में अनुकूलता प्राप्ति है, अर्थात् वज्रासन लगाकर यदि इस प्रकार के प्राणायाम किये जाय तो शीघ्र और निश्चित सफलता प्राप्त होती है।
2. वज्रासन से प्राणों का उत्थान होता है, और कुण्डलिनी जागरण में विशेष रूप से सहायता मिलती है।
3. इस प्रकार के आसन के अभ्यास से पेट के समस्त प्रकार के रोग समाप्त हो जाते हैं।
4. कुछ लोगों को जंघाओं या पैरों में दर्द रहता हो, कुछ लोगों के पैरों में नाड़ियां फूल जाती हैं, जिससे उन्हें तकलीफ होती है, इस प्रकार के रोग में भी यह आसन बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।
5. कुछ समय तक वज्रासन लगाकर बैठने से गैस से संबंधित रोग समाप्त हो जाते हैं, और पेट हलका रहता है।
6. पेट के अन्दर यदि मल जमा होता है, या थोड़ा-थोड़ा दर्द बना रहता है तो इस प्रकार का आसन करने से वह दर्द समाप्त हो जाता है।

वस्तुतः यह आसन अत्यन्त ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है, यह ठीक वैसा ही आसन है, जिस प्रकार से मुसलमान लोग नमाज पढ़ते वक्त बैठते हैं।

प्रत्येक साधक या गृहस्थ को इस प्रकार के आसन का अभ्यास नित्य करना चाहिए और जब यह अभ्यास एक घण्टे का हो जाता है तो इसमें सिद्धि प्राप्त होने लगती है।

ध्यान में पूर्णता के लिए

ध्यान की विवेचना कुछ इस प्रकार से जन मानस में व्याप्त है, कि

प्रत्येक व्यक्ति, जो मानसिक तनाव से ग्रस्त है या

अत्यधिक परेशान है, व्यथित है, वह ध्यान को सम्पन्न करना चाहता है,

क्योंकि ध्यान ही एकमात्र ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने मस्तिष्क को विश्राम देकर, कुछ समय पश्चात् पुनः उत्साहित होकर अपने कार्य में संलग्न हो जाता है। वर्तमान समय में तो ध्यान को मानव स्वास्थ्य के लिए औषधि के रूप में भी स्वीकार किया जाने लगा है।

आप भी ध्यान को और अधिक पूर्णता से सम्पन्न कर सकते हैं और अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रयोग के माध्यम से। गुरू चित्र को सफेद वस्त्र पर स्थापित कर, संक्षिप्त पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से करके घी का दीपक प्रज्वलित कर दें। निम्न मंत्र का 1 माला जप गुरू रहस्य माला से करें-

मंत्र

।। ॐ ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं हूं हूं ॐ ।।

OM AYEIM AYEIM HREEM HREEM HOOM HOOM OM

इस प्रयोग को आप नित्य सम्पन्न करें

गुरू माला – 300/–

मातंगी जयंती – 15.05.21

श्रीमातङ्गी-त्रैलोक्य मंगल-कवचम्

समस्त जगत जिस शक्ति से चलित है, उसी शक्ति के दस स्वरूप हैं ये दस महाविद्याएं, जिनके नौवें क्रम में भगवती मातंगी का नाम आता है। भगवान शिव के मातंग रूप में उनकी अर्द्धांगिनी होने के कारण ही उनकी संज्ञा मातंगी रूप में विख्यात हुई।

कामदेव को शिव ने अपने भीतर तीसरे नेत्र में भस्म भले ही कर दिया हो लेकिन कामदेव रूप, रस, दृश्य, भोग, इच्छा . . . के रूप में आज भी कलियुग में पूर्णरूप से विद्यमान है क्योंकि जीवन के चतुर्वर्ग ने धर्म और अर्थ के बाद काम को स्थान दिया गया है, इसके बिना सृष्टि चल नहीं सकती हैं।

काम की अधिष्ठात्री देवी है मातंगी

रूप, रस, यौवन, विलास, ऐश्वर्य, गृहस्थ सुख एवं भोग को प्रदान करने वाली दस महाविद्याओं में श्रेष्ठ मातंगी साधना करना जीवन के भौतिक पक्ष को पूर्ण कर देना है। इस कवचम के पाठ को सम्पन्न करने से एक तीर से कई निशाने लगाने जैसा है . . .

।। पूर्व-पीठिका-श्रीदेव्युवाच।।

साधु साधु महा-देव ! कथयस्व सुरेश्वरं !
मातंगी-कवचं दिव्यं, सर्व-सिद्धि-करं नृणाम्।।1।।

।। ईश्वर उवाच ।।

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, मातंगी-कवचं शुभम्।
गोपनीयं महा-देवि! मौनी जापं समाचरेत्।।2।।

।। मूल पाठ ।।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीमातङ्गी-कवचस्य श्रीदक्षिणा-मूर्ति: ऋषि: विराट् छन्द:, श्रीमातंगी देवता, चतुर्वर्ग-सिद्धये पाठे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास: श्रीदक्षिणा-मूर्ति-ऋषये नम: शिरसि। विराट - छन्दसे नम: मुखे। श्रीमातङ्गी-देवतायै नम: हृदि। चतुर्वर्ग-सिद्धये पाठे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे।

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु, भुवनेश्वरीतु चक्षुषी।
तोडला कर्ण युगलं, त्रिपुरा वदनं मम।।1।।

पातु कण्ठे महा-माया, हृदि माहेश्वरी तथा।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु, गुदे कामेश्वरी मम।।2।।

ऊरु द्वये तथा चण्डी, जङ्घायां च रति-प्रिया।
महा-माया पद युग्मे, सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी।।3।।

अङ्ग-प्रत्यङ्गकं चैव, सदा रक्षतु वैष्णवी।
ब्रह्म-रन्ध्रे सदा रक्षेत्, मातङ्गी नाम-संस्थिता।।4।।

ललाटे रक्षयेन्नित्यं, महा-पिशाचिनीति च।
नेत्राभ्यां सुमुखी-रक्षेद्, देवी रक्षते् तु नासिका।।5।।

महा-पिशाचिनी, पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा।
लज्जा रक्षतु मां दन्ते, चोष्ठौ सम्मार्जनी-करी।।6।।

चिबुके कण्ठ-देशे च, ठंकार-त्रितयं पुनः।
स-विसर्गं महा-देवि! हृदयं पातु सर्वदा।।7।।

नाभिं रक्षतु मां लोला, कालिकाऽवतु लोचने।
उदरे पातु चामुण्डा, लिङ्गे कात्यायनी तथा।।8।।

उग्र-तारा गुदे पातु, पादौ रक्षतु चाम्बिका।
भुजौ रक्षतु शर्वाणी, हृदयं चण्ड-भूषणा।।9।।

जिह्वायां मातृका रक्षेत्, पूर्वे रक्षतु पुष्टिका।
विजया दक्षिणे पातु, मेधा रक्षतु वारुणे।।10।।

नैर्ऋतयां श्रद्धया रक्षेद्, वायव्यां पातु लक्ष्मणा।
ऐशान्यं रक्षयेद् देवी, मातङ्गी शुभ-कारिणी।।11।।

सुवेशा चाग्नेये रक्षेद्, बगला पातु चोत्तरे।
ऊर्ध्वं पातु महा-देवी, देवानां हित-कारिणी।।12।।

पातले पातु मां नित्यं, विशनी विश्व-रूपिणी।
प्रणवं च ततो माया, काम-बीजं च कूर्चकम्।।13।।

मातङ्गिनी ङे-युतास्त्रं वह्नि-जायाऽवधिर्मनुः।
शारदेकादश-वर्णा सा, सर्वत्र पातु मां सदा।।14।।

।। फल-श्रुति।।

इति ते कथितं देवि! गुह्याद्-गुह्य-तरं परम्।
त्रैलोक्य-मोहनं नाम, कवचं देव-दुर्लभम्।।1।।

य इदं प्रपठेन्नित्यं, जायते सम्पदालयः।
परमैश्वर्यमतुलं, प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।2।।

गुरमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद् यदि।
ऐश्वर्यं सु-कवित्यं च, वाक्-सिद्धिं लभते ध्रुवम्।।3।।

नित्यं तस्य तु मातङ्गी, महिला-मंगलम् चरेत्।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, ये देवाः सुर-सत्तमाः।।4।।

ब्रह्म-राक्षस, वेताला, ग्रहाद्या भूत-जातयः।
तं दृष्ट्वा साधकं देवि! लज्जा-युक्ता भवन्ति ते।। 5।।

कवचं धारयेद् यस्तु, सर्व-सिद्धिं लभेद् ध्रुवम्।
राजानोऽपि च दासत्वं, षट्-कर्माणि च साधयेत्।
सिद्धो भवति सर्वत्र, किमन्यैर्बहु-भाषितैः।।6।।

इदं कवचज्ञात्वा, मातङ्गी यो भजेन्नरः।
अल्पायुर्निर्धनो मूर्खो, भवत्येव न संशयः।।7।।

गुरौ भक्तिः सदा कार्या, कवचे च दृढा मतिः।
तस्मै मातङ्गिनी देवी, सर्व-सिद्धिं प्रयच्छति।।8।।

।। नन्द्यावर्ते उत्तर-खण्डे श्रीमातङ्गी-त्रैलोक्य-मंङ्गल कवचं सम्पूर्णतम्!।।

हिन्दी रूपान्तरण

हे देवों के ईश्वर महा-देव! मनुष्यों के लिए सभी सिद्धियां देने वाले दिव्य मातङ्गी-कवच को कहिए।

ईश्वर ने कहा - हे देवि! सुनो। कल्याण-कारी मातङ्गी कवच को कहूँगा। हे महा-देवि! यह गुप्त रखने योग्य है। मौन होकर इसका जप करना चाहिए।

।। मूल पाठ ।।

मेरे सिर की रक्षा 'मातङ्गी', दोनों आँखों की 'भुवनेश्वरी', दोनों कानों की 'तोड़ला' और मुख की रक्षा 'त्रिपुरा' करें।।1।।

मेरे कण्ठ में 'महा-माया', हृदय में 'महेश्वरी', दोनों पार्श्वों (बगलों) में 'त्रिपुरा' और गुदा में 'कामेश्वरी' रक्षा करें।।2।।

दोनों उरुओं में 'चण्डी', दोनों जांघों में 'रति-प्रिया', दोनों पैरों में 'महा-माया' और सभी अङ्गों में 'कुलेश्वरी' तथा अङ्ग-प्रत्यङ्ग में सदा 'वैष्णवी' रक्षा करें। ब्रह्म-रन्ध्र में 'मातङ्गी-नाम-संस्थिता' सदा रक्षा करें।।3-4।।

ललाट में 'महा-पिशाचिनी' प्रति-दिन रक्षा करें। दोनों नेत्रों में 'सुमुखी' रक्षा करें और 'देवी' नासिका की रक्षा करें।।5।।

'महा-पिशाचिनी' पीछे और मुख के सामने सदा रक्षा करें। दाँतों में 'लज्जा' मेरी रक्षा करें और दोनों ओठों में 'सम्मार्जनी-करी' रक्षा करें।।6।।

हे महा-देवि! चिबुक (ठोड़ी), कण्ठ-स्थान और हृदय में विसर्ग-सहित-ठंकार-त्रितय' (ठः ठः ठः) सदा रक्षा करें।।7।।

मेरी नाभि की रक्षा 'लोला' करें। आँखों में 'कालिका' रक्षा करें। उदर (पेट) में 'चामुण्डा' और लिङ्ग में 'कात्यायनी' रक्षा करें।8।।

गुदा में 'उग्र-तारा' और दोनों पैरों में 'अम्बिका' रक्षा करें। दोनों भुजाओं में 'शर्वाणी' और हृदय में 'चण्ड-भूषणा' रक्षा करें।।9।।

जिह्वा में 'मातृका' रक्षा करें, पूर्व में 'पुष्टिका' रक्षा करें, दक्षिण में 'विजया' रक्षा करें, पश्चिम में 'मेधा' रक्षा करें।।10।।

नैऋत्य-कोण में 'श्रद्धा' रक्षा करें, वायव्य कोण में 'लक्ष्मणा' रक्षा करें, ईशान कोण में मङ्गल-कारिणी 'देवी मातङ्गी' रक्षा करें।

आग्नेय-कोण में 'सुवेशा' रक्षा करें, उत्तर में बगला-मुखी रक्षा करें, उर्ध्व में देवों की कल्याण-कारिणी 'महा-देवी' रक्षा करें।।12।।

पाताल में विश्व-रूपिणी 'विशानी' मेरी प्रति रक्षा करें। प्रणव अर्थात् 'ॐ', फिर 'माया' अर्थात् ह्रीं, 'काम-बीज' अर्थात् 'क्लीं' और 'कूर्चक' अर्थात् 'हूं', 'ङे-युता' अर्थात् चतुर्थी विभक्ति से युक्त 'मातङ्गिनी' अर्थात् 'मातङ्गिन्यै', 'अस्त्र' अर्थात् 'फट्' और अंत में 'वह्नि-जाया' अर्थात् 'स्वाहा' - इस प्रकार साढे ग्यारह अक्षरों वाली वह देवी - 'ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातङ्गिन्यै फट् स्वाहा' सदा सभी स्थानों में मेरी रक्षा करें।।13-14।।

।। फल-श्रुति।।

हे देवि! गुप्त से अधिक गुप्त यह देवों को भी कठिनाई से प्राप्त होने वाला 'त्रैलोक्य-मोहन' नामक कवच मैंने तुमसे कहा है।।1।।

जो इसे नित्य पढ़ता है, इसमें संदेह नहीं।।2।।

गुरु-देव की विधिवत् पूजा कर यदि इस कवच का पाठ करें, तो निश्चय ही ऐश्वर्य, सुन्दर कविता करने की शक्ति और वाक्-सिद्धि को पा लेता है।।3।।

हे देवि! उस पाठ-कर्त्ता को मातङ्गी सदा-स्त्री सुख प्रदान करती हैं। ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तथा श्रेष्ठ देव-गण, ब्रह्म-राक्षस, वेताल, ग्रह आदि भूत-जातियां उस साधक को देखकर लज्जित हो जाते हैं।।4-5।।

जो इस 'कवच' को धारण करता है, वह सभी सिद्धियों को निश्चय ही प्राप्त करता है। राज भोग भी उसके सेवक बन जाते हैं और वह षट्-कर्मों को सिद्ध कर लेता है। सभी स्थानों में वह सिद्धि प्राप्त करता है। अन्य बहुत प्रशंसा करने से क्या!।।6।।

इस 'कवच' को जाने बिना जो मनुष्य 'मातङ्गी' की उपासना करता है, वह मूर्ख अल्पायु और निर्धन होता है, इसमें संदेह नहीं।।7।।

सदा गुरु देव में भक्ति और 'कवच' पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिए। उस साधक को देवी मातङ्गिनी सभी सिद्धियाँ प्रदान करती हैं।।8।।

वृक्ष का एक भाग जोरों से हिल रहा था, बाकी भाग शांत था। बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना थी। वृक्ष दीवार की तरह खड़ा पर उसके तने का एक भाग हिल रहा था। उसने आस-पास दृष्टि दौड़ायी पर कोई दिखाई नहीं पड़ा। वापस अपने स्थान पर आ बैठा और गौर से उस वृक्ष को देखने लगा, एक डाल स्थायी होती, तो दूसरी हिलती। उस वृक्ष पर कोई प्राणी दिखायी नहीं दिया।

शाम घिर आयी थी। मोहन भण्डारी तीन साल बाद आज गाँव लौट रहा था। उसके चेहरे पर मधुर मुस्कान उभर रही थी, एक हाथ में ब्रीफकेस दूसरे हाथ में हैण्ड बैग लिये। थकान का अनुभव होने पर वह एक जलपान की दुकान पर रुक गया; वहाँ चाय पी, तो थोड़ी राहत महसूस हुई। लगभग एक किलोमीटर पैदल रास्ते का सफर कर चुका था मोहन भण्डारी। संध्या ढल गई थी। लगभग दो किलोमीटर और सफर करना बाकी था। उस जलपान गृह के बगल में एक होटल था।

मोहन भण्डारी के पूछने पर सोफर ने कहा - ''हो तो इसी गाँव के पर तुम बड़े दिन बाद शहर से लौटे हो। शायद इस गाँव के बदलते रंग को तुमने देखा नहीं, बातों-बातों में काफी अंधेरा हो गया है।''

''माफ करें, मैं आपकी बातों को समझ नहीं पाया हूँ'' - मोहन भण्डारी ने शुष्क स्वर में कहा।

''अरे बिटवा! आज कल संग्रामपुर गाँव की हालत बड़ी नाजुक है। कल की ही बात ले लो . . .एक रिक्शा वाले की पत्नी की किसी ने हत्या कर दी। रिक्शा वालों ने हड़ताल कर दिया है, सुना हूँ रिक्शा वालों ने थाना पर धरना देना चाहे थे, तो थानाप्रभारी ने लाठियों से पीटने के आदेश दिये। आज के माहौल में गरीबों की फरियाद कौन सुनता है। पता नहीं कहाँ से डकैत आते हैं, सारा सामान लूट कर चले जाते हैं, किसी ने विरोध किया, तो उसकी हत्या कर दी जाती है। फिर बीच में घना जंगल पड़ता है'' - कलाई घड़ी देखकर उसने फिर कहा - ''मेरी मानो आज की रात होटल में ही गुजार लो, सुबह घर की ओर प्रस्थान करना। रात के आठ बज चुके हैं।

''बेटा! रामू काका सही कह रहा है, कभी-कभी बड़ों की बात वरदान साबित होती है'' - एक बूढ़े ने कहा।

रात गुजारने के सिवा उसके पास दूसरा रास्ता नहीं था। कमरे में वह बेचैन सा घूमने लगा, फिर सिर झटक कर वह बरामदे में आया। बरामदे के समीप नीम का बहुत पुराना वृक्ष था।

अचानक मोहन भण्डारी की दृष्टि नीम के पेड़ पर पड़ी, उसके रोंगटे खड़े हो गए। वृक्ष का एक भाग जोरों से हिल रहा था, बाकी भाग शांत था। बड़ी ही आश्चर्यजनक घटना थी। वृक्ष दीवार की तरह खड़ा पर उसके तने का एक भाग हिल रहा था। उसने आस-पास दृष्टि दौड़ायी पर कोई दिखाई नहीं पड़ा। वापस अपने स्थान पर आ बैठा और गौर से उस वृक्ष को देखने लगा, एक डाल स्थायी होती, तो दूसरी हिलती। उस वृक्ष पर कोई प्राणी दिखायी नहीं दिया। बड़े झोंके के साथ बदलती हुई डाल हिल रही थी, जैसे कोई वृक्ष पर चढ़कर झूम रहा हो।

प्रेत का बड़ा ही विचित्र रूप था, आँखें बड़ी-बड़ी, केश लम्बे, लम्बे-लम्बे दाँत, कमर के नीचे का भाग पतला, छाती के भाग की हड्डी एक ओर निकली तो दूसरी ओर धंसी हुई।

रात डरावनी सी लग रही थी। कलाई घड़ी पर दृष्टि डाला, तो रात के ग्यारह बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वह फिर कमरे के लिए बरामदे से वापस मुड़ा की उसकी निगाह दो लोगों पर पड़ी। इतनी रात में ये दो लोग वहाँ क्या कर रहे हैं? उसने जरा गौर किया, तो उसे एहसास हुआ, कि दो लोग जो नीम के पेड़ के नीचे बैठे बातें कर रहे हैं, उनमें एक लड़की दुल्हिन की पोशाक में है तथा दूसरा लड़का दूल्हे की पोशाक में है।

दृष्टि फेरा, तो देखा डाल पर दो व्यक्ति खेल रहे हैं, कभी उस डाल पर तो कभी उस डाल पर। दोनों का चेहरा जोरों से हंसने जैसा लग रहा था, पर स्वर सुनायी नहीं दे रहा था। फिर मुड़ा तो एक नौजवान प्रतीक्षा की मुद्रा में बैठा, बेचैनी महसूस कर रहा था।

भण्डारी के मन में तरह-तरह के विचार आ-जा रहे थे, क्योंकि उसने बचपन में भूत-प्रेत की कहानियां सुन-रखी थीं, लेकिन देखा नहीं था। शायद! वे सभी प्रेतात्मायें हैं, क्योंकि सभी लोगों के पैर दिखायी नहीं पड़ रहे थे, सिर्फ तन दिखायी दे रहा था।

मोहन घबरा रहा था, गला सूखने लगा।

तभी होटल के एक कमरे से एक लड़की निकली और वह उस पेड़ की ओर चली गयी। होटल का सारा स्टाफ सो चुका था। मोहन भण्डारी के चेहरे से पसीना बह आया। आँखें निकल गयीं, शरीर कांपने लगा और बड़ी मुश्किल से उसने अपने आपको संभाला, हिम्मत कर एक बार फिर उसने दृष्टि दौड़ायी। थोड़ी दूर पर ही एक तांत्रिक साधना में बैठा मंत्रों का उच्चारण कर रहा था। वह कुछ सोचकर कमरे से बाहर निकला। बड़े ही नाजुक दौर से मोहन भण्डारी गुजर रहा था, क्योंकि वह अपने जीवन में पहली बार ऐसे रहस्यमय दृश्य को देख रहा था।

प्रेत आत्माओं की लीला का अद्‌भुत दृश्य।

साधना की सिद्धि में तल्लीन तांत्रिक - बड़ी-बड़ी दाढ़ी, लम्बे केश, काला वस्त्र पहने हुए, गले में रुद्राक्ष की माला . . . रात के शांत डरावने माहौल में भण्डारी मुश्किल से हिम्मत जुटा पाया। पेड़ के नीचे खड़े तांत्रिक के कारनामों को विस्फारित निगाहों से देखता रहा।

दूसरी तरफ प्रेतात्माओं का एक अलग खेल।

तांत्रिक के सामने एक दीपक जल रहा था। दीपक की रोशनी तेज हो गई। तांत्रिक का शरीर पसीने से भीगने लगा, सामने एक प्रेत प्रत्यक्ष दिखायी पड़ा। तांत्रिक ने आँखें खोली फिर बातें शुरु कीं, प्रेत का बड़ा ही विचित्र रूप था, आँखें बड़ी-बड़ी, केश लम्बे, लम्बे-लम्बे दाँत, कमर के नीचे का भाग पतला, छाती के भाग की हड्डी एक ओर निकली तो दूसरी ओर धंसी हुई।

प्रेत विलीन हो गया।
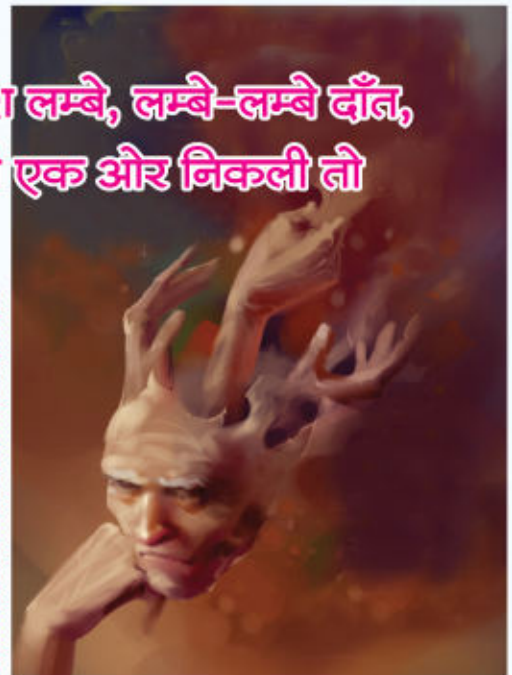
तांत्रिक खुशी से झूम उठा।

मोहन भण्डारी के लिए इससे अच्छा मौका शायद फिर न मिले, यह सोचकर वह रूमाल से पसीना पोंछकर तेजी से तांत्रिक के चरण पर गिरते हुए बोला - 'बाबा! एक रहस्य मुझे बताइये, हम जानते हैं आप हमारे प्रति कोई क्रोध नहीं करेंगे।'

तांत्रिक मोहन भण्डारी को देखकर चौंक गये।

दृष्टि फेर कर शंकित स्वर में बोले - ''कौन हो तुम? इतनी रात को क्या करने आये हो यहाँ?''

''बाबा, मेरा नाम मोहन भण्डारी है। मैं संग्रामपुर गाँव का निवासी हूँ। मेरे पिता का नाम वंशीधर भण्डारी है, हम बम्बई से तीन साल बाद . . .''

''तू मोहन, वंशीधर भण्डारी का बेटा है . . .?'' आँखें निकालकर शंकित स्वर में उसने कहा।

''हाँ''

''अरे, तूने मुझे पहचाना नहीं!''

''माफ कीजियेगा, मैंने आपको पहचाना नहीं।''

''हम . . . तुम्हारे . . . मामा. . .''

''लेकिन . . .?''

''हाँ, भांजे, यह सत्य है, कि हम तांत्रिक बन गये।''

''परंतु आप नौकरी छोड़कर तांत्रिक क्यों बन गये?'' - भण्डारी ने कहा।

''घबराओ नहीं भांजे, यहाँ कोई भूत-

गौर से उस वृक्ष को देखने लगा, एक डाल स्थायी होती, तो दूसरी हिलती। उस वृक्ष पर कोई प्राणी दिखायी नहीं दिया। बड़े झोंके के साथ बदलती हुई डाल हिल रही थी, जैसे कोई वृक्ष पर चढ़कर झूम रहा हो।

प्रेत तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा, क्योंकि हमें सिद्धि मिल गयी है। आओ हम तुम्हें . . .''

''मामा मेरा सामान होटल में हैं, आप के चक्कर में हम पड़ गये तो . . . वह लड़की कमरे में चली गयी होगी, तो हम कैसे अंदर जायेंगे. . .?''

''तुम किस लड़की की बात कर रहे हो . . .?''

''मामा एक लड़की होटल से अकेले निकल कर नीम के पेड़ की ओर गयी थी। हम उसके पीछे निकले और आप तक आ पहुँचे। मामा! एक बात मेरी समझ में नहीं आयी, कि वह लड़की बाहर निकली, तो दरवाजा स्वयं क्यों बंद हो गया।''

''तू जानना चाहता है, कि हम तांत्रिक क्यों बनें?''

''यह बात उन दिनों की है जब हम तुम्हारी मामी और मुन्ना के साथ पैसे लेने बैंक गये थे। डाकुओं ने बैंक में हमला कर दिया। मैंने विरोध किया, तो उसने मेरी आँखों के सामने तुम्हारी मामी और मुन्ना को गोली मार दी, उसी समय मैंने सौगन्ध खायी उन जालिमों को तड़पा-तड़पाकर मारूँगा और तीसरे दिन गुरु की तलाश में निकल पड़ा।

गुरु से दीक्षा लेकर मैंने तपस्या की और अब मैं एक तांत्रिक बन गया हूँ। समाज सेवा के साथ मेरा लक्ष्य गरीबों का कल्याण करना भी है, क्योंकि तंत्र विद्या आज भी श्रेष्ठ विज्ञान है।

''क्यों. . .?''

''क्योंकि वह लड़का उसका अनुभवी नहीं है।''

''- तो फिर वह अनुभवी कैसे बनेगा?''

''स्वाभाविक है, उसे ड्राईविंग सीखनी होगी।''

''ठीक इसी प्रकार यह मंत्र, तंत्र विद्या है, बिना गुरु से दीक्षा लिए बगैर कोई भी साधना करना हानिकारक साबित हो सकता है।''

''मान गया मैं आपको मामा, अब आप भी किसी के भी गुरु बन सकते हैं।''

''नहीं बेटा, क्योंकि गुरु बनना तो आसान है, पर गुरु बन कर किसी को दीक्षा देना बहुत कठिन है, इसलिये हमारे बस की बात नहीं गुरु बनना। हाँ, हमें पूरा विश्वास है, कि हमारी तंत्र विद्या असफल नहीं होगी।

''ठीक है मामा, मेरे पापा, माँ और भाई कैसे है?''

''मालूम हुआ है, सब कुशल हैं। तुम्हारे पापा का स्वास्थ्य कुछ दिनों से ठीक नहीं है, पिछले सात दिनों से दुकान नहीं खुली।''

बातों-बातों में दोनों होटल के मुख्य द्वार पर आ पहुँचे। दरवाजा बंद था। रात के दो बज रहे थे। मोहन भण्डारी ने दरवाजे की ओर इशारा किया, तो मामा ने मंत्रों से दरवाजा खोल दिया। दोनों कमरे में प्रविष्ट हो गये। सुबह होने पर मामा और भण्डारी गाँव की ओर चल पड़े।

तब तक उन्होंने सारा सामान समेटकर एक झोली में रख लिया, झोली कंधे पर टांग कर होटल की ओर जाते हुए कहा - ''देखो बेटा! वह लड़की किसी लड़के से प्रेम करती होगी, जिसकी मृत्यु अल्पायु में हो जाती है एक्सीडेंट या गोली से. . . हो सकता है उसका प्रेमी इसी हादसे का शिकार हुआ हो . . . तुमने उसे टोका तो नहीं न . . .!''

''नहीं।''

''बुद्धिमानी का काम किया, वरना यह तुम्हारी बर्बादी का कारण बन जाती, तुम्हारी जान भी ले सकती थी।''

''मामा, प्रेत ताकतवर होते हैं...।''

''हाँ भांजे!''

वे दोनों अब होटल के काफी करीब आ गये थे।

''क्या, किसी देवी या तंत्र के लिए गुरु से दीक्षा लेना जरूरी है या किताबों से भी तंत्र की सिद्धि मिल सकती है?'' - बड़े ही शोख अंदाज में भण्डारी ने पूछा।

''गुरु बिना ज्ञान कहाँ से होई - हर शब्द तर्क में छिपा हुआ है गुरु रहस्य, बिना गुरु के कोई भी काम अधूरा होता है जैसे उदाहरण ले लो एक अनभिज्ञ लड़के को अगर कोई गाड़ी, कार या जीप चलाने को दोगे, तो क्या वह कार या जीप चला लेगा।''

''बिल्कुल नहीं।''

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मृ्ल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- शिष्य बनने की क्रिया एक बूंद से समुद्र बन जाने की होती है। जिस प्रकार एक वर्षा की बूंद नदी बन कर सागर से मिलने को तड़पती हुई आगे बढ़ती है उसी प्रकार जब व्यक्ति गुरु में समाहित होने के लिए तत्पर होता है तभी वह शिष्य बन पाता है।
- बूँद का और कुछ ध्येय और कुछ चिंतन होता ही नहीं। उसका एक ही लक्ष्य, एक ही चिंतन, एक ही विचार होता है कि कैसे उमड़ कर वह आगे बढ़े, नदी बन कर बहे और सागर में मिल जाए।
- जब व्यक्ति इसी प्रकार एक ही लक्ष्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ता है तो वह शिष्यता की ऊंचाइयों को स्पर्श कर पाता है।
- बूँद जब नदी बनती है तो यह इतने वेग के साथ आगे बढ़ती है कि मार्ग में अगर गांव हो तो उन्हें भी बहा ले जाती है। कोई भी मार्ग का अवरोध उसे रोक नहीं पाता।
- व्यक्ति भी जब सभी अवरोधों को पार करता हुआ, अड़चनों और बाधाओं की परवाह किए बिना गुरु से एकाकार होने की ओर अग्रसर होता है तभी वह शिष्यता प्राप्त कर पाता है।
- बूँद जब नदी में जाकर सागर से मिलती है तो उसके आनंद का ठिकाना नहीं रहता। शिष्य भी जब गुरु के चरणों में समाहित होता है तो उसके आनंद का ठिकाना नहीं होता। शिष्य के लिए गुरु चरणों से पावन कोई अन्य स्थान नहीं, कोई तीर्थ नहीं।
- बूँद जब सूर्य के ताप से ऊपर उठती है और बादल बनती है तो उसमें एक तड़प पैदा हो जाती है कि वह कैसे सागर से मिले, और जब तक ऐसा होता नहीं यह तड़प बढ़ती ही जाती है। उसी प्रकार शिष्य गुरु से दूर होकर तड़पता रहता है कि वह कब गुरु से फिर मिलेगा, कब वह गुरु से एकाकार हो पाएगा।
- शिष्य रूपी बूँद का एकमात्र धर्म और कर्तव्य है, गुरु रूपी सागर में एकाकार हो जाना और इसके लिए शिष्य को सभी अड़चनों की परवाह किए बिना सदैव अग्रसर रहना चाहिए।

गुरु वाणी

- दीक्षा के माध्यम से भोग तथा मोक्ष दोनों की प्राप्ति संभव है।
- दीक्षा का उद्देश्य जीवन को ऊंचाई पर उठाना है, जो कि प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए और जीवन में यदि सार्थकता प्राप्त नहीं कर सकें तो जीवन का कोई अर्थ नहीं।
- गुरु ही ऐसा व्यक्ति है जो निःस्वार्थ भाव से शिष्य के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास की ओर ध्यान देते हैं। वे उसके विकारों के हलाहल को पीकर उसे जीवन में प्रसन्नता, आनंद, आध्यात्मिक उच्चता तथा सफलता प्रदान करते हैं।
- गुरु तो हर क्षण सब कुछ लुटाने, सब कुछ दे देने के लिए तत्पर हैं, यह तो शिष्य पर निर्भर है कि वह कितना ग्रहणशील है। जितना वह खुला होगा, ग्रहणशील होगा, समर्पण युक्त होगा उतनी ही गुरु की चैतन्यता उसमें प्रवेश कर पाएगी।
- अगर व्यक्ति में या शिष्य में समर्पण नहीं है, प्रेम नहीं है तो दीक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता। यह इतना संवेदनशील आदान प्रदान है, जो कि दो प्रेमियों के बीच ही घटित हो सकता है और गुरु शिष्य के संबंध का आधार प्रेम ही तो है।
- शिष्य को गुरु से ज्ञान प्राप्त करने, दीक्षा प्राप्त करने के लिए स्वयं ही तत्पर रहना चाहिए। जब भी गुरु का सान्निध्य प्राप्त हो वह गुरु से दीक्षा के लिए प्रार्थना अवश्य करे।
- ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जब मात्र गुरु की समीपता से आत्मोपलब्धि हो गई। परंतु ऐसा तब होता है जब शिष्य अहंकार रहित हो, बुद्धि से पूर्ण चैतन्य हो और आत्मज्ञान प्राप्त कर लेना ही जिसके जीवन का मुख्य ध्येय हो।
- जब व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से गुरु सेवा करता है तो उसके और गुरु के बीच ब्रिज बनता है, एक दूसरे के निकट आने की क्रिया बनती है, पूर्ण रूप से समाहित होने की क्रिया बनती है और ऐसा होने पर गुरु अपनी चैतन्यता शिष्य में उड़ेल देता है।
- सामान्य तौर पर गुरु और शिष्य के बीच एक बहुत बड़ा गैप है। जब तक वह दूर नहीं हो जाता तब तक शिष्य आध्यात्मिक उच्चता की स्थिति तक नहीं पहुंच सकता और यह गैप, यह दूरी कम करने के साधन हैं केवल दीक्षा और गुरु सेवा।
- केवल शिष्य के कान में मंत्र फूंक देना ही दीक्षा नहीं होती। शिष्य के जीवन के पाप, ताप को समाप्त कर उसे बंधन मुक्त करना, जन्म मृत्यु के चक्र से छुड़ाना ही दीक्षा है। नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम बनाने की क्रिया दीक्षा है।
- दीक्षा परमेश्वर की कृपा का साकार स्वरूप है, जो कि जीव को प्राप्त होती है गुरु के माध्यम से हृदय को शुद्ध, निर्मल, पवित्र एवं दिव्य बनाना तथा गुरु के साथ जुड़ने की क्रिया को ही दीक्षा कहा गया है।
- मैं जो भी तुम्हें साधनाएं देता हूं, मंत्र देता हूं, प्रयोग देता हूं वे पूर्णतः प्रामाणिक होते हैं, स्वयं सिद्ध करके, उनकी प्रामाणिकता को टेस्ट करके ही मैं तुम्हें देता हूं। कोई भी साधना या मंत्र असफल हो जाए ऐसा संभव ही नहीं।
- और अगर आपको असफलता मिलती है, तो उसमें दोष आपका है, मंत्र का नहीं है, गुरु का नहीं है। आपकी आस्था दृढ़ नहीं है। आपका विश्वास कच्चा है और आपका अपने शरीर पर एवं विकारों पर नियंत्रण नहीं है तो कैसे आपको साधना में सफलता प्राप्त होगी।

शनि जयंती
10.06.21

मानव पर शनि की दशा

शनि जहाँ दिवालियेपन का कारण बनता है, वहीं यह ऐशो-आराम की जिन्दगी भी प्रदान करता है....................

मानव पर ग्रहों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, उन ग्रहों में भी शनि एक प्रबल ग्रह माना गया है। शनि ग्रह प्रधान व्यक्ति उच्च श्रेणी के दिमागी कार्य किया करते हैं। शनि प्रधान व्यक्ति मैकेनिक, डॉक्टर, इंजीनियर, लेखक, संगीतकार, ज्योतिषी, राजनेता, तांत्रिक, अभिनेता, पुलिस तथा अच्छे शासक हुआ करते हैं। ऐसे व्यक्ति बड़े उद्योगपति तथा खतरनाक, विस्फोटक सामग्री के निर्माणकर्ता हुआ करते हैं।

शनि प्रधान व्यक्ति खतरों से खेलने में अन्य ग्रह वाले व्यक्तियों से आगे रहते हैं, ये हिम्मत के धनी होते हैं,

किसी के अधीन होकर काम करना इन्हें पसंद नहीं, थोड़ी सी असफलता में चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं, लेकिन उन परिस्थितियों से आखिरी दम तक लड़ने की कोशिश करते हैं। इनका बचपन कष्टदायक होता है, पत्नी तो अच्छी मिलती है, फिर भी इनके मन को संतुष्टि नहीं मिल पाती, दूसरे की पत्नी की तारीफ करना इनकी आदत सी होती है, स्वास्थ्य सामान्य होता है और ये हमेशा चिंतित रहते हैं।

ऐसे व्यक्तियों की प्रेमिकाओं की संख्या एक से अधिक होती है, ये बातें काफी बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं, बातों में किसी को भी अपने सामने टिकने नहीं देते। शनि की दशा अगर सामान्य रही, तो ऐसे व्यक्ति नशे की ओर झुक जाते हैं, सफलता इनके कदम चूमती है, मांस-मछली और अण्डे खाने के ये शौकीन होते हैं। शनि की अंतिम अवस्था में ऐसे व्यक्ति खाक से उठकर आसमान में स्थापित हो जाया करते हैं।

प्रारम्भिक दौर

शनि की दशा के प्रारम्भिक दौर में ऐसे व्यक्ति के हाथ में पैसा 'आया राम, गया राम' ही रहता है, आमदनी से खर्च अधिक होने लगता है, घर-परिवार में मतभेद हो जाता है, पुत्रों की मां-बाप से नहीं बनती, छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव हो जाता है, रिश्तों में दरार पड़ जाती है। प्रारम्भिक दौर में ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा होता है, उसकी आमदनी भी अच्छी होती है, रोजगार पूर्ण रूप से सफल रहता है, परन्तु खर्च भी इस क्रम में बढ़ जाता है। मित्रों की संख्या अधिक होती है तथा कई प्रशासनिक स्तर के अधिकारियों से सम्पर्क बन जाता है। इस दौर में गैरकानूनी ढंग से भी आय होती है।

द्वितीय दौर

द्वितीय दौर में शनि व्यक्ति को खर्चीला बना देता है, पैसा बेवजह खर्च होने लगता है, परिवार के सदस्यों में कटुता बन जाती है, घर में कलह का कोई न कोई सूत्र हमेशा मौजूद रहता है; मित्रों के ऊपर भी बेवजह पैसा खर्च होता है, व्यापार के प्रति मोह कुछ कम रहता है, समय पर काम नहीं बनता तथा खाने-पीने के मामले में भी कोई नियम नहीं रह जाता, विभागीय तनाव भी बना रहता है, तबादले आदि की समस्या से मन खिन्न रहता है, मेहनत पूर्वक अच्छे कार्य करने पर भी अधिकारी व अन्य नाखुश से ही रहते हैं, प्रोन्नति के मामले में भी निराशा का ही सामना करना पड़ता हैं।

तृतीय दौर

इस दौर में व्यक्ति को आर्थिक कष्टों का सामना करना पड़ता है, घर-परिवार में तनाव बढ़ जाता है, लड़ाई-झगड़े, पुलिस, कोर्ट, कचहरी, डॉक्टर आदि का चक्कर पड़ जाता है, भाई-भाई में नफरत हो जाती है, परिवार में दरारें पड़ जाती हैं, अगर कोई प्रेम सम्बन्ध हो, तो वह भी कष्टदायक होता है, दोनों ओर से तनावग्रस्त माहौल, झगड़े, हिंसा आदि की नौबत भी आ सकती है।

शराब, जुआ आदि खेलने की आदत सी हो जाती है, संचित धन भी खत्म हो जाता है और किसी कारणवश जेल जाने तक की नौबत आ जाती है।

सरकारी नौकरी वाले के लिए भी यह संकट की घड़ी होती है, वरिष्ठ अधिकारियों से दंडित होता है। अगर कोई व्यक्ति ठेकेदारी कर रहा है, तो उसके मार्ग में बाधा उत्पन्न हो जाती है, आमदनी कम और खर्च अधिक हो जाता है। पति-पत्नी के बीच सम्बन्धों में दरार आ जाती है। धन का सदा अभाव रहता है।

चौथा और अंतिम दौर

शनि के अंतिम दौर को भी दो भागों में बांटा गया है–

प्रथम प्रथम भाग में व्यक्ति कर्जदार बन जाता है, परिवार से सम्पर्क टूटा सा रहता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक कष्टों का सामना करना पड़ता है, दौड़-धूप की स्थिति बनी रहती है, प्रशासनिक स्तर के अधिकारियों से सम्पर्क टूट जाता है, आय का मार्ग भी लगभग अवरुद्ध हो जाता है। व्यापार में घाटा होता है। परीक्षा में असफलता मिलती है, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है, वैवाहिक जीवन कष्टदायक होता है, स्वास्थ्य गिर जाता है, धन कहीं से प्राप्त भी होता है, तो वह जेब में नहीं रुकता तथा सर्वत्र बदनामी का सामना करना पड़ता है।

व्यक्ति को किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती, मन अस्थिर रहता है, विचारों और कार्यों के बीच कोई तादात्म्य स्थापित नहीं हो पाता।

आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण ऐसे व्यक्ति गलत रास्ते पर चलने के लिए मजबूर हो जाते हैं, घर-परिवार का सहयोग नहीं मिल पाता और हमेशा अपने आप में अकेलापन महसूस करते हैं, मित्र-स्वजन सम्बन्ध तोड़ देते हैं, ऐसे में आत्महत्या के विचार भी आते हैं, इसके सिवा दूसरा कोई मार्ग ही नहीं दिखता। लेकिन कष्टों में भी ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान होती है।

द्वितीय–शनि अकारक होने पर जहाँ एक ओर इंसान के

शनि ग्रह की दशा आने पर प्रत्येक व्यक्ति पर इसका अशुभ प्रभाव पड़ता है। यह अशुभ प्रभाव जीवन की खुशियों में जहर घोल देता है और जीवन अस्त-व्यस्त सा हो जाता है।

अन्दर आत्महत्या की भावना को प्रबल करता है, वही कारक होने पर यह व्यक्ति को झोपड़ी से महल में भी पहुंचा देता है। अंतिम चरण में शनि दो ही कार्य करता है–या तो झकझोर कर रख देना या बना देना।

व्यक्ति के इस समय में एक्सीडेंट या शरीर के किसी हिस्से को नुकसान पहुँच सकता है।

यदि ऐसे समय में बृहस्पति प्रबल और सहायक रहा, तो ऐसा व्यक्ति पूर्ण सुख, भोग, ऐश्वर्य प्राप्त करता है, धन की वर्षा सी होने लग जाती है, वाहन सुख, व्यापार वृद्धि, चुनाव में पूर्ण सफलता, सरकारी नौकरी लगना, नौकरी में प्रमोशन प्राप्त होना या, यों कहा जाय कि उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। ऐसे व्यक्ति की उन्नति भी समाज में चर्चा का विषय होती है, व्यापार, नौकरी, विद्याध्ययन में चतुर्दिक सफलता प्राप्त होती है एवं सुखद यात्राओं का योग बनता है।

ऐसे समय में यदि विवाह होता है, तो पत्नी सुन्दर और हंसमुख होती है तथा प्रथम संतान के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

शनि ग्रह की दशा आने पर प्रत्येक व्यक्ति पर इसका अशुभ प्रभाव पड़ता है। यह अशुभ प्रभाव जीवन की खुशियों में जहर घोल देता है और जीवन अस्त-व्यस्त सा हो जाता है।

इस अशुभ प्रभाव को दूर करने के अनेकों उपाय हमारे ऋषियों द्वारा बताये गए हैं, जिनके द्वारा शनि ग्रह के विनाशक प्रभाव को नष्ट किया जा सकता है, साथ ही साथ इस ग्रह को पूर्णतः अनुकूल एवं शुभ प्रभावयुक्त बनाया जा सकता है। ऐसा होने पर शनि ग्रह के कारण आने वाली विपरीत और दुःखदायी स्थितियों से व्यक्ति का बचाव तो होता ही है, साथ ही शनि का शुभ प्रभाव उसे जीवन में अत्यधिक ऊँचाई पर पहुँचाने और श्रेष्ठता दिलाने में सक्षम होता है।

परन्तु यदि शनि जीवन में अनुकूल हो जाये तो कंगाल व्यक्ति को भी लखपति बना देता है। यह आवश्यक नहीं कि यदि शनि की दशा चल रही हो तभी शनि की साधना करे या शनि की साढ़ेशाती चल रही हो या जन्मकुण्डली में शनि विपरीत अवस्था में हो तभी शनि पूजा करें, ऐसी कोई बात नहीं है।

इसलिये साधक को चाहिए कि शनिदेव की कृपा प्राप्त करने के लिए भी शनि जयंती से या किसी भी शनिवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है।

हमारे श्रेष्ठ ऋषियों, योगियों और तपस्वियों द्वारा शनि ग्रह दोष निवारण के लिये बताये गये अनेक श्रेष्ठ उपायों में से एक प्रयोग नीचे की पंक्तियों में प्रस्तुत है–

साधना विधान

शनि जयंती जो कि 10.06.21 को है इस दिन से या किसी भी शनिवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है तथा आगे के दो शनिवार को भी इस प्रयोग को करना है, इस साधना हेतु मुख्यतः दो सामग्रियों की आवश्यकता होती है–'शनि यंत्र' और 'काली हकीक माला'। शनि को काला रंग अत्यन्त प्रिय है, अतः इस साधना में काली धोती और काले रंग के आसन का ही विधान है, काले रंग के कम्बल को भी आसन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

साधक सामने बाजोट पर काले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर काले तिलों की ढेरी स्थापित कर उस पर शनि यंत्र को स्थापित करें। फिर शनि देव का ध्यान करें–

ध्यान

।। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।।

ध्यान के पश्चात् यंत्र पर केसर से तिलक करें तथा काले तिल के तेल का दीपक लगायें। तत्पश्चात् शनि देव से अपनी सभी बाधाओं, कष्टों, परेशानियों के निवारण तथा शुभ फल प्राप्ति हेतु प्रार्थना कर निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ कं कृष्णांगनाय शं शनैश्चराय नमः।।

यह कुल तीन दिनों की साधना है। साधना प्रारम्भ करने के बाद आने वाले दो शनिवार को भी इसे सम्पन्न करें। तथा काला तिल, काले तिल का तेल, काली उड़द, लोहा आदि काली वस्तुओं का दान करें।

साधना समाप्त होने पर उसी दिन यंत्र तथा माला को भी अन्य काली वस्तुओं के साथ दान कर दें।

यह एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयोग है और इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद निश्चय ही शनि का अशुभ एवं विपरीत प्रभाव अनुकूल होने लगता है तथा शुभ प्रभाव की प्राप्ति से जीवन श्रेष्ठता और अद्वितीयता के मार्ग पर अग्रसर होने लगता है। सभी दृष्टियों से सुख, सौभाग्य, ऐश्वर्य में वृद्धि होती है और उसके जीवन में आने वाले दुष्प्रभाव, बाधाएँ एवं परेशानियाँ दूर हो जाती हैं।

साधना सामग्री- 450/-

प्रत्येक भारतीय नारी की यह इच्छा रहती है,

कि उसका पति स्वस्थ, सुन्दर व दीर्घायु हो,

साथ ही साथ उसकी

इच्छा रहती है कि वह अखण्ड सौभाग्यवती बनी रहे....

वट सावित्री व्रत - 09.06.21

सुख सौभाग्य प्राप्ति के लिए

अखण्ड सौभाग्यवती साधना

अखण्ड सौभाग्यवती का तात्पर्य उसके जीवनकाल में उसके पति की मृत्यु न हो, और उसे अपना वैधव्य जीवन व्यतीत न करना पड़े। और इसीलिए यह दिवस एक प्रकार से सम्पूर्ण भारतवर्ष की स्त्रियों के लिए सौभाग्यदायक पर्व है, कुंवारी कन्याओं के लिए वरदायक प्रयोग है, और पति की पूर्णता के लिए यह प्रयोग है।

स्त्रियों के लिए यह दिवस अत्यन्त महत्वपूर्ण और सौभाग्यदायक पर्व है, प्रत्येक स्त्री को हजार काम छोड़ करके भी इस प्रयोग को सम्पन्न करना ही चाहिए और प्रत्येक पति का यह कर्त्तव्य और धर्म है, कि वह अपनी पत्नी को यह प्रयोग सम्पन्न करने की सलाह दे, उसके लिए प्रयत्न करे, सुविधाएँ जुटाएं और प्रेरणा दे।

इस प्रयोग को जहाँ सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु, अपने पति के सुख, अपने पति की उन्नति और अपने पति के स्वास्थ्य के लिए सम्पन्न करती है, तो कुंवारी कन्याएँ उत्तम पति की प्राप्ति के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करती हैं जिससे कि जल्दी से जल्दी उनके जीवन में योग्य पति की प्राप्ति हो सके, वह पति की प्रिय बन सके, और जीवन में पूर्ण गृहस्थ सुख का आनंद प्राप्त कर सके।

वास्तव में पूरे वर्ष में स्त्रियों के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण और सौभाग्यदायक पर्व है, प्रत्येक स्त्री को हजार काम छोड़ करके भी इस प्रयोग को सम्पन्न करना ही चाहिए और प्रत्येक पति का यह कर्त्तव्य और धर्म है, कि वह अपनी पत्नी को यह प्रयोग सम्पन्न करने की सलाह दे, उसके लिए प्रयत्न करे, सुविधाएँ जुटाएं और प्रेरणा दे।

जैसा कि मैं पीछे बता चुका हूँ, कि **शिव पुराण में हरगौरी प्रयोग सिद्धि के पाँच प्रयोजन स्पष्ट हैं, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से निम्न पाँच लाभों की प्राप्ति तुरंत संभव होती है, और इस शुभ फल को वे प्राप्त कर पाती हैं।**

1. प्रयोग से पति को दीर्घायु प्राप्त होती है, उसकी अकाल मृत्यु का निवारण होता है और पति रोग रहित हो कर स्वस्थ जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो पाता है।
2. प्रयोग से पत्नी अखण्ड सौभाग्यवती बनती है और इस प्रयोग से गृहस्थ जीवन का कलह, परस्पर मतभेद और तनाव दूर हो जाता है।
3. प्रयोग सम्पन्न करने वाली स्त्री को मातृत्व सुख की प्राप्ति होती है। उसे योग्य पुत्र की प्राप्ति होती है, और वह माँ बनने में समर्थ होती है।
4. **कुंवारी कन्याओं के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से जल्दी से जल्दी उसका विवाह हो जाता है, और उसे श्रेष्ठ तथा उत्तम पति की प्राप्ति होती है, शीघ्र विवाह के लिए यह सर्वश्रेष्ठ प्रयोग माना गया है।**
5. इस प्रयोग को सम्पन्न करने से घर में शुभकार्य सम्पन्न होते हैं। मंगलदायक अवसर प्राप्त होते हैं, जीवन में पुण्य उदय होते हैं, अपने हाथों से धार्मिक कार्य सम्पन्न होते हैं और सौभाग्यवती स्त्री की जो भी कामना होती है, वह कामना निश्चय ही पूर्ण होती है।

वास्तव में ही यह प्रयोग जीवन का एक श्रेष्ठ प्रयोग है और प्रत्येक वर्ष सौभाग्यवती स्त्री को इस दिन यह प्रयोग सम्पन्न करना ही चाहिए।

प्रयोग समय

09.06.21 को या वर्ष की किसी भी अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, पर जहाँ तक सम्भव हो इस श्रेष्ठ दिवस पर इस प्रयोग को सम्पन्न करें तो शीघ्र फलदायक माना गया है। यह प्रयोग दिन को सम्पन्न किया जाता है और इसमें प्रत्येक उम्र की स्त्री साधना सम्पन्न कर सकती है।

साधना सामग्री

शास्त्रों के अनुसार इस प्रयोग के लिए पाँच वस्तुओं की आवश्यकता होती है–**1. श्रेष्ठ सिद्ध गौरी महायंत्र, 2. सौभाग्य माला, 3. घृत का दीपक, 4. किसी भी प्रकार के 108 पुष्प और 5. नारियल, जो कि जटायुक्त हो, जिसकी गिरी निकली हुई न हो।**

साधना प्रयोग

जो बालिका या सौभाग्यवती स्त्री यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहती है, उसे चाहिए कि वह समय रहते ही उपरोक्त सामग्री को पहले से ही प्राप्त कर रख ले। इस दिवस की प्रातः वह स्त्री सूर्योदय से पहले उठे, और बाल धो कर स्नान करे तथा पीठ पर बालों को खुले रहने दे।

इसके बाद सूर्य उगने पर लोटे में जल लेकर भगवान सूर्य को पुष्प चढ़ा कर सात बार थोड़ा-थोड़ा जल सूर्य को चढ़ावे ओर फिर जमीन पर जहाँ जल गिरा है, उसकी सात बार प्रदक्षिणा करे और भगवान सूर्य से प्रार्थना करे, कि वह उसके पति को तेजस्विता, बल, साहस और शक्ति दे।

इसके बाद साधिका पवित्र स्थान पर या पूजा स्थान में आकर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने पहले से ही प्राप्त किये हुए भगवान शिव और पार्वती का चित्र फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित करें, उसके सामने एक थाली रख दें और थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बना कर उस पर गौरी महायंत्र को स्थापित करें और फिर सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे तथा अगरबत्ती प्रज्वलित करें।

इसके बाद 'नमः शिवाय' मंत्र से सामने रखे हुए भगवान शिव और पार्वती के चित्र को जल से धो कर, पोंछ कर केसर या कुंकुम का तिलक करें, फिर इसी प्रकार थाली में रखे हुए गौरी महायंत्र को जल से धो कर, पोंछकर पुनः स्थापित कर उस यंत्र पर सात कुंकुम की बिन्दियाँ लगावें और सात केसर की बिन्दियाँ लगावें।

फिर उसके सामने एक पानी का लोटा स्थापित करें और उस पर नारियल स्थापित कर कुंकुम लगावें और चावल चढ़ावें, यह नारियल पूर्णता का प्रतीक है।

उसके बाद साधिका अपने ललाट पर केसर या कुंकुम का तिलक करे और फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अपने पति की उन्नति, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रही हूँ, यदि कुंवारी कन्या हो तो वह हाथ में जल ले कर कहे कि मैं योग्य वर की प्राप्ति और सुखदायक गृहस्थ जीवन के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रही हूँ।

इस प्रकार संकल्प करने के बाद दीपक को प्रणाम करे, कुंकुम से पूजा करे और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे कि घर में उत्तम पुत्र पौत्र की प्राप्ति हो, घर में सुख शान्ति हो और पूरा गृहस्थ जीवन प्रेम, मधुरता और आनन्द के साथ सम्पन्न हो।

इसके बाद साधिका सौभाग्य माला की पूजा करे, यह माला विशेष मनकों से सिद्ध और अनुकूल फल प्रदान करने वाली होती है, इस माला की पूजा कर इसे लोटे पर स्थापित नारियल पर चढ़ा दें।

इसके बाद अपने पास जो 108 पुष्प रखे हुए हैं, (वे किसी भी प्रकार के पुष्प हो सकते हैं) इन पुष्पों को जल से धोकर फिर प्रत्येक पुष्प पर केसर या कुंकुम की बिन्दी लगाते हुए एक-एक

प्रयोग से पत्नी अखण्ड सौभाग्यवती बनती है और इस प्रयोग से गृहस्थ जीवन का कलह, परस्पर मतभेद और तनाव दूर हो जाता है।

प्रयोग से पत्नी अखण्ड सौभाग्यवती बनती है और इस प्रयोग से गृहस्थ जीवन का कलह, परस्पर मतभेद और तनाव दूर हो जाता है।
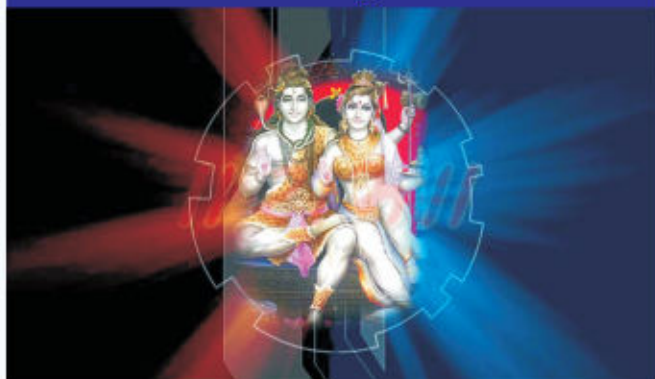
पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए गौरी महायंत्र पर चढ़ा दें।

गौरी महामंत्र

॥ ॐ सौभाग्य गौरी महादेवायै नमः ॥

इस प्रकार एक-एक मंत्र का उच्चारण करती रहे और एक-एक पुष्प उस महायंत्र पर चढ़ा दे, इस प्रकार 108 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए 108 पुष्प गौरी महायंत्र पर चढ़ा दे।

पुष्प चढ़ाने के बाद सौभाग्य माला से पांच माला गौरी मंत्र का जप करें।

जब यह मंत्र जप सम्पन्न हो जाय, तब पूर्ण आनन्द के साथ भगवान शिव को दूध का बना हुआ प्रसाद चढ़ावे और फिर उनकी आरती सम्पन्न करे।

आरती करने के बाद एक बार पुनः हाथ जोड़ कर अपने सौभाग्यप्राप्ति के लिए, गृहस्थ सुख के लिए, पुत्र-पौत्र की प्राप्ति और उन्नति के लिए भगवान शिव से प्रार्थना कर यह प्रयोग पूर्ण करे।

इस दिन साधिका पूरे दिन में केवल एक बार भोजन करें, शाम को फिर भगवान शिव की आरती सम्पन्न कर और दूसरे दिन वह नारियल, सौभाग्यमाला और गौरी महायंत्र को नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दें। यदि संभव न हो तो आस-पास कोई मन्दिर हो तो उस मन्दिर में यह सामग्री चढ़ा दें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है और वास्तव में ही यह प्रयोग जीवन का श्रेष्ठ और अद्वितीय प्रयोग है। सौभाग्यवती स्त्रियों के लिये तो यह वरदानस्वरूप है, प्रत्येक धर्मपरायण स्त्री को अपने जीवनकाल में यह प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

साधना सामग्री 450/-

शत्रुओं को शांत करने के लिए तांत्रिक ग्रंथों में कई विधान बताए गए हैं, परन्तु शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाना है, उनकी शत्रुता समाप्त करनी है तो इसके लिए धूमावती सर्वश्रेष्ठ और तुरंत प्रभाव देने वाली देवी हैं। धूमावती गुटिका धारण करने पर साधक को तुरंत परिणाम अनुभव होते हैं।

प्रबल शत्रु नाशक

धूमावती गुटिका

किसी भी बुधवार की प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाएं एवं अपने पास रखी हुई धूमावती गुटिका को लाल रेशमी धागे में पिरो लें।

सर्वप्रथम संक्षिप्त गणेश/गुरू पूजन कर गुरू मंत्र की चार माला जप करें। अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर किसी स्वच्छ ताम्र पात्र में धूमावती गुटिका को स्थापित कर दें। फिर मन ही मन कामना 'मैं अमुक शत्रु पर विजय प्राप्त कर जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति चाहता हूं।' बोलकर गुटिका को बांये हाथ में रखकर मुठ्ठी बन्द कर निम्न मंत्र का जप 5 मिनट करें-

मंत्र

।। गं गणपतये नमः ।।

फिर निम्न मंत्र का 10 मिनट मानसिक जप करें-

मंत्र

।। धूं धूं धूमावती ठः ठः ।।

यह मंत्र अपने आपमें छोटा सा दिखाई देते हुए भी अत्यंत तेजस्वी और महत्वपूर्ण है। फिर गुटिका को धारण कर लें। नित्य 5 मिनट धूमावती मंत्र एवं 5 मिनट गुरु मंत्र करते रहें। एक वर्ष तक धारण रखने के बाद गुटिका को जल में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर : 150/-

नाम–संस्कृत-अजीर्णहर, पुदीन, हिन्दी-पोदीना। बंगाल-पोदिना। मराठी-पोदीना। मराठी-पोदीना। तेलगू-पुदीना।

वर्णन–पोदीने का छोटा क्षुप होता है। इसके पत्ते सारे भारतवर्ष में चटनी बनाने के काम में आते हैं और इसको सब लोग जानते हैं। इसलिये विशेष वर्णन की आवश्यकता नहीं है। यह गर्मी के मौसम में बहुतायत में मिलता है।

गुण, दोष और प्रभाव–आयुर्वेद के मत में पोदिना भारी, स्वादिष्ट, रुचिकारक, हृदय को बल देने वाला, मल और मूत्र को रोकने वाला तथा कफ, खाँसी, मन्दाग्नि, विषूचिका, संग्रहणी, अतिसार, जीर्णज्वर और कृमिरोगों को नष्ट करता है।

पोदीना, गर्म और रूक्ष होता है। इसके अंदर वातनाशक, दीपन, संकोचक, विकास-प्रतिबंधक और उत्तेजक इतने गुण धर्म रहते हैं। इसका वातनाशक धर्म बहुत मूल्यवान है और शाकाहारी लोगों के लिए यह विशेष उपयोगी है। अजीर्ण, मन्दाग्नि, आफरा और उदरशूल में इसके स्वरस को देने से लाभ होता है। प्रसूतिज्वर में इसके स्वरस की 1 से 2 तोले तक की मात्रा में देने में काफी फायदा होता है।

पोदीने का नाम सुनते ही पोदीने की खुशबू का एहसास होने लगता है। पोदीने की चटनी बनाकर खाने से न सिर्फ भोजन का स्वाद बढ़िया बन जाता है बल्कि हमारे स्वास्थ्य के लिए भी इसका सेवन अत्यंत लाभकारी है। पुदीना हमारे शरीर को निरोग रखता है एवं हमारे चेहरे की खूबसूरती को बढ़ाने में मदद करता है। घर में कहीं पर भी इसका पौधा गमले या जमीन पर लगाया जा सकता है। पुदीने की पत्तियों में विटामिन बी, सी, डी, ई कैल्शियम फास्फोरस प्रचूर मात्रा में मौजूद होते हैं। पोदीने का रस निकालकर या इसकी चटनी बनाकर इसका सेवन करना अत्यंत फायदेमंद है। पोदीने का अर्क औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

पोदीना के स्वस्थ्योपयोगी गुण

1. सलाद में इसका उपयोग स्वास्थ्यवर्धक है। अगर इसकी पत्तियों को रोज चबाया जाए तो दंत रोग जैसे पायरिया, मसूढ़ों में रक्त निकलना आदि रोग दूर हो जाते हैं।
2. पोदीने की बनी चाय पीने से स्किन समस्या और पेट की सभी समस्याएं दूर होती है। यह पेट को साफ करता है और त्वचा से पिंपल हटाता है।
3. पोदीने की पत्तियों को पीस कर लेप करने से, भाँप लेने से, मुँहासे, चेहरे की झाइयों और दागों में लाभ होता है। ऐसा करने से चेहरा खिल उठेगा।
4. जुकाम, खाँसी, हल्का बुखार रहने पर पोदीना पाँच कालीमिर्च, स्वादनुसार नमक डालकर चाय की तरह उबाल कर तीन बार नित्य पीयें। लाभ होगा।
5. एक गिलास पानी में पोदीने की 4-5 पत्तियां उबाले ठंडा होने पर फ्रिज में रख दें। इस पानी से कुल्ला करने से मुँह की बदबू दूर हो जाती है।
6. उल्टी, दस्त, हैजा हो तो आधा कप पोदीने का रस हर दो घण्टे से पिलायें।
7. त्वचा की गर्मी होने पर हरा पोदीना पीसकर चेहरे पर बीस मिनट तक लगा दें। यह त्वचा की गर्मी निकाल देता है।
8. गैस – प्रात:काल एक गिलास जल में 25 ग्राम पोदीने का रस और इतना ही शहद मिलाकर पीने से गैस की बीमारी में विशेष लाभ होता है।
9. हिचकी – बन्द न हो रही हों तो पोदीने के पत्ते या नीम्बू चूसें। पोदीने के पत्तों के साथ शक्कर डालकर भी चबा

सकते हैं।

10. पित्ती - दस ग्राम पोदीना, बीस ग्राम गुड़, दो सौ ग्राम पानी में उबाल कर छान कर पिलाने से बार-बार उछलने वाली पित्ती ठीक हो जाती है।

11. रक्त जमना - चोट आदि लग जाने से जमा रक्त पोदीने का अर्क पीने से पिघल जाता है।

12. पुदीने का ताजा रस क्षय रोग, अस्थमा और विभिन्न प्रकार के श्वास रोगों में बहुत लाभकारी है।

13. पानी में नीम्बू का रस, पुदीना और काला नमक मिलाकर पीने से मलेरिया के बुखार में राहत मिलती है।

14. पोदीना कीटाणुनाशक होता है। यदि घर के चारों ओर पोदीने के तेल का छिड़काव कर दिया जाए, तो मक्खी, मच्छर, चींटी आदि कीटाणु भाग जाते हैं।

15. एक टब में पानी भर कर उसमें कुछ बूंद पोदीने का तेल डालकर यदि उसमें पैर रखे जाएं तो थकान से राहत मिलती है।

16. हकलाहट दूर करने के लिए पोदीने की पत्तियों में काली मिर्च पीस लें तथा सुबह शाम एक चम्मच सेवन करें।

17. पोदीने की चाय में दो चुटकी नमक मिला कर पीने से खाँसी में लाभ मिलता है।

18. पोदीने के पत्तों को पीसकर शहद के साथ मिलाकर दिन में तीन बार चाटने से अतिसार से राहत मिलती है।

19. नकसीर आने पर प्याज और पोदीने का रस मिलाकर नाक में डाल देने से नकसीर के रोगियों को बहुत लाभ होता है।

20. पेट में अचानक दर्द उठता हो तो अदरक और पोदीने के रस में सेंधा नमक मिलाकर सेवन करें या सूखा पोदीना और चीनी समान मात्रा में मिलाकर दो चम्मच की फंकी लेने से लाभ होता है।

21. पोदीने का ताजा रस शहद के साथ सेवन करने से ज्वर दूर हो जाता है तथा न्यूमोनिया से होने वाला विकार भी नष्ट हो जाते है।

22. चौथाई कप पोदीने का रस, आधा कप पानी में आधा नीम्बू निचोड़ कर सात बार उलट-पुलट कर पीने से गैस से हो रहा पेट दर्द तत्काल ठीक होता है।

23. आंत्र कृमि में पोदीने का रस दें। बिच्छू काटने पर पुदीने का लेप करें एवं पानी में पीस कर पिलाये। पेट दर्द और अरुचि में 3 ग्राम पोदीने में जीरा, हींग काली-मिर्च कुछ नमक डालकर गर्म करके पीने से लाभ होता है। वमन में पोदीना नीम्बू के साथ दें। हैजे में पोदीना, प्याज और नीम्बू का रस मिलाकर बराबर देने से लाभ होता है।

24. त्वचा के अन्दर शून्यता पैदा करने के लिए इसके फूलों को त्वचा पर रगड़ते हैं। इससे त्वचा में बिना किसी प्रकार की खराबी पैदा हुए काफी शून्यता हो जाती है। दाह या गुदा की खुजली के ऊपर इसके फूल को तेल में मिलाकर लगाने से खुजली कम पड़ जाती है। चर्मरोगों में इसको लगाने से चर्मरोग पैदा करने वाले सब कृमि नष्ट हो जाते हैं। सड़े हुए दाँत की सूरत में पोदीने के फूल को रखने से वहां के कृमि मर जाते हैं। कुक्षिशूल, गृध्रसी वातनाड़ी के शूल में इसका मलहम मसलने से दर्द की कमी होती है। मस्तक शूल पर इसके फूलों को लगाने से दर्द बन्द हो जाता है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

आधार ज्ञान

साधना का इससे आसान रास्ता और क्या होगा ?
बस यह दृष्टि समझ में आ जानी चाहिए।
हर वस्तु को देखने के दो नजरिए होते हैं।
सकारात्मक और नकारात्मक

दिन के बाद रात आती है और रात के बाद दिन। मगर फिर भी देखने का अंदाज स्थिति को बदल देता है। जिसके पास सकारात्मक नजर है, वह सोचेगा कि कितनी सुंदर है प्रकृति की व्यवस्था, जहाँ इधर भी दिन और उधर भी दिन, बीच में थोड़े समय के लिए रात। दोनों ओर उजाला, बीच में थोड़ा सा अंधेरा। यह ऐसी दृष्टि है, जिससे जीवन में आशाएं जिंदा रहती हैं, संभावनाओं का क्षितिज खुला रहता है, जीने का रस और स्वाद बना रहता है। नकारात्मक दृष्टि में आशाएं दम तोड़ देती हैं। वह सोचती है, कैसा है यह प्रकृति का खेल। इधर भी रात और उधर भी रात, बीच में थोड़े समय के लिए दिन। दिन भी वे ही हैं, रातें भी वे ही हैं किंतु नजर अपनी-अपनी है। एक नजर साधारण जीवन को एक आसाधारण अर्थ प्रदान करती है और दूसरी असाधारण को भी साधारण बना देती है। सच्चाई यह है कि जीवन और जगत अपने में कुछ नहीं हैं। ये वैसे ही हैं, जैसी हमारी दृष्टि है।

भगवान महावीर ने कहा, मैं तुम्हें तीन रत्न दे रहा हूँ। भौतिक रत्न छीने जा सकते हैं, लूटे जा सकते हैं, लेकिन मैं जो तुम्हें रत्न दे रहा हूँ, अनमोल हैं। वे हैं, **सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र। यानी तुम्हारी दृष्टि, तुम्हारा ज्ञान और तुम्हारा आचार सही हो।** इन तीनों में भी उन्होंने सम्यक् दर्शन (दृष्टि) पर अधिक बल दिया, क्योंकि यह मकान की आधारशिला है। जितनी मजबूत होगी, जैसी हमारी दृष्टि होगी। हमारी दृष्टि में अगर पीलापन है तो हमें हर चीज पीली ही दिखाई देगी। आँखों में पीलापन हटते ही उसका वस्तु ज्ञान भी सही हो जाएगा।

एक प्रसिद्ध सूफी हुए हैं, बुल्ले शाह। गृहस्थ आश्रम में होते हुए भी उनकी साधना बहुत ऊँची थी। एक बार एक आदमी उनसे निवेदन करने आया कि कृपया हमें प्रभु प्राप्ति का मार्ग बताएं। बुल्ले शाह बोले, अभी बताता हूँ और वे धान रोपने में व्यस्त हो गए। इधर से उखाड़ते और उधर लगा देते। आदमी उकता गया। सोचा, लगता है आज मार्ग दिखाने का उनका मन नहीं है। वह बोला, 'बड़ी आशा लेकर आपके पास आया था। मुझे भी रास्ता मिल जाता तो कल्याण हो जाता।' **बुल्ले शाह** ने कहा, '**अरे! इतनी देर से तुझे ज्ञान ही तो दे रहा था।' यह सुनकर वह आदमी और परेशान हो गया। कहा, आप तो धान की रोपाई में लगे थे। तब संत ने हंसते हुए कहा, 'अरे भगवान को क्या पाना ! यह जो मन संसार में लगा है, इसको धान के बूटे की तरह यहाँ ये हटा कर उधर प्रभु में लगा दो। बस हो गया अपना काम और सांसारिक कार्यों को भगवान द्वारा दी गई ड्यूटी मान कर निभाते जाओ।'**

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष-माह का प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। नये मकान का सपना पूरा हो सकता है। मित्रों के सहयोग से मार्ग की दिक्कतें दूर होंगी, प्रगति होगी। किसी के दबाव में किसी पेपर पर हस्ताक्षर न करें। दूसरा सप्ताह चिंताजनक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। बुजुर्गों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। वाणी पर संयम रखें, विद्यार्थी वर्ग सफलता पायेगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने अधिकारी वर्ग से संयमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। शत्रु वर्ग शांत रहेगा। कोई अच्छा एवं महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। शेयर मार्केट में सोच-समझकर निवेश करें। आखिरी दिनों में परिस्थितियाँ सुधरेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। इस माह आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 22, 23, 30, 31

वृष-सप्ताह का प्रारम्भ कष्टकारी रहेगा। अपने अन्दर घमंड की भावना न लायें। अन्यथा वांछित सहयोग प्राप्त नहीं होगा। चित्त को प्रसन्न रखें। योजनाएँ सफल होगी। आपके आत्मविश्वास से आप सफलता पा लेंगे। किसी भी कार्य को व्यवस्थित रूप से करें। नौकरीपेशा लोगों को सभी से प्रशंसा मिलेगी। माह के मध्य का समय अनुकूल है। विद्यार्थी वर्ग मनचाहा परिणाम पाकर प्रसन्न रहेगा। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर करना भविष्य में नुकसानदेय रहेगा। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। नये मकान में जाना हो सकता है। परिवार का सहयोग आगे बढ़ने में मिलेगा। शत्रु वर्ग शांत रहेगा। वाहन धीमी गति से चलायें। लापरवाही न करें। आकस्मिक धनप्राप्ति हो सकती है। आप तारा साधना करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 15, 16, 24, 25

मिथुन-प्रारम्भ के 2-3 दिन शुभकारी हैं। किसी अनजान से मुलाकात लाभदायक होगी। काम-धंधे में उन्नति होगी। किसी और की गलती आप पर थोपी जा सकती है। आर्थिक नुकसान भी सम्भव है। विद्यार्थियों के लिए उत्तम समय है। परिवार में सुख-शांति रहेगी। किसी से वाद-विवाद में न पड़ें। किसी को रुपये उधार न दें। नौकरीपेशा लोगों को कुछ और कार्यभार सौंपा जा सकता है। नौकरी में तरक्की होगी। आय के स्रोत बढ़ेंगे। स्थानान्तरण भी हो सकता है। चिंताओं से मुक्ति मिलेगी। सेहत के प्रति सावधान रहें। कोई खुशखबरी मिलने से मन प्रसन्न होगा। कोई छुपा हुआ रहस्य उजागर हो सकता है। कहीं से अप्रिय समाचार मिल सकता है। आप इस माह सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27

कर्क-माह का प्रारम्भ सकारात्मक रहेगा। विद्यार्थियों के लिए सफलतादायक है। आय के मार्ग खुलेंगे। अनावश्यक रूप से दूसरों की परेशानी में लिप्त होंगे। क्रोध पर काबू रखें। पुत्र का सहयोग मिलेगा। आलस्य दूर होकर स्फूर्ति से कार्य करते हुये मंजिल तक पहुंचेंगे। धार्मिक कार्यक्रमों में रुचि रहेगी। कोई पास का ही धोखा दे सकता है। ऐसा कोई कार्य न करें, जो सामाजिक दृष्टि से गलत हो। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। सोच-समझकर निर्णय लें। शत्रु-आर्थिक नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। किसी अनजान से मुलाकात दिनचर्या में बदलाव लायेगी। आप अच्छे रास्ते पर चलेंगे। आवेश में न आयें। अन्यथा खुद का ही नुकसान होगा। आर्थिक परेशानियां दूर होकर सफलता मिलेगी। आप बगलामुखी साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 19, 20, 21, 28, 29

सिंह-माह का प्रारम्भ सफलता देगा। रुके हुए रुपयों की प्राप्ति होगी। इस समय के लेन-देन लाभ देंगे। पारिवारिक समस्यायें सुलझा सकेंगे। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आर्थिक तंगी रहेगी। किसी जटिल समस्या में उलझेंगे। माह के मध्य में कोई ऑर्डर प्राप्त होने से आर्थिक परिस्थितियों में सुधार होगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। विरोधियों को शांत रखने में सफल होंगे। वाद-विवाद से बचें। परिवार में मनमुटाव हो सकता है। किसान वर्ग अच्छी पैदावार से खुश होंगे। अंतिम सप्ताह अच्छा रहेगा। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। कोई पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। खर्च पर नियंत्रण रखें। विद्यार्थी वर्ग अच्छा परिणाम पाकर प्रसन्न रहेगा। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 14, 22, 23, 30

कन्या-माह के प्रारम्भ में मन में चिड़चिड़ापन रहेगा। पारिवारिक समस्याओं में उलझेंगे। अच्छी नौकरी मिल सकती है। किसान वर्ग प्रसन्न रहेगा। विरोधी शांत रहेंगे। कोई समस्या आपको घेर लेगी। किसी भी प्रकार का कोई गलत कदम न उठायें। सभी का प्यार, सहयोग मिलेगा। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। मेहमानों का आना-जाना लगा रहेगा। पारिवारिक समस्यायें सुलझेंगी। रुके रुपये

प्राप्त होंगे। तीसरे सप्ताह में स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। मानसिक तनाव रहेगा। अविवाहितों के विवाह का अवसर है। सेवा का उत्तम फल मिलेगा। पुरानी बीमारी गम्भीर रूप ले सकती है। खर्च की अधिकता रहेगी। आत्मविश्वास डगमगायेगा। मेहमानों के आने से घर में चहल-पहन रहेगी। आप रोग मुक्ति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 15, 16, 24, 25

तुला-प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आप का मधुर व्यवहार सफलता दिलायेगा। किसी के प्रलोभन एवं लालच में न आयें। गलत तरीके से प्राप्त धन टिकेगा नहीं, मन में अशांति एवं असंतोष देगा। यह समय सामान्य है, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। किसी बात पर मित्रों से खटपट हो सकती है। माह के मध्य में आ रही अड़चनें दूर होगी। संत-महात्माओं का आशीर्वाद मिलेगा। बुद्धि, चातुर्य से अपने कार्यों में सफल होंगे। इस समय नये कार्य को प्रारम्भ करने पर परेशानियां आ सकती हैं, नुकसान भी हो सकता है। नया वाहन की खरीद हो सकती है। अन्तिम तारीखों में प्रतिकूल परिस्थितियाँ समाप्त होकर लाभकारी स्थिति होगी, यात्रा लाभकारी होगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आप इस माह नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27

वृश्चिक-प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता से खुशी होगी। नौकरीपेशा स्थानान्तरण से परेशान होंगे। मन में खिन्नता रहेगी। उच्च अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध होंगे। पुराने मित्रों से मेल-मुलाकात होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आध्यात्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। माह के मध्य में किसी उलझन में फंस सकते हैं। इस समय सोच-समझ कर निर्णय लें। कहीं भी धन का निवेश सोच-समझकर करें। विद्यार्थी वर्ग को उत्तम शिक्षा प्राप्त होगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। अच्छी संगत प्राप्त होगी। शत्रु वर्ग परास्त होंगे। सभी को आप का सहयोग प्रसन्नता देगा। आपको समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप इस माह भाग्योदय दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 1, 2, 10, 11, 19, 20, 21, 28, 29

धनु-सप्ताह का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। प्रॉपर्टी डीलर के कार्यों में लाभ होगा, विद्यार्थी वर्ग के ज्ञान में वृद्धि होगी। आर्थिक समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। प्रतिकूल परिस्थितियों में अहंकार रहित होकर सामना करें। घरेलू समस्याओं में उलझ सकते हैं। बाहरी यात्रा से लाभ मिलेगा, मित्रों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मुकदमेबाजी के कार्यों से दूर रहें। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति की सम्भावना है। नशे से दूर रहें, वाहन चालन में सावधानी रखें। किसी गलतफहमी के शिकार हो सकते हैं। परिवार में सभी सहयोग करेंगे, सोचे गये कार्य पूरे होंगे। प्रयास एवं आत्मविश्वास से कार्य बनने शुरू हो जायेंगे। पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होगी। इस माह आप सुख-सौभाग्य दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 12, 13, 14, 22, 23, 30, 31

मकर-प्रारम्भ मध्यम फलदायक है। किसी की बातों से भ्रमित न हों। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क बनेंगे। मानसिक परेशानी दूर होगी। जीवनचर्या अच्छी होगी। शत्रु से सावधान रहें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। नौकरीपेशा लोगों को परेशानियां आ सकती हैं। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। परिवार में कोई बीमार हो सकता है। जमीन खरीदने में लाभ होगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन हो सकता है। किसी भी प्रकार का गलत कार्य न करें। बिना पढ़े किसी कागजात पर हस्ताक्षर न करें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। बुद्धि विवेक से प्रत्येक परेशानी सुलझा लेंगे। अचानक कोई घटना परेशानी में डाल सकती है, सोच-समझकर निर्णय लें। आखिरी तारीख में कामयाबी मिलेगी। आप इस माह बगलामुखी साधना करें या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 5, 6, 15, 16, 24, 25

कुम्भ-माह का प्रारम्भ सकारात्मक रहेगा। यात्रा लाभकारी रहेगी। व्यापार में वृद्धि होगी। इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करने से बचें। अच्छी तरह सोच-विचार कर कार्य करें। विरोधियों से सावधान रहें। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक दूसरे का सहयोग करेंगे। शत्रु वर्ग आपको परेशान करने की चेष्टा करेगा। स्वास्थ्य के हिसाब से समय ठीक नहीं है। अनावश्यक खर्च होगा जीवनसाथी से मधुरता पूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। सहयोग भी प्राप्त होगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। तीसरे सप्ताह में सावधान रहें, आर्थिक हानि की सम्भावना है। टेंशन रहेगी। रुकावटें भी आ सकती हैं। व्यापारिक यात्रा होगी। मानसिक और आर्थिक परेशानी दूर होगी। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात होगी। कोई जोखिम का कार्य न करें। आप इस माह तारा साधना करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27

मीन-प्रारम्भ शुभप्रद है। सभी का सहयोग मिलेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। घर में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार के सदस्यों के कारण चिंता होगी। कारोबार में बढ़ोतरी होगी। दूसरा सप्ताह अनुकूल है। विदेश यात्रा हो सकती है। परिवार में शांति रहेगी। फालतू के कार्यों से बचें। आप पर कोई झूठा आरोप भी लग सकता है। नशे आदि का सेवन न करें। वाहन धीमी गति से चलायें। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। संतान आपका कहा नहीं मानेगी। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। इस समय महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर सकेंगे। चौथे सप्ताह में कोई अनहोनी घटना हो सकती है, कोई साजिश हो सकती है। आखिरी तारीख में अचानक धनप्राप्ति के अवसर हैं। आय के स्रोत बढ़ेंगे। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 10, 11, 19, 20, 21, 28, 29

सर्वार्थ सिद्धि योग -	मई- 2, 3, 12, 21, 23, 26, 30, 31
अमृत सिद्धि योग-	मई-23, 26, 27
रवि योग-	मई-2, 15, 18, 21, 22, 24, 25

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

07.05.21	शुक्रवार	वरुथिनी एकादशी
14.05.21	शुक्रवार	अक्षय तृतीया
15.05.21	शनिवार	मातंगी जयंती
17.05.21.	सोमवार	शंकराचार्य जयंती
18.05.21	मंगलवार	श्री गंगा जयंती
20.05.21	गुरुवार	बगलामुखी जयंती
23.05.21	रविवार	मोहिनी एकादशी
25.05.21	मंगलवार	नृसिंह जयंती
26.05.21	बुधवार	छिन्नमस्ता जयंती/बुद्ध जयंती
28.05.21	शुक्रवार	ज्ञान जयंती

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रात: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई-2, 9, 16, 23)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (मई-3, 10, 17, 24)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मई-4, 11, 18, 25)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मई-5, 12, 19, 26)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (मई-6, 13, 20)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मई-7, 14, 21)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मई-1, 8, 15, 22)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई-30)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (मई-31)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (जून-1)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (जून-2)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरूवार (मई-27)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (मई-28)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (मई-29)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मई 21

11. किसी एक व्यक्ति को सद्गुरुदेव के ज्ञान से जोड़ें।
12. प्रातः गुरु पूजन के बाद 'श्रीं' बीज मंत्र का 1 माला जप करें।
13. पीपल के या केले के पेड़ में 1 लोटा जल अर्पित करें।
14. आज अक्षय तृतीया पर पत्रिका में प्रकाशित साधना करें।
15. मातंगी जयंती पर स्तोत्र का पाठ करें।
16. भगवान सूर्य को जल अर्पित करें।
17. पारद शिवलिंग पर दूध मिश्रित जल चढ़ायें।
18. हनुमान जी को गुड़, चना का भोग लगाकर प्रसाद बांटें।
19. आज भोजन करने के पूर्व गाय को रोटी अवश्य खिलायें।
20. आज बगलामुखी जयंती है। 'ह्लीं' मंत्र का 21 बार जप करके जाएं।
21. आज सद्गुरुदेव जन्म दिवस पर गुरु गीता का पाठ करें।
22. सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
23. आज मोहिनी एकादशी पर प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
24. मनोकामनापूर्ति प्रयोग (अप्रैल में प्रकाशित) सम्पन्न करें।
25. नृसिंह स्तवन का एक पाठ करके जाएं।
26. किसी असहाय व्यक्ति को भोजन करायें।
27. आज गुरु मंत्र का 4 माला करके ही जाएं।
28. आज सपरिवार बैठकर 'ऐं' बीज मंत्र का 5 मिनट जप करें।
29. काले तिल एवं तिल का तेल दान करें।
30. आज गायत्री मंत्र का एक माला मंत्र जप करके जाएं।
31. एक सफेद पुष्प शिवजी पर चढ़ाकर 'ॐ नमः शिवाय' का 11 बार जप करके जाएं।

जून 21

1. आज अप्रैल माह की पत्रिका में प्रकाशित हनुमान कल्प साधना सम्पन्न कर सकते हैं।
2. सर्व मनोकामनापूर्ति गुटिका (न्यौ. 150/-) धारण करें।
3. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
4. आज किसी देवी मन्दिर में 3 लाल पुष्प चढ़ायें, मनोकामना पूर्ण होगी।
5. आज आप शनि बाधा निवारण हेतु शनि मुद्रिका (न्यौछा. 150/-) धारण कर सकते हैं।
6. प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
7. आज रोग मुक्ति गुटिका धारण करें (न्यौ. 150/-)।
8. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
9. 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं' का 11 बार जप करके जाएं।
10. आप निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं- 'ॐ शं शनैश्चराय नमः'।

18.06.21

धूमावती जयंती

घोर संकट निवारण की तीव्रतम एक मात्र साधना

धूमावती

महाविद्या साधना

मानव आज अपना जीवन यापन कठिन परिस्थितियों में रहकर कर रहा है, चाहे वह किसी संस्था में कार्यरत् हो या व्यवसाय कर रहा हो

अथवा स्वतंत्र क्षेत्र में कार्य कर रहा हो, हर क्षेत्र में कठिनाई, बाधाएं, शत्रु बाधा एवं प्रतिस्पर्धा आदि चुनौतियां हर पल व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए तत्पर रहती हैं।

इन सब कारणों की वजह से व्यक्ति हर पल अपने सम्मान की रक्षा के लिए चिंतित रहता ही है। इसके समाधान एवं अपने क्षेत्र में निष्कंटक प्रगति के लिए प्रबल दैवीय संरक्षण प्राप्त होना, आज नितांत आवश्यक हो गया है।

दैवीय संरक्षण कैसे प्राप्त हो, इसके लिए साधक को थोड़ा सा प्रयास करने की एक उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

इन दोनों की समन्वित क्रिया से साधक दैवीय कृपा प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है। वैसे भी प्रत्येक देवी, देवता मनुष्य को हर पल, हर क्षण, रक्षा-सुरक्षा प्रदान करने के लिए तत्पर रहते हैं, आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इनकी कृपा के अधिकारी बनें। आवश्यकता इस बात की है कि हम उनसे सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रबल भावना एवं पात्रता रखें। जीवन में चाहे भौतिक पक्ष में उन्नति की बात हो अथवा आध्यात्मिक उन्नति एवं पूर्णता प्राप्त करने की बात हो, उसमें महाविद्या साधना का महत्व सर्वोपरि है। अलग-अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप उनकी शक्ति स्वरूप से इन दस महाविद्या की उत्पत्ति मानी गयी है, जिनकी साधना साधक अपनी समस्या के निवारण के लिए उचित मुहूर्त पर सम्पन्न कर सफल व्यक्ति बन सकता है।

दस महाविद्याओं में भगवती धूमावती साधना स्थायी सम्पत्ति की प्राप्ति, प्रचण्ड शत्रुनाश, विपत्ति निवारण, संतान की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण साधना है। वास्तव में इस साधना को सम्पन्न करना जीवन की अद्वितीयता है। इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति भौतिक समृद्धि के साथ-साथ जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है। शत्रु बाधा व अन्य कोई भी बाधा उसके सम्मुख टिक नहीं पाती है।

इस साधना का तीव्रतम एवं शीघ्र अनुकूलता का प्रभाव मुझे उस समय देखने को मिला, जब एक व्यवसायी सज्जन मेरे पास आये और रोते हुए अपने कारोबार के बारे में बताने लगे, कि आज से छ: माह पूर्व मेरा व्यवसाय बहुत अच्छा चलता था, किन्तु आज व्यवसाय पूर्णत: बन्द हो गया है, कोई भी ग्राहक माल खरीदने नहीं आता है, मेरे चारों ट्रक गैरेज में खड़े हैं, यहां तक तो मैं चुपचाप सहन कर रहा था, किन्तु दो दिन पूर्व मेरे पुत्र का भी कुछ पता नहीं है कि कहाँ चला गया, अब सहन शक्ति जवाब दे रही है, कोई उपाय कीजिए, जिससे मेरा पुत्र किसी भी तरह से वापिस आ जाए।

मैंने गंभीरता पूर्वक उनकी समस्या को सुना तथा उसके व्यवसाय स्थल तथा घर को देखने उनके साथ आया। सम्पूर्ण निरीक्षण के उपरांत मुझे समस्या अत्यंत गंभीर लगी एवं भविष्य में कोई अनहोनी घटना न घटित हो जाए, उन्हें तुरंत परम पूज्य गुरुदेव जी से मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने की सलाह दी। वे सज्जन आग्रह कर मुझे भी साथ ले गए। पूज्य गुरुदेव जी के चरण स्पर्श करने के उपरान्त मैंने उनकी समस्या का विवरण पूज्य गुरुदेव जी के सम्मुख रखा, पूज्य गुरुदेव जी ने मेरी बात को गौर से सुनकर, उन्हें सांत्वना दी और उन सज्जन को धूमावती साधना करने की सलाह दी।

पूज्य गुरुदेव जी ने इस साधना के गोपनीय पक्ष को स्पष्ट करते हुए उन्हें साधना की सूक्ष्मता के बारे में निर्देशित कर सफलता का आशीर्वाद प्रदान किया। घर आने के पश्चात् उन्होंने शुभ मुहूर्त पर साधना का संकल्प लेकर साधना आरंभ कर दी। साधना प्रारंभ करने के एक सप्ताह के अंदर उनका बालक घर वापिस आ गया और साधना सम्पन्न होने तक उनके व्यवसाय में पर्याप्त सुधार होने लगे व अनुकूलता आ गयी। उन सज्जन व्यवसायी के लिए पूज्य गुरुदेव जी ने जो साधना विधान स्पष्ट किया था, उसका लघु रूप इस प्रकार है -

साधना विधान

धूमावती साधना मूल रूप से तांत्रिक साधना है। भूत-प्रेत, पिशाच तो धूमावती साधना से इस प्रकार गायब होते है, जैसे जल को अग्नि में देने पर जल वाष्प रूप में विलीन हो जाता है। क्षुधा स्वरूप होने के कारण अर्थात् भूख से पीड़ित होने के कारण इन्हें अपने भक्षण के लिए कुछ न कुछ अवश्य चाहिए। अत: जब साधक इनकी साधना करता है तो वह प्रसन्न होकर साधक के समस्त बाधारूपी शत्रुओं का भक्षण कर लेती है।

इस साधना के लिए दिनांक 18.06.21 को या किसी शनिवार को रात्रि में स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ काली धोती धारण कर, ऊनी काला आसन बिछाकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाए।

अपने सामने बाजोट पर काला कपड़ा बिछाकर उस पर स्टील की थाली रख दें, थाली के अंदर की तरफ

साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति भौतिक समृद्धि के साथ-साथ जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है। शत्रु बाधा व अन्य कोई भी बाधा उसके सम्मुख टिक नहीं पाती है।

काजल लगा दें। धूमावती यंत्र को स्नान कराने के पश्चात् थाली में रख दें। उसके सम्मुख 'खड्ग माला' एवं 'धूमावती गुटिका' स्थापित कर दें। यंत्र का पूजन सिन्दूर से कर, धूप एवं तेल का दीपक प्रज्वलित कर दें और हाथ जोड़ कर निम्नानुसार ध्यान करें -

विवर्णा चंचला, दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विपुला कुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा।।
काक ध्वजरथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
सूर्य हस्ताति रक्ताक्षी वृतहस्ता परान्धिता।।
वृद्ध धोणा तु श्रृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासर्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा।।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प ले, कि मैं (अमुक) गोत्र का (अमुक) पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ भगवती धूमावती साधना कर रहा हूँ, वे समस्त निघ्नों का नाश करें। ऐसा कहकर जल को भूमि पर छोड़ दें।

इसके पश्चात् जल हाथ में लेकर विनियोग करें -

अस्य धूमावती मंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि: निवृच्छन्द: जेष्ठा देवता धूं बीजं, स्वाहा शक्ति: धूमावती कीलकम् ममाभीष्ट सिद्धयर्थे (शत्रुहनने) जपे विनियोग:।।

विनियोग के पश्चात् निम्न अंगों का स्पर्श करते हुए न्यास करें -

धूं धूं हृदयाय नम:।। (हृदय का स्पर्श करें)
धूं शिरसे स्वाहा।। (सिर का स्पर्श करें)
मां शिखायै वषट्।। (शिखा का स्पर्श करें)
वं कवचाय हुं।। (पूरे शरीर का स्पर्श करें)
तीं नेत्रत्रयाय दौषट्।। (नेत्रों का स्पर्श करें)
स्वाहा अस्त्राय फट।। (पूरे शरीर का स्पर्श करें)

इसके पश्चात् कर न्यास सम्पन्न करें -

धूं धूं अंगुष्ठाभयां नम:
धूं तर्जनीभ्यां नम:
मां मध्यमाभ्यां नम:
वं अनामिकाभ्यां नम:
तीं कनिष्ठिकाभ्यां नम:
स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नम:।।

इसके पश्चात् धूमावती यंत्र के सम्मुख पुष्प अर्पित करें। फिर 'खड्ग माला' से निम्न मंत्र की 31 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।। ॐ धूं धूं धूं धुरु धुरु धूमावती क्रों फट्।।

OM DHOOM DHOOM DHOOM DHURU DHURU DHOOMAAVATI KROM PHAT

प्रयोग सम्पन्न होने के पश्चात् यंत्र तथा माला जल में विसर्जित कर दें एवं धूमावती गुटिका को काले धागे में धारण कर लें।

धूमावती साधना का यह विधान अत्यंत विलक्षण एवं विशिष्ट फल प्रदायक विधान है, बाधाएं चाहे कितनी ही विकराल अथवा विशाल हो, धूमावती साधना से बाधाओं पर विजय प्राप्त होती ही है। साधना का प्रयोग गलत कार्यों के लिए न करे, इसमें लाभ के स्थान पर हानि भी उठानी पड़ सकती है।

न्यौछावर - 600/-

आधुनिक युग में ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिलेगा जो रोगग्रस्त न हो

रोग मुक्ति एवं पूर्ण कायाकल्प हेतु

नारायण कल्प

आज का खान-पान, रहन-सहन

कुछ भी नियमित नहीं होने के कारण छोटा से छोटा शिशु भी

रोगग्रस्त हो जाता है, जिनका निदान डॉक्टरों की समझ में भी नहीं आता,

इन विविध रोगों का निदान सम्भव है इस प्रयोग द्वारा....

ब्रह्माण्ड का केन्द्र बिन्दु मानव है, हम मानव के अस्तित्व को नकार नहीं सकते, हर क्षण ज्ञान और विज्ञान दोनों ही उसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं, कि जैसे भी सम्भव हो मानव सुखमय जीवन व्यतीत करे, जबकिविज्ञान ने आज बहुत तरक्की कर ली है और मानव के सुखी जीवन के लिए वह हर क्षण प्रयासरत रहा है और उसकी सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए हर प्रकार के साधन भी जुटाए हैं, पर क्या वह मानव को पूर्णरूप से स्वस्थ और वास्तविक सुख की प्राप्ति करा सका है? क्या वह मानव की जर्जर तथा रोगग्रस्त देह को ठीक कर नवीन काया प्रदान कर सकने में सक्षम हो सका है? क्या वह उसे पीड़ादायक एवं कष्टप्रद जीवन से मुक्ति दिलाने में समर्थ हो सका है? क्या वह उसके दुःख, पीड़ा, बाधा, परेशानियों को समाप्त कर सका है?

इन सब प्रश्नों का उत्तर है—नहीं!

विज्ञान वास्तविक सुख देने में अक्षम है। देह का कायाकल्प होना कोई साधारण बात नहीं होती, यह तो ज्ञान द्वारा ही सम्भव हो सकता है और ज्ञानियों ने इन सब प्रश्नों का हल अपनी कठोर साधना व तपस्या से ढूंढ निकाला है, जब उनके घोर परिश्रम से प्राप्त इन गूढ़ रहस्यों का अर्थ आज हमें सहज रूप में प्राप्त हो रहा है, तो कोई उसके महत्व को समझ नहीं पा रहा है।

मनुष्य के भौतिक जीवन में कोई एक समस्या नहीं होती, कोई एक रोग नहीं होता, जिससे छुटकारा पाया जा सके, उसके गृहस्थ जीवन में तो अनेक प्रकार की बाधाएं, व्याधियां होती हैं, जो उसके उन्नति की ओर बढ़ते कदम को रोक लेती है, जिसके फलस्वरूप मानव-जीवन व्यर्थ सा लगने लगता है, क्योंकि जब तक व्यक्ति रोगमुक्त नहीं होगा, तब तक वह पूर्णरूप से स्वस्थ नहीं कहला सकता। किन्तु जुकाम, कैंसर आदि को ही रोग नहीं कहते, अपितु विभिन्न परेशानियां, बाधाएं आदि भी व्यक्ति के लिए किसी रोग से कम नहीं होती, जब तक व्यक्ति पूर्ण पौरुष युक्त न हो, तब तक उसका व्यक्तित्व अधूरा है, अपूर्ण है।

ज्योतिषानुसार व्यक्ति के जीवन में कुछ ग्रह ऐसे भी होते हैं, जिनका दुष्प्रभाव पड़ने पर वे उस व्यक्ति को रोगी बना डालते हैं, फिर चाहे वह व्यक्ति लाख उपाय कर ले, वह ठीक नहीं हो पाता, हजारों-लाखों रुपये उसके इलाज में खर्च हो जाते हैं, उसके बावजूद भी वह स्वस्थ नहीं हो पाता, और सभी तरह के इलाज होम्योपैथिक, ऐलोपैथिक या आयुर्वेदिक करवा कर जब वह थक जाता है, तब मृत्यु का स्मरण होते ही उसके मन में भय और शोक व्याप्त हो जाता है, जिसकी वजह से वह समय से पहले ही भय ग्रस्त और मृत्यु के प्रति आशंकित हो जाने के कारण मृत्यु की गोद में चला जाता है।

यदि रोगी अपने महत्वपूर्ण क्षणों में से थोड़ा-सा समय निकाल कर मंत्र-जप करें, जो कि विशेष शक्तियुक्त हो, और जिसको यदि विशेष मुहूर्त में किया जाए, तो उसके महत्वपूर्ण लाभ उस रोगी को स्वस्थ और सुखमय जीवन प्रदान कर देते हैं। व्यक्ति इतनी मेहनत, दौड़-धूप और परिश्रम करने पर भी रोगमुक्त नहीं हो पाता, वह अपने-आप को अस्वस्थ ही महसूस करता है, क्योंकि आये दिन की उलझनें, परेशानियाँ, तनाव उसे रोगी बना देते हैं

आज जबकि अधिकतर बीमारियों का इलाज विज्ञान ने ढूंढ निकाला है, किन्तु सभी का नहीं, इसीलिए जहां विज्ञान भी अपने घुटने टेक देता है, वहीं से ज्ञान का प्रारम्भ होता है। ज्ञान से तात्पर्य यहां उस मूल क्रिया-पद्धति से है, जो व्यक्ति को सुखमय जीवन प्रदान करती है। ज्ञान का तात्पर्य यहां उस ईश्वरीय शक्ति से है, उस मंत्र-बल से है, जिसके माध्यम से कुछ भी सम्भव हो सकता है।

किसी भी व्यक्ति की दुर्बलता व शरीर की विकृति उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समाप्त कर डालती है, अपने शरीर, मन और सम्पूर्ण व्यक्तित्व को सजाने, संवारने और निखारने के लिए किसी विशिष्ट दैवी शक्ति की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को पड़ती ही है।

व्यक्ति असमय ही पड़ी चेहरे की झुर्रियों, आँखों के नीचे स्याह, बाल पक जाने आदि को देख बड़ा ही दुःखी और व्यथित हो जाता है, क्योंकि उसे समय से पहले ही अपने भीतर बुढ़ापे के लक्षण नजर आने लगते हैं। मानव-जीवन की तीन ही अवस्थाएं होती हैं—1. बाल्यावस्था, 2. यौवनावस्था, 3. वृद्धावस्था और हर व्यक्ति को इन तीनों अवस्थाओं से गुजरना ही पड़ता है, इसीलिए जब वह बुढ़ापे के लक्षण अपने अन्दर देखता है, तो उसे अपनी मृत्यु का भी आभास होने लगता है, जो उसे अन्दर तक झकझोर देती है।

दवाएं खाकर रोग समाप्त होने के बाद भी व्यक्ति अस्वस्थ बना रहता है? कारण होते हैं—ग्रह-नक्षत्र, इनको पूजा-पाठ द्वारा शान्त तो किया जा सकता है, किन्तु इनके प्रभाव से जो रोग शरीर में व्याप्त हो गया है, उसका समापन सम्भव है—'नारायण कल्प' द्वारा।

क्या ऐसा नहीं हो सकता, कि वृद्धावस्था वापिस यौवनावस्था में बदल जाये और हम फिर से पूर्ण स्वस्थ, निरोगी, भय रहित दिखाई दें और अपने जीवन का आनन्द ले सकें? यह प्रश्न हर व्यक्ति के मानस-पटल में हर क्षण उमड़ता-घुमड़ता रहता है, पर क्यों?

...क्योंकि हर कोई यही चाहता है, कि वह अपने जीवन में हर क्षण यौवनवान बना रह सके, हरदम उसके चेहरे पर एक तरोताजगी, नूर और तेजस्विता झलकती हुई दिखाई दे, वह हर क्षण मस्ती में डूब सके, आनन्द से सराबोर हो सके, क्योंकि जब तक जीवन में उत्साह, उमंग, आनन्द और मस्ती नहीं होगी, तब तब जीवन पूर्ण नहीं कहला सकता।

'धन्वन्तरी' ने भी स्पष्ट शब्दों में प्रमाण के साथ कहा है—'वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदला जा सकता है' और ऐसा तब सम्भव हो सकता है, जब शरीर का पूर्णरूप से कायाकल्प हो, जिसे 'नारायण कल्प' के सिद्ध होने पर प्रत्येक साधक कर सकता

है और उसमें सफलता भी प्राप्त कर सकता है, क्योंकि यह अपने-आप में एक श्रेष्ठतम प्रयोग है। नारायण कल्प–वह प्रक्रिया, जिसके द्वारा वह अपनी रोगग्रस्त, जर्जर काया के बदले में एक सुन्दर, सुगठित और आकर्षित कर लेने वाली काया को मात्र मंत्र-बल की शक्ति द्वारा पुन: प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है, किन्तु इसके लिए आवश्यकता है–संयम की। आवश्यकता है–'नारायण कल्प मंत्र' और 'यंत्र' के प्रति श्रद्धा की। आवश्यकता है–उसके प्रति पूर्ण आस्था और विश्वास की।

क्योंकि मंत्र-बल द्वारा इस 'नारायण कल्प' से ऐसी ऊर्जा का संचरण होता है, जो रोगी के हृदय के भीतर, उसके रोम-रोम को आभायुक्त कर, उस साधक का उस मंत्र और तंत्र के देवता से सामंजस्य स्थापित कर देती है, जिसके फलस्वरूप वह निरोगी हो जाता है तथा उसकी सम्पूर्ण देह में 'कायाकल्प' की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और वह पूर्ण स्वस्थ और यौवनवान बन जाता हैं

जीवन में संशय, दु:ख, पीड़ा, व्याधि, बाधा, शोक, भय यही तो रोग के मूल कारण हैं, जिनकी वजह से व्यक्ति हर क्षण अस्वस्थ और वृद्ध दिखाई देता है और जब तक रोग की इस मूल जड़ को ही उखाड़ कर नहीं फेंका जाएगा, तब तक व्यक्ति स्वस्थ हो ही नहीं सकता, किन्तु अपने-आप में पूर्ण रूप से रोग मुक्त, भय रहित हुआ हुआ जा सकता है, अपने-आप को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता है, और वह भी मंत्र-जप द्वारा।

मंत्र शक्ति तथा विधिवत सम्पन्न किये गये प्रयोग का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है उस साधक के चित्त पर, कि वह उसी क्षण से अपने शरीर को हल्का अनुभव करने लगता है और कुछ ही समय के अंतराल बाद वह स्वत: ही स्वस्थ और सुंदर दिखनेलगता है, उसका धीरे-धीरे कायाकल्प हो जाता है।

जब व्यक्ति चारों तरफ से हताश और निराश हो जाता है, तब वह ईश्वर की शरण में जाता है और उनकी पूजा आराधना कर अपने सुखमय जीवन की कामना करने लगता है, परन्तु यह संशय उसके मन में रहता ही है, कि शायद पूर्ण हो जाए किन्तु उसी पूजा को, उसी आराधना को यदि एक विधिवत तरीके से कर रोग मुक्त, स्वस्थ एवं सुखी होने की कामना की जाए तो वह इस 'नारायण कल्प' द्वारा अवश्य ही सम्पन्न हो सकती है, तब व्यक्ति या साधक ज्यादा सुन्दर और पूर्णरूप से स्वस्थ हो जाता है, तब वह औरों से ज्यादा सुखी व सम्पन्न दिखने लगता है, क्योंकि उसके शरीर का पूर्ण कायाकल्प जो हो जाता है। इस प्रयोग को निम्न प्रकार से करें–

यदि एक विधिवत तरीके से कर रोग मुक्त, स्वस्थ एवं सुखी होने की कामना की जाए तो वह इस 'नारायण कल्प' द्वारा अवश्य ही सम्पन्न हो सकती है

सामग्री–नारायण यंत्र, नारायण चक्र, पीली हकीक माला।

दिवस : 25.05.21 या अन्य किसी भी मंगलवार को प्रात:काल या रात्रि में अपनी सुविधानुसार कभी भी प्रयोग किया जा सकता है।

विधि

25 मई को ही अथवा एक दिन पहले साधक दो अशोक के पत्ते तोड़कर ले आए, फिर स्नान कर अपने पूजा स्थान में पीले आसन पर बैठे तथा अपने सामने चौकी पर पीला वस्त्र बिछा कर कुंकुम या रोली से ॐ लिखकर 'नारायण यंत्र' स्थापित करे। अशोक के पत्तों पर हल्दी घोल कर निम्न यंत्र अंकित करे, यंत्र लिखने के लिए अशोक की लकड़ी की बनी हुई कलम प्रयोग करें, यंत्र इस प्रकार बनायें–

11	1	21
9	0	5
27	3	29

इन पत्तों को यंत्र के ऊपर रख दें तथा उस पर 'नारायण चक्र' रखें। पीले पुष्प और पीले रंगे हुए चावलों से संक्षिप्त पूजन करे तथा दैनिक साधना विधि के अनुसार न्यास सम्पन्न कर ध्यान करें–

उद्यत्-प्रद्योतन-शत-रुचिं तप्त-हेमावदाभम्,
पार्श्व-द्वन्द्वे जलधि-सुतया विश्व-धात्र्या च जुष्टम्।
नाना-रत्नोल्लसित-विविधाकल्पमापीत-वस्त्रम्,
विष्णुं वन्दे दर-कमल-कौमोदीकी-चक्र-पाणिम्।।

इस प्रकार ध्यान कर भगवान नारायण से अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करे तथा 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र का 5 माला जप सम्पन्न करें–

मंत्र

।। ॐ नं नृणाय कायाकल्प पूर्णत्व सौन्दर्य प्राप्तये फट् ।।

इस प्रकार मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् पूजन में उपयोग की गई सामग्री यंत्र, चक्र तथा माला को पीले रंग के कपड़े की पोटली में बांधकर नदी में विसर्जित कर दे।

साधना सामग्री– 540/-

साधनात्मक शब्दार्थ

अक्सर यह देखा गया है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें ज्ञात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक क्रिया-विधियों से सम्बन्धित अनेकानेक शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगन्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट रूप में एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द विशेष का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साधनात्मक शब्दार्थ एक प्रयास है, आशा है साधकों एवं पाठकों को इससे अवश्य लाभ होगा।

- **मानसिक पूजन**–बाह्य पूजन को द्रव्य यज्ञ कहा जाता है। उसमें पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार आदि अनेक भेद हैं। ये पूजन के स्थूल रूप हैं। मानसिक पूजन में केवल भावना या चिन्तन से ही सामग्री की कल्पना करनी होती है। वह एक श्रेष्ठ पूजन है। इसका अभ्यास होना आवश्यक है। मानसिक पूजन किसी भी समय और कहीं पर भी किया जा सकता है। मानसिक पूजन साधक को अन्तर्मुखी बनाता है तथा चैतन्यता प्रदान करता है।

- **दिग्बन्धन**–हमारे चारों ओर वातावरण में सूक्ष्म रूप से कुछ भाव तरंगें अदृश्य रूप में सतत क्रियाशील रहती हैं। उन भावोंमें कुछ अशुभ भी होती हैं, कुछ शुभ भी होती हैं। अशुभ भावों से अपने को बचाने के लिए दिग्बन्धन आदि साधना के विधान हैं। इस क्रिया के माध्यम से साधक के मन में दृढता एवं शक्ति का संचार होता है। भगवत शक्ति रूपी कवच मेरे चारों ओर संचरित है तथा मेरी रक्षा हो रही है, ऐसा समझ कर निश्चिन्त होकर साधना करता है।

- **स्तोत्र**–अपने इष्ट या उपास्य के गुण, कर्म तथा शौर्य की प्रशंसा कर, उनकी कृपा प्राप्त करना स्तोत्र का मुख्य प्रयोजन है। उनकी कृपा प्राप्त होते ही सफलता सम्भव है। इसीलिए पूजन के बाद या पहले स्तोत्र की आवश्यकता रहती है। प्रायः वह स्तोत्र पद्य रूप में एवं गेय होते हैं।

हवन–संस्कृत के 'ह्वेञ्' - 'आह्वाने' धातु से हवन शब्द का निर्माण हुआ है। जिस क्रिया विशेष द्वारा पृथ्वी लोकवासी मनुष्य स्वर्गादि लोकों में विद्यमान देवताओं से सम्पर्क साधने का प्रयोजन करते हैं, उसे हवन कहते हैं। हवन को द्रव्ययज्ञ भी कहा जाता है, अग्नि में देवता विशेष के लिए मंत्र के माध्यम से आहुति देकर प्रसन्न करना और मनोवांछित कार्य को पूर्णता देना हवन का मुख्य हेतु होता है। मंत्र साधनाओं की पूर्णता के लिए कुल मंत्र जप के दसवें हिस्से (दशांश) से आहुति या हवन करने का विधान है।

- **तर्पण**–इसका अर्थ है ऐसी क्रिया, जिससे देवताओं को तृप्त किया जाए। मंत्र जप की संख्या का दशांश हवन करने के बाद हवन का दशांश दूध और पानी मिलाकर के विग्रह या यंत्र पर मंत्र बोलते (मंत्र के अंत में 'तर्पयामि' लगाकर) हुए चढ़ाया जाता है। इसी क्रिया को तर्पण कहते हैं।

- **मार्जन**–मार्जन का अर्थ है शुद्ध करना। जितनी संख्या में हवन किया जाता है, उसका दशांश तर्पण किया जाता है तथा तर्पण के दशांश से मार्जन करने का विधान है। पूर्ववत दूध या पानी बराबर मिलाकर मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए (मंत्र के अंत में 'मार्जयामि' लगाकर) यंत्र या विग्रह पर चढ़ायें। मार्जन रजोगुण और तमोगुण के कुसंस्कार को मिटाने की सरल प्रक्रिया है, क्योंकि जब तक ये कुसंस्कार समाप्त न हों, तब तक किसी भी साधना या मंत्र जप में सफलता सम्भव नहीं है।

आदि शंकराचार्य कृत

श्रीगंगा स्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे
त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे।
शंकर मौलि विहारिणि विमले
मम मति रासतां तव पद कमले।।1।।

भागीरथि सुखदायिनी मातः
स्तव जल महिमा निगमे ख्यातः
नाहं जाने तव महिमानं
पाहि कृपा मयि माम ज्ञानम्।।2।।

हरि पद पाद्य तरंगिणि गंगे
हिम विधु मुक्ता धवल तरंगे।
दूरी कुरु मम दुष्कृति भारं
कुरु कृपया भव सागर पारम्।।3।।

तव जल ममलं येन निपीतं
परम पदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गंगे त्वयि यो भक्तः
किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः।।4।।

पतितोद्धारिणी जाह्नवी गंगे
खण्डित गिरि वर मण्डित भंगे।
भीष्म जननि हे मुनिवर कन्ये
पतित निवारिणि त्रिभुवन धन्ये।।5।।

कल्प लतामिव फलदां लोके
प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावार विहारिणि गंगे
विमुख युवति कृत तरल अपांगे।।6।।

तव चेन्मातः स्तोत्रः स्नातः
पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः
नरक निवारिणी जाह्नवि गंगे
कलुष विनाशिनी महिमोत्तुंगे।।7।।

पुनरसदंगे पुण्य तरंगे
जय जय जाह्नवि करुणापांगे।
इन्द्र मुकुट मणि राजित चरणे
सुखदे शुभदे भृत्य शरण्ये।।8।।

रोगं शोकं तापं पापं
हर मे भगवति कुमति कलापम्।
त्रिभुवन सारे वसुधा हारे
त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे।।9।।

अलकानन्दे परमानन्दे
कुरु करुणामयि कातर वन्द्ये।
तव तटनिकटे यस्य निवासः
खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः।।10।।

वरमिह नीरे कमठां मीनः
किं वा तीरे शरटः क्षीणः।
अथवा श्वपचो मलिनो दीन
स्तव न हि दूरे नृपति कुलीनः।।11।।

मां भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये
देवि द्रवमयि मुनिवर कन्ये।
गंगा स्तव मिम ममलं नित्यं
पठति नरो यः स जयति सत्यम्।।12।।

येषां हृदये गंगा भक्ति
तेषां भवति सदा सुख मुक्तिः।
मधुराकान्तापज्झटिकाभिः
परमानन्द कलित ललिताभिः।।13।।

गंगा स्तोत्र मिदं भव सारं
वांछित फलदं विमलं सारम्।
शंकर सेवक शंकर रचितं
पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः।।14।।

1. हे देवताओं की अधिष्ठातृ देवी भगवती गंगे,चंचल तरंगों वाली तीनों लोकों में विचरण करने वाली हैं। भगवान शंकर के मस्तक पर विराजमान रहने वाली पवित्र हे गंगे, आपके चरणों में मेरी श्रद्धा आबद्ध हो।

2. हे माता भागीरथी, आप सबको सुख-प्रदान करने वाली है। आपकी महिमा शास्त्रों में निहित है। हे देवि! आप की अनन्त महिमा को मैं नहीं जान पाया हूँ। मुझ पर कृपा करें तथा मेरे अज्ञान को दूर कर दें।

3. हे अनन्त लहरों वाली गंगे। आपकी स्वच्छ तरंगे शरदकालीन चन्द्रमा तथा मुक्तामणि के समान स्वच्छ हैं। मेरी पाप राशि को समाप्त करके संसार सागर से पार करें।

4. जिसने भी आपके पवित्र जल का पान किया है। उसका परम पद को प्राप्त करना निश्चित है। हे गंगे माता, जो भी आपकी भक्ति में रत हैं। उसके सामने यम कभी भी नहीं आ सकता।

5. हे जह्नु ऋषि की पुत्री गंगे! आप पतित लोगों का उद्धार करने वाली हैं। शिलाखण्डों से खण्डित तरंगों वाली हे मुनि पुत्री! आप भीष्म पितामह की माता हैं, तीनों लोगों में धन्यतम हैं तथा पतितों को पवित्र करने वाली हैं।

6. तीनों लोकों में कल्पवृक्ष की तरह आप मनोरथ प्रदान करने वाली हैं। जो आपके चरणों में नमन करता है, वह कभी भी शोक संतप्त नहीं होता। चंचल नेत्रों वाली चंचल लहरों से युक्त हे गंगे! आप विस्तृत समुद्र के समान विशाल भू भागों में फैले हुए प्रवाहित हैं।

7. हे माता! आपके स्तोत्र का निरंतर पाठ करने से पुनः वह जीव माँ के गर्भ में नहीं आता। हे जह्नु पुत्रि गंगे! आप नारकीय कष्ठ को दूर करने वाली हैं, अति महिमा शाली माँ आप सभी पापों को दूर करने वाली हैं।

8. हे पुण्य लहरों वाली विलुप्त अंगों वाली, जह्नु पुत्री करुणामयी दृष्टिवाली भगवती गंगे आपकी जय हो। आप के चरणों में इन्द्र के मुकुट सुशोभित हैं, हे सुख और सौभाग्य देने वाली मैं आपकी शरणागत हूँ।

9. हे भगवती! मेरे रोग, शोक, ताप, ताप और कुमति को हर लीजिए। इस पृथ्वी लोक में आप विभूषित हार के समान है। त्रैलोक्य की सारभूत तत्व है। संसार में आप ही मेरा आश्रय है।

10. परमानन्द प्रदान करने वाली अलकनन्दा नाम से विख्यात हे भगवति! आप मुझ पर करुणा कीजिए। क्योंकि दीन दुखियों पर आप करुणा करने वाली हैं जो व्यक्ति आपके पावन तट पर निवास करता है वह मानो वैकुण्ठ का सुख प्राप्त करता है।

11. हे भगवती गंगे! आपके जल में रहने वाले कछुवे और मछलियाँ भी भाग्यशाली होती है। आपके किनारे निवास करने वाले गिरगिट और दीन मलिन मछुआरे भी श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं किन्तु आप से दूर करने वाले राजा भी कुलीन नहीं हो सकते।

12. हे भुवनेश्वरि भगवती! आप पुण्यमयी और अन्यतम हैं, हे मुनि पुत्री! मुझ पर कृपा कीजिए आपका स्तवन अत्यंत पवित्र है, इसका जो भी प्रतिदिन पाठ करता है, संसार में उसे सदैव विजय प्राप्त होती है।

13. जिसके हृदय में भगवती गंगा के प्रति श्रद्धा भक्ति है, उनको सदैव भक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है। यह स्तोत्र परमानन्द देने वाला सुन्दरतम एवं मधुर है।

14. संसार में एकमात्र सारभूत यह गंगा स्तोत्र वांछित फल पेदान करने वाला और पवित्र है। जो भी आदि शंकराचार्य के द्वारा रचित इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह भगवान शंकर की भक्ति प्राप्त कर इस संसार में आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है।

हथेली में कई प्रकार के चिह्न देखने को प्राय: मिल जाते हैं, जिनमें से प्रमुख हैं–त्रिभुज, क्रॉस, बिन्दु, वृत्त, द्वीप, वर्ग, जाल, नक्षत्र आदि। प्रस्तुत लेख में त्रिभुज से सम्बन्धित तथ्यों का विवेचन किया जा रहा है।

हथेली में अगर कहीं पर भी तीन तरफ से आकर रेखाएं परस्पर मिलती हैं, तो त्रिभुज का आकार बनता है। यह त्रिभुज छोटा या बड़ा हो सकता है। हथेली में ये त्रिभुज अलग-अलग स्थानों पर देखे जा सकते हैं।

1. जो त्रिभुज स्पष्ट, निर्दोष तथा गहरी रेखाओं से बनता है वह शुभ फलदायी कहा गया जाता है।
2. हथेली में जितना बड़ा त्रिभुज होगा उतना ही लाभदायक कहा जाएगा।
3. हथेली के मध्य में जो त्रिभुज पाया जाता है, उससे यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति भाग्यवान, ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा उन्नतिशील है। उसकी शारीरिक एवं मानसिक वृत्तियाँ शुद्ध होती हैं। ऐसा व्यक्ति शान्त एवं मधुर स्वभाव का होता है। समाज में उसका सम्मान होता है।
4. बड़ा त्रिभुज विशाल हृदय का प्रतीक है तथा संकीर्ण अस्पष्ट त्रिभुज संकीर्ण मनोवृत्ति का संकेत है।
5. यदि हथेली में एक बड़े त्रिभुज के भीतर एक और छोटा त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही उच्च पद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।
6. यदि शुक्र पर्वत पर त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति सरल मधुर स्वभाव वाला, रसिक मिजाज, शान-शौकल से रहने वाला तथा ऊँचे स्तर का व्यक्ति होता है।
7. यदि हथेली में टूटा हुआ लहरदार या दूषित त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति कामी एवं परस्त्री-गामी होता है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसा त्रिभुज हो तो वह निश्चय ही परपुरुष गामी होती है।
8. यदि मंगल पर्वत पर त्रिभुज हो, तो व्यक्ति रणकुशल तथा युद्ध में धैर्य दिखाने वाला होता है। वीरता में वह राष्ट्रीय पुरस्कारों से सुशोभित होता है। परन्तु यदि इस पर्वत पर दूषित त्रिकोण हो तो वह व्यक्ति निर्दयी तथा कायर होता है।
9. यदि राहू क्षेत्र पर बिना दोष के त्रिभुज हो, तो ऐसा व्यक्ति अत्यंत ऊँचे पद पर पहुँचता है। साथ ही वह व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है। यदि राहू क्षेत्र में दो त्रिभुज हों तो दुर्भाग्य का सूचक है।
10. प्लूटो पर्वत पर यदि श्रेष्ठ त्रिभुज हो तो वृद्धावस्था आनन्द से व्यतीत होती है, परन्तु दो संयुक्त त्रिभुज होने से वृद्धावस्था में बदनामी होती है।
11. यदि गुरु पर्वत पर निर्दोष त्रिभुज हो तो ऐसे व्यक्ति चतुर, कूटनीतिज्ञ तथा हमेशा अपनी उन्नति की इच्छा रखने वाले होते हैं। इसके विपरीत दोषयुक्त त्रिभुज होने पर वह घमण्डी तथा स्वार्थी होता है।
12. शनि पर्वत पर निर्दोष त्रिभुज हो तो वह व्यक्ति तंत्र-मंत्र के क्षेत्र में अधिकारी माना जाता है। दोषयुक्त त्रिभुज होने पर वह ऊंचे स्तर का ठग व धोखेबाज होता है।
13. सूर्य पर्वत पर निर्दोष त्रिभुज होने पर व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी तथा परहितचिन्तक होता है। दोषयुक्त

हाथ में पाए जाने वाले ये छोटे-छोटे चिह्न भी अपने आप में बहुत कुछ अर्थवत्ता समेटे हुए होते हैं...

त्रिभुज होने पर वह समाज में निन्दा का पात्र बनता है, उसकी भाग्यवृद्धि में बराबर बाधाएं आती हैं।

14. यदि बुध क्षेत्र पर त्रिभुज का चिह्न हो तो वह व्यक्ति एक सफल वैज्ञानिक होता है। साथ ही व्यापार की दृष्टि से भी जीवन में अत्यंत उच्चकोटि की सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग विदेशों में अपना व्यापार फैलाकर लाभ उठाते हैं। यदि त्रिभुज दोषयुक्त हो, तो वह व्यापार में दिवालिया हो जाता है।

15. आयु रेखा पर त्रिभुज दीर्घायु का सूचक है।

16. मस्तिक रेखा पर त्रिभुज तेज बुद्धि एवं श्रेष्ठ शिक्षा की प्राप्ति का सूचक होता है।

17. स्वास्थ्य रेखा पर त्रिभुज होने पर व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यंत श्रेष्ठ होता है।

18. यदि हृदय रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो उस व्यक्ति का वृद्धावस्था में भाग्योदय होता है।

19. यदि सूर्य रेखा पर त्रिभुज का चिह्न हो तो व्यक्ति किसी भी एक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सफलता प्राप्त करता है।

20. भाग्य रेखा पर त्रिभुज दुर्भाग्य का सूचक है, ऐसा व्यक्ति जीवन में असफल होता ही देखा गया है।

21. यदि विवाह रेखा पर त्रिभुज हो, तो विवाह में कई प्रकार की बाधाएं आती हैं और उसका गृहस्थ जीवन प्रायः असफल ही रहता है।

22. यदि चन्द्र रेखा पर त्रिभुज हो तो वह अपने जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

23. यदि जीवन तथा मस्तिष्क रेखा से त्रिकोण बनता है तो ऐसा त्रिकोण शुभ होता है।

24. यदि स्वास्थ्य रेखा तथा जीवन रेखा से मिलकर त्रिभुज का चिह्न बनता हो, तो वह प्रखर बुद्धि होता है।

25. यदि स्वास्थ्य तथा जीवन रेखा से मिलकर त्रिभुज का चिह्न बनता हो तो वह व्यक्ति बहुत अधिक ऊंचा उठने में सहायक होता है।

26. यदि हथेली में उभरा हुआ त्रिकोण हो तो वह व्यक्ति लड़ाकू स्वभाव का होता है।

27. यदि त्रिकोण की रेखाएं उभरी हुई, पुष्ट तथा चौड़ी हों, तो वह व्यक्ति दूसरों की भलाई करने वाला होता है।

28. यदि त्रिकोण की रेखाएं बहुत चौड़ी हों तथा मंगल पर्वत पुष्ट हो तो वह व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के आगे बढ़ने वाला होता है।

29. यदि दोनों हाथों में चपटा त्रिभुज हो तो उस व्यक्ति का जीवन एक प्रकार से महत्त्वहीन होता है।

30. यदि रेखाएं गहरी और पतली हों तो वह व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

31. यदि त्रिकोण की रेखाएं फीकी तथा कटी हुई हों, तो वह व्यक्ति जरूरत से ज्यादा भौतिक तथा स्वार्थी होता है।

32. यदि त्रिकोण से कुछ सहायक रेखाएं ऊपर की ओर बढ़ रही हों, तो उस व्यक्ति को काफी बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त होती है।

33. यदि त्रिकोण के अन्दर का भाग चौड़ा होता हो तो वह व्यक्ति आलसी होता है।

34. यदि स्वास्थ्य रेखा उन्नत हो तथा त्रिकोण भी बड़ा हो तो वह व्यक्ति दीर्घायु होता है।

35. यदि त्रिकोण के ऊपर क्रॉस का चिह्न हो तो उस व्यक्ति के जीवन में कई प्रकार की दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

36. यदि त्रिकोण के नीचे क्रॉस का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में महत्वपूर्ण होता है।

37. यदि लम्बी उंगलियां हों तथा त्रिकोण के अन्दर क्रॉस हो तो व्यक्ति दूसरों को दुखी करता है।

38. यदि त्रिकोण के मध्य में क्रॉस हो तथा स्वास्थ्य रेखा के पास तारा हो तो वह व्यक्ति अंधा होता है।

39. त्रिकोण के अन्दर तारे का चिह्न हो तो वह प्रेम में बदनाम होता है।

40. यदि त्रिकोण में वृत्त का चिह्न हो तो वह प्रेमिका से धोखा खाता है।

41. अच्छा पुष्ट और बड़ा त्रिकोण व्यक्ति को सभी दृष्टियों से ऊंचा उठाने वाला माना गया है।

(पूज्य सद्गुरुदेव की पुस्तक 'वृहद हस्त रेखा' से साभार)

26.05.21 or Any Saturday

The Sadhanas of the ten Mahavidyas (very powerful forms of Goddess Shakti) are amazing as they hide within them wonderful possibilities which can simply baffle the mind. No task is impossible for a Sadhak who has successfully accomplished the Sadhana of any of the ten Mahavidyas. New avenues open up on their own after these Sadhanas are accomplished.
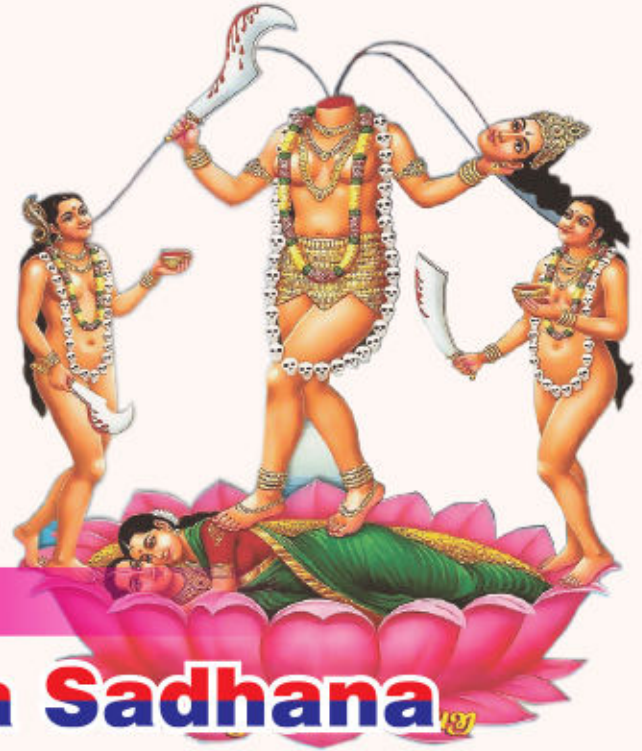
For Overall Success in Life

Chhinmasta Sadhana

Sadhaks consider the Sadhana of Chhinmasta, one of the Mahavidyas, as one of the most powerful and wonderful of all rituals. Through this ritual a Sadhak can defeat all enemies and problems of life.

And not just this he can overcome his weaknesses and progress at an amazing pace in the field of Sadhanas. It is a ritual that makes the path of one's progress problem free. In fact such is the effect of the Goddess that no person dares to face him or stand up against him. Generally no Guru is ready to give this Sadhana because of the tremendous power instilled in it. So it is very difficult to obtain this particular ritual.

But another fact about this ritual is that it is very simple, easy and quick acting. This is why revered Sadgurudev very kindly revealed it for the benefit of the common man. For the family man the ritual comes as a boon because living in this world one has to face so many problems and adversaries. It is a very common thing for a successful person or one aspiring success to face unwanted enemies, problems and worries. Lot of one's energy gets wasted trying to fight and overcome the same.

But after trying this Sadhana one is bleassed by Goddess Chhinmasta who is an undefeatable form of Mother Shakti. Through her blessing one is able to succeed in any field be it politics, administration, business, a job or the spiritual field. The Goddess is capable of bestowing totality in life. She always protects the Sadhak from all perils of life.

This is a single day Sadhana that must be done on **26.05.21or any Saturday.**

Try the Sadhana late at night after 10 p.m. Have a bath and wear fresh clothes.

Covder a wooden seat with a clean cloth and on it place the **Chhinmasta Yantra** over a mound of rice grains.

Light a mustard oil lamp. Then chant the following verse praying to Goddess Chhinmasta for success and meditating on her divine form.

Bhaasvanmandal Madhyagaam Nijshishchhinnaam Vikirnnaalak, Sfaraasyam Prapibadrigalaat-swarudhiram Vaame Kare Vibhateemri. Yaabhaasakt-rati-samaropagitaam Sakhyou Jine Gakinee, Vaarnninyou Paridrishyammod Kalitaam Shree Chhinmastaam Bhaje.

Make five marks of vermilion on the Yantra and then offer rice grains on the Yantra.

Next with a **black Hakeek rosary** chant 75 rounds of the following Mantra.

Om Hloum Gloum Sarva Daarannaayei Phat.

After this daily chant just one round for the next 21 days.

On the twenty second day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles- 450/-

16.06.21

Panchanguli Sadhana

Panchanguli Sadhana is onc of the best in the Indian spiritual field, since it gives a clear vision of future events. Forecasts can be made through Astrology and Palmistry, yet it is widely known wince ancient times, that ***Binaa Isht Sab Bhrasht Hai,*** ie an astrologer cannot be famous and cannot forecast correctly unless he has achieved some Siddhi or Sadhana in this field.

In modern times, this Sadhana is more relevant and gives astonishing results. Through it a man in service can impress his superiors, while a businessman can know future market trends.

Panchanguli Yantra is necessary for this Sadhana. On an auspicious day and time, the place of Sadhana should be cleaned with water. Thereafter, a square wooden plank should be kept on this place and covered with a clean white cloth. The Yantra should be placed on this cloth.

Thereafter, a copper-tumbler should be placed next to the Yantra. The tumbler should be covercd with a red cloth and a coconut should be kept over it. On top a picture of Panchanguli Devi should be installed, which should be worshipped daily for 21 days followed by the recital of Panchanguli Mantra regularly.

Pray to Goddess Panchanguli chanting thus.

Panchaanguli Mahaadevi Shree Seemandhar Shaasane. Adhishtthaatri Karsyaasou Shaktih Shree Tridasheshituh.

पंचांगुली ध्यान मंत्र

पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः

Next chant the following Panchanguli Mantra.

Om Namo Panchaanguli Panchaanguli Parshari Parshari Maataa Mayangal Vashikarnni Lohmay Dandmannini Chaunsatth Kaam Vihandani Rannmadhye Raulmadhye Shatrumadhye Deevaanmadhye Bhootmadhye Pretmadhye Pishaachmadhye Jhongtingmadhye Daakinimadhye Shankhinimadhye Yakshinnimadhye Doshinnimadhye shekanimadhye Gunnimadhye Gaarudimadhye Vinaarimadhye Doshmadhye Doshaa-sharanmadhye Dushtmadhye Ghor Kasht Mujh Oopare Buro Jo Koi Kare Karaave Jade Jadaave Tat Chinte Chintaave Tas Maathe Shree Maataa Shree Panchaanguli Devi Tanno Vajra Nirdhaar Pade Om Ttham Ttham Ttham Swaahaa.

पंचांगुली मंत्र

ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रु मध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषिणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।

As a matter of fact, this Sadhana is a bit lengthy and requires perseverance. But competent Sadhaks of the country are of the opinion that instead of following the lengthy and complicated process, if a person recites Panchanguli Mantra just twenty-one times daily before an energised Yantra and picture of Panchanguli Devi the Sadhana is accomplished automatically within a few days. **The Sadhak should place a picture and Yantra of Panchanguli Devi in his house and recite the Panchanguli Mantra 21 times after the morning bath for 21 days.**

After a few days, the Mantra becomes effective and the Sadhak becomes capable of looking into the future. The extent of success depends upon the brilliance and devotion of the Sadhak.

Sadhana Articles- 300/-

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

मातंगी महाविद्या दीक्षा

आज के इस मशीनी युग में जीवन यंत्रवत्, ठूंठ और नीरस बनकर रह गया है। जीवन में सरसता, आनन्द, भोग विलास, प्रेम, सुयोग्य पति-पत्नी प्राप्ति के लिए मातंगी दीक्षा अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। इसके अलावा साधक में वाक्‌सिद्धि के गुण भी आ जाते हैं। उसमें आशीर्वाद व श्राप देने की शक्ति आ जाती है। उसकी वाणी में माधुर्य और सम्मोहन व्याप्त हो जाता है और जब वह लोगों के बीच बोलता है, तो सुनने वाले उसकी बातों से मुग्ध हो जाते हैं। इसमें शारीरिक सौन्दर्य एवं कान्ति में वृद्धि होती है, रूप यौवन में निखार आता है। इस दीक्षा के माध्यम से हृदय में आनन्द रस, उमंग, प्रेम और हास्य का संचार होता है, उसके फलतः हजार कठिनाई और तनाव रहते हुए भी व्यक्ति प्रसन्न एवं आनन्द से ओत-प्रोत बना रहता है।

योजना केवल 16-17-18-19 अप्रैल 2021 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

0291-7960039, 0291-2432209, 0291-2433623, 0291-2432010

आगामी माह में आयोजित साधना शिविर

9 मई, 2021

सद्गुरु निखिलेश्वरानन्द कृपा युक्त

सहस्त्राक्षी लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल :

अन्नपूर्णा मन्दिर, लदरूहीं, चौंतड़ा, जिला : मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, हिमाचल प्रदेश : आर. एस. मिन्हास-8894245685, संजीव कुमार-7018562564, अजय कुमार, विनीत कुमार, रमेश कुमार-9459252752, विकास सूद, अजय धरवाल, त्यागी, पुरुषोत्तम राम, बलराम, काकू, गोविंद राम, खेमचन्द, विजय कुमार, रोहित कुमार, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, महेश कुमार बस्सी, कृष्ण कुमार, बबलू, रमेश चन्द, बीना देवी, पालमपुर-संजय सूद-9816005757, ओंकार राणा, देव गौतम, सीमा चन्देल, कुसुम, मिलाप चन्द, सुनन्दा देवी, गौतम, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, राजू, सुनील नाग, धर्मशाला-केसर गुरंग-9882512558, संध्या-9805668100, जुल्फीराम, नगरोटा सूरियाँ- ओम प्रकाश शर्मा-9418250674, कुशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, जीतलाल कालिया, श्रेष्ठा गुलेरिया, नूरपुर-पीताम्बर दत्त, नरेश शर्मा-9816152967, सुन्दरनगर -जयदेव शर्मा.9816314760, बंशीराम ठाकुर-9805042544, पृथ्वी-8580721061, नरेश वर्मा, नीलम, नीलमणी, हमीरपुर-निर्मला देवी-9805243860, राजेन्द्र शर्मा-9418103439, डॉ. गगन प्रवीण धीमान, घुमारवीं- ज्ञानचन्द रत्न-9418090783, सोहनलाल- 9418808883, हेमलता कौण्डल, गोवर्धन शर्मा, डॉ. सुमन, जगरनाथ नड्डा, धर्मदत्त, राजेश कुमार, कुल्लू-रतोराम, तपेराम, सरकाघाट-अशोक कुमार, के.डी. शर्मा, ऊना-अमरजीत-9418350285, प्रदीप राणा, दसुआ टाण्डा- रघुवीर सिंह एवं पार्टी।

खग्रास चन्द्र ग्रहण

26 मई 2021

यह ग्रहण 26 मई 2021, दिन बुधवार को सायंकाल चन्द्रोदय के समय पश्चिमी बंगाल, अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, पूर्वी उड़ीसा, मिजोरम, मणिपुर, आसाम, त्रिपुरा तथा मेघालय में ग्रस्तोदय रूप में बहुत कम समय के लिए दिखाई देगा। भारत के शेष भागों में यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा।

ग्रहण प्रारम्भ	:	03.15 दोपहर
ग्रहण समाप्त	:	06.23 सायं

कंकणाकृति सूर्य ग्रहण

10 जून 2021

यह सूर्य ग्रहण 10.06.21, दिन गुरूवार को होगा और भारत में अरूणाचल प्रदेश के कुछ भाग (अधिक से अधिक 18 मिनट) को छोड़कर भारतवर्ष में दृश्य नहीं होगा।

ग्रहण का भारतीय समय में स्पर्श

दोपहर	:	01.42 मिनट एवं
मोक्ष सायं	:	06.41 पर होगा

• साधक ग्रहण काल का उपयोग साधना सम्पन्न करने में अवश्य करें •

भारतवर्ष में हिमालय का नाम आते ही हमें स्वत: ही पवित्रता का बोध होने लगता है। हिमालय वह स्थान है, जहाँ ऋषि-मुनि, योगी आज भी तपस्यारत हैं। उसी हिमालय की पवित्रतम ऊँचाइयों पर बसे हैं–हमारे चार विशिष्ट तीर्थ स्थल यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ, जिन्हें सामूहिक रूप से चार धाम के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थल उत्तर भारत में धार्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण केंद्र है।

सद्‌गुरुदेव की कृपा से हम गुरुदेव के सानिध्य में पूर्व में बद्रीनाथ एवं गंगोत्री की पुण्य यात्रा का लाभ प्राप्त कर चुके हैं। इसी क्रम में गुरुदेव ने फिर इस बार अपने शिष्यों को केदारनाथ यात्रा ले जाने का निश्चय किया है, भगवान शिव का स्थान है। यह स्थान शिव उपासकों के लिए सबसे पवित्र तीर्थों में से एक है। भगवान शिव, अर्थात् गुरु,क्योंकि शिव ही गुरु हैं और गुरु ही शिव हैं इसलिये इस स्थान की यात्रा अपने आप में ही शिष्यों के हृदय में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह स्थान बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

स्कन्द पुराण, केदारनाथ खण्ड 1, 40वें अध्याय के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने जब सगे-संबंधियों की हत्या के पाप का प्रायश्चित श्री व्यास जी से पूछा तब व्यास जी ने कहा कि बिना केदारखण्ड जाए इन पापों का प्रायश्चित नहीं हो सकता। तुम लोग वहां जाओ। पाण्डव केदारखण्ड आये, इस पर महादेव बैल का रूप लेकर पशुओं में शामिल हो गये और भूमि में अंतर्ध्यान होने लगे तभी पाण्डव को इस बात का भान हो गया और भीम उन पर झपट पड़े और पीठ को पकड़ लिया। पाण्डवों की इच्छाशक्ति एवं भक्ति देखकर भोलेनाथ प्रसन्न हो गये। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भूमि में अंतर्ध्यान होते वक्त बैल रूपी भगवान शिव के धड़ से आगे का हिस्सा काठमाण्डू में प्रकट हुआ जिससे वे पशुपतिनाथ कहलाए एवं बैल की पीठ की आकृति की पिंड के रूप में भगवान केदारनाथ में पूजा होती है। इस प्रकार तप करके पाण्डवों ने भगवान को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

कहा जाता है कि केदारनाथ जी का मन्दिर पांडवों का बनाया हुआ प्राचीन मन्दिर है। ये द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जहाँ पाण्डवों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया था उसी मन्दिर को 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुन: जीवित किया गया।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। मन्दिर के समीप ही हंसकुण्ड है जहां तर्पण किया जाता है।

कुर्म पुराण 36वां अध्याय के अनुसार हिमालय तीर्थ में स्नान करने एवं केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक प्राप्त होता है। गरुढ़ पुराण (81वां अध्याय) के अनुसार केदारतीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें गुरुदेव के सानिध्य में ऐसी विशेष तीर्थ यात्राओं में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

ऐसे विशिष्ट तीर्थ केदारनाथ धाम जहाँ देवाधिदेव भगवान शिव स्वयं गुरु रूप में विराजमान है जहाँ हिमालय के उच्चतम शिखर पर जाकर पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर साधना प्राप्त करना, दीक्षा प्राप्त करना आपके कई जन्मों का पुण्य ही है। ऐसा उत्सव हमारे जीवन का एक स्वप्निल क्षण

बन जायेगा जब हम भगवान केदार के प्रांगण में विशेष दीक्षा प्राप्त करेंगे और अपने गुरु के सानिध्य में सद्‌गुरुदेव के आशीर्वाद से भगवान शिव की आराधना साधना करेंगे।

शिविर का कार्यक्रम केदारनाथ के प्रांगण में ही रहेगा। आयोजकों ने गुरुदेव की आज्ञा से 17 जून को भगवान केदारनाथ के प्रांगण में ही रात्रि रुकने की व्यवस्था की है जो हमारे जीवन के सर्वोच्च सौभाग्यशाली क्षण होंगे वह पूरी रात्रि आपकी साधना की रात्रि होगी और आपके जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होगी।

अत: हम बार-बार आप को आमंत्रण दे रहे हैं ऐसे शिव तीर्थ स्थल केदारनाथ चलने एवं विशेष क्षणों का साक्षी बनने के लिए।

आप यथाशीघ्र अपना ट्रेन का आरक्षण करवा लें, जिससे आपको हरिद्वार पहुंचने एवं वापस आते वक्त कोई परेशानी न हो और अपना नाम हमारे जोधपुर कार्यालय में लिखवा कर अपनी बुकिंग करवा लें क्योंकि पहाड़ों पर होटल की बुकिंग यथाशीघ्र करवानी पड़ती है।

यात्रा - 15 जून से 19 जून 2021

15 जून - आपको शाम तक सीधा हरिद्वार पहुँचना है। स्थान की सूचना अगली पत्रिका में दी जायेगी।

16 जून - प्रात: हम गुरुदेव के साथ हरिद्वार से केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे और शाम को रामपुर नामक स्थान पर होटल में विश्राम करेंगे।

17 जून - प्रात: 5 बजे रामपुर से गौरीकुण्ड पहुँचकर वहाँ से पैदल केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे (गौरीकुण्ड से केदारनाथ की दूरी लगभग 16 कि.मी. है, पैदल जाने में लगभग 6-7 घंटे लगते हैं)। आप वहाँ पहुँचने के बाद उसी दिन केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लें एवं पास के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों के दर्शन भी कर लें। मन्दिर से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक पहाड़ी पर भैरव मन्दिर है। आप चाहें तो केदारनाथ तक की 16 कि.मी. की दूरी घोड़ा, खच्चर, पोनी या डोली से भी तय कर सकते हैं। जो साधक हेलीकॉप्टर से जाने के इच्छुक हों, तो वह स्वयं इन्टरनेट पर हेलीकॉप्टर की बुकिंग ऑन लाइन कर सकते हैं। हेलीकॉप्टर से केदारनाथ जाने में सिर्फ 15 मिनट लगते हैं। यह सुविधा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। आप इसका उपयोग शीघ्र पहुँचने हेतु कर सकते हैं।

दीक्षा एवं साधना कार्यक्रम वहाँ के मौसम के अनुसार 17 जून की शाम या 18 जून की सुबह ब्रह्म मुहूर्त में सम्पन्न होगा एवं हवन कुण्ड में गुरुदेव के सानिध्य में आप आहुति भी प्रदान कर सकेंगे।

18 जून - प्रात: 10 बजे सभी साधक नाश्ता करके वापस प्रस्थान करेंगे एवं वापस पहुंचकर रामपुर अपने होटल में विश्राम करेंगे।

19 जून - प्रात: रामपुर से प्रस्थान कर रात्रि में हरिद्वार में विश्राम करेंगे।

20 जून - प्रात: नास्ते के बाद अपने-अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करेंगे।

यात्रा शुल्क 17000 रुपये प्रति साधक रखा गया है, जिसमें हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था तथा पांच रातों में ठहरने के लिए होटल व्यवस्था एवं नाश्ते व भोजन शुल्क भी शामिल है एवं दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी नि:शुल्क प्रदान की जायेगी। आप अपना नाम जोधपुर ऑफिस में शीघ्र लिखवा कर जाने हेतु बुकिंग करवा लें।

15 जून से 19 जून 2021

ज्योतिर्लिंग केदारनाथ यात्रा

ध्यान दें

केदारनाथ धाम की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 3584 मीटर है

1. अपना ऑरिजनल आधार कार्ड साथ लाना अनिवार्य है।
2. अपनी आवश्यक दवाइयाँ एवं यदि कोई दवा नित्य लेनी है तो दवा की पर्ची साथ रखें।
3. अपने साथ रेनकोट (अत्यावश्यक), छतरी, टॉर्च, कुछ ड्राई फ्रूट्स, कपूर (ऑक्सीजन की कमी होने पर), गर्म कपड़े, गर्म टोपी, सनस्क्रीन क्रीम, माइस्चराइजर, अदरक के सूखे टुकड़े (उल्टी में उपयोगी) आदि अपने साथ रखें।
4. सभी यात्री ट्रेंकिंग शूज ही पहनें।
5. होटल में तीन-चार साधकों के मध्य शेयरिंग रूम की व्यवस्था होगी।
6. महिलायें परिवार के किसी सदस्य के साथ ही पंजीकरण करायें।
7. यात्रा में जाने हेतु सभी साधक शीघ्र अपना पंजीकरण गुरुधाम जोधपुर या सिद्धाश्रम दिल्ली में करायें। (विशेष ध्यान दें - अस्थमा, हृदय रोगी, गठिया रोग या अन्य किसी बड़ी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति इस यात्रा में अपने डॉक्टर की सलाह से एवं स्वयं की जिम्मेदारी पर ही यात्रा करें।)

प्रत्येक साधक के लिए पंजीयन शुल्क 17000 रुपये है।
साधना सामग्री एवं दो शक्तिपात दीक्षाएँ भी इसी शुल्क में प्रदान की जायेंगी

पंजीकरण शुल्क आप निम्न दिये गये किसी भी खाते में जमा करा कर फोन पर सूचना दें

खाताधारी	बैंक का नाम	खाता संख्या	IFSC CODE
देवेंद्र पांचाल	इलाहाबाद बैंक, दिल्ली	50307581597	ALLA0212299
उमेंद्र सिंह रावत	ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, दिल्ली	52102191001064	ORBC0105210
हरीश	भारतीय स्टेट बैंक, दिल्ली	32334179876	SBIN0011547
नरेन्द्र सिंह रघुवंशी	भारतीय स्टेट बैंक, जोधपुर	20239358444	SBIN0006490

यात्रा में अपने साथ अपना ओरिजनल आधार कार्ड एवं उसकी फोटोकॉपी साथ लाना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें

जोधपुर - 0291-2432209,7960039, 2432010, 2433623, दिल्ली - 011-79675768, 79675769, 27354368

यात्रा शुल्क में हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था, नास्ते, खाने एवं ठहरने की व्यवस्था के साथ ही दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी इसी शुल्क में शामिल है।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 April, 2021
Posting Date : 21-22 April, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : मई एवं जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

13-14	मई
11	जून

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

15-16	मई
12-13	जून

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002